Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संगीत गायन

नौंवी एवं दसवीं श्रेणी के लिए

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

© पंजाब सरकार

संस्करण : 2015 .....15,000 प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction and annotation etc. are reserved by the Punjab Government

लेखक व अनुवादक	:	श्रीमती शशी अरविन्द, श्री बलजिंदर सिंह
लेखक	:	श्री मनप्रीत कौर, श्रीमती रेनु भट्टी, श्री जसपाल सिंह
विषय संयोजक	:	श्रीमती चरणप्रीत कौर (लैक्चरार संगीत, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड)
चित्रकार	:	श्री मनजीत सिंह ढिल्लों (आर्टटस्ट, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड)

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों का जाली प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत गैरकानूनी है। (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ पर ही मुद्रित की जाती हैं।)

मूल्य : ₹ 67.00

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज़-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर-160062 द्वारा प्रकाशित एवं न्यू सिमरन ऑफसैट प्रिंटर्ज, जालन्धर।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्राक्कथन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड अपने स्थापना के समय से ही स्कूल स्तर के सभी विषयों के पाठयक्रम संशोधित करने और संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने में प्रयत्नशील रहा है।

संगीत (गायन) विषय का पाठ्यक्रम कई वर्षों से पुराना ही लागू था। आधुनिक युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए। नैशनल करीकुलम फ्रेमवर्क- 2005, पी.सी. एफ 2013 की सिफारशों को मुख रखकर एवं सुझावों के अनुसार प्रवेश वर्ष 2014-15 से क्षेत्रीय विशेष युगों के संयोग से पाठ्यक्रम का संशोधन किया गया है। संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रवेश वर्ष 2015-16 से संगीत विषय के नई पाठ-पुस्तकें तैयार की गई है।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक नौंवी, दसवीं श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। पुस्तक की विषय वस्तु को रोचक, सरल और स्पष्ट बनाने के लिए आवश्यक साज़ों और संगीतज्ञों के चित्र दिये गये हैं। गायन के अभ्यास हेतु क्रियात्मक भाग में सुर अभ्यास पर विशेष बल दिया गया है ताकि विद्यार्थी संगीत को क्रियात्मक रुप में ग्रहण कर सकें।

आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थी में संगीत विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करेंगी। यह पुस्तक अध्यापकों और विद्याथियों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। फिर भी पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से प्राप्त सुझाव आदर सहित स्वीकार किये जायेंगे।

चेयरपर्सन
पंजाब स्कल शिक्षा बोर्ड

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विषय सूची

नौंवी श्रेणी (गायन)

अध्याय	विषय	पृष्ठ नं:
1.	परिभाषा – संगीत, अरोह, अवरोह, पकड़, जाति, वादी स्वर, सम्वादी स्वर, अनुवादी स्वर, वर्जित स्वर, विवादी स्वर, जन्य राग, आश्रय राग, लय	01
2.	स्वर – शुद्ध स्वर, कोमल स्वर, तीव्र स्वर	07
3.	ताल, मात्रा, सम, ताली, खाली, विभाग, आवर्त्तन	09
4.	आलाप – आधुनिक, आलाप गायन की विधि	12
5.	तान–तान की किस्में (प्रकार)	14
6.	संगीत का वाद्य–हारमोनियम, इतिहास, अंग वर्णन	19
7.	भारतीय संगीत में वाद्यों का महत्व	21
8.	जीवनी – बड़े गुलाम अली खां	25
9.	राग – राग के नियम, जातियां और उपजातियां	31
10.	आधुनिक भारतीय संगीत (हिन्दुस्तानी संगीत) में पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी की संगीत प्रति देन	36
11.	अलंकार – भैरवी, काफी, बिलावल थाटों के पांच पांच अलंकार	39
12.	राग भैरवी–साधारण परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, ताने	42
13.	राग काफी – साधारण परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, 'ताने'	45
14.	राग बिलावल – साधारण परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, ताने	48
15.	ताले – तीन ताल, झप ताल, कहरवाल ताल, दादरा ताल, साधारण परिचय, ठाह, एक गुण, दुगुन	51
16.	शब्द की स्वर लिपि	55
17.	भजन की स्वर लिपि	57
18.	लोकगीत की स्वर लिपि	59
19.	देश भक्ति गान की स्वर लिपि	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दसवीं श्रेणी (गायन)

अध्याय	विषय	पृष्ठ नं:
1.	परिभाषा – सप्तक, अचल स्वर, चल स्वर, अलंकार, श्रुति, ठाह, दुगुण, वक्र स्वर, सरगम गीत, स्थाई, अन्तरा	63
2.	थाट – थाट के नियम, श्री विष्णु नारायण भात खण्डे के दस थाट	69
3.	ख्याल – बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल	72
4.	संगीत का वाद्य – तानपुरा, इतिहास, अंग वर्णन	75
5.	पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे जी की स्वर लिपि और ताल लिपि	78
6.	गीत की किस्में :– शब्द, भजन, लोकगीत	82
7.	गायक के गुण और दोष	85
8.	थाट और राग के नियमों की आपसी तुलना	88
9.	पंजाब के लोक वाद्य (साज़)	90
10.	जीवनी – तानसेन	100
11.	राग भूपाली – साधारण परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, बड़ा ख्याल, ताने	106
12.	राग खमाज – साधारण परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, ताने	110
13.	राग भैरव – साधारण परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, बड़ा ख्याल, ताने	113
14.	ताले – एकताल, रूपक ताल, चौताल, एक गुण, दुगुण	117
15.	देशभक्ति गान की स्वर लिपि	119
16.	राष्ट्रीय गान की स्वर लिपि	121
17.	राष्ट्रीय गीत की स्वर लिपि	124
18.	रागों का चारट	126
19.	ताली की दुगुन	127

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नौंवी श्रेणी के लिए

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ-1

परिभाषा

1. संगीत : संगीत शब्द संगीत से बना है जिस के 'सं' का अर्थ है स्वर, 'गी' का अर्थ है ज्ञान और 'त' का अर्थ ताल। इस तरह स्वर, ज्ञान और ताल के सहयोग से संगीत बना। भारतीय संगीत में तीन कलायें आ जाती है, गायन वादन और नृत्य। इन तीन कलाओं के संगम को ही संगीत कहते है। संगीत में स्वर भाषा, ताल और लय का समावेश होता है। इसलिये इन चारों के मिले हुए रूप को ही संगीत कहते हैं।

संगीत दर्पण के रचनाकार दमोदर पंडित, संगीत का जन्म ब्रह्म द्वारा मानते है। ब्रह्म ने यह कला आगे शिवजी को दी। शिवजी ने यह कला सरस्वती जी को दी इसलिये सरस्वती जी को 'वीणा पुस्तक धारिणी' कहते हैं। फिर यह शिक्षा सरस्वती जी ने नारद जी को दी जिन्होनें स्वर्ग लोग की अप्सराओं को संगीत सिखाया और धरती लोक पर आकर आपने ऋर्षिमुनियों को भी संगीत सिखाया।

आदि काल से ही मनुष्य ने मधुर ध्वनियों को पहचान बहुत बारीकी से करनी शुरू कर दी जब वह बांसों के छिद्रों में से आवाज़ सुनता तब उसे लय में निकलती ध्वनि में संगीत सुनता। इस तरह वह संगीत की सृजना करने लग गया वह स्वंय तो गाने लगा परन्तु जब उस ने भिन्न-भिन्न वस्तुओं को आपस में बजाकर संगीत की ध्वनियां निकाली तो वह इन ध्वनियों के साथ उसी लय के सहारे अपने शरीर को भी नचाना शुरू कर दिया। इस तरह से गायन वादन और नृत्य इन तीनों कलाओं का जन्म हुआ।

संगीत एक ऐसी कला है जिस में हम बाहरी साधनों के प्रयोग के बिना अपने मन के भावों को पेश कर सकते है। संगीत की तीनों कलायें प्रचलित है पहली कला गायन। गायन उस संगीत को कहते हैं जब हम स्वर और लय के साथ अपने कंठ द्वारा कुछ गाते हैं। वह ही गायन है। इस संगीत के अर्न्तगत शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, सुगम संगीत आदि आते हैं। दूसरा संगीत है वादन। जब हम किसी भी वाद्य पर स्वर और लय से बजाते हैं तो वह वादन संगीत है। इस संगीत के अर्न्तगत एकल वादन, वृन्दवादन आते है। तीसरा संगीत है नृत्य, जब हम अपने शरीर के अंगो द्वारा हाथ की मुद्राओं को स्वर और लय द्वारा प्रस्तुत करते हैं वह नृत्य संगीत है। नृत्य संगीत के अर्न्तगत शास्त्रीय नृत्य, सुगम नृत्य और लोकनृत्य आते है। यह तीनों कलाएं एक दूसरे पर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आधारित है।

शारंग देव ने अपनी पुस्तक 'संगीत रत्नाकार' में लिखा है कि गायन वादन और नृत्य इन तीनों कलाओं से जो कला उत्पन्न होती है वह ही संगीत है। भरत मुनि जी ने शारंग देव की बात की सहमति प्रकट की है और इन्होनें तीनों कलायों का वर्णन अपने ग्रन्थ में लिखा है, संगीत ही ऐसी कला है जिस द्वारा मनुष्य लौकिक और अलौकिक सुख और शान्ति को आनंद ले सकता हैं। इसलिए संगीत को ऊंची और सच्ची एंव मधुर कला का सम्मान दिया है।

2. अरोह : मध्य सप्तक के से नी तक जाने की अर्थात स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोह कहते हैं। जैसे स रे ग म प ध नी। मंतग मुनि का कहना है कि आरोह स्वरों के चढ़ते क्रम को कहते है। चाहे वह स्वर नियमित हो या नहीं अर्थात् जरूरी नहीं कि आरोह के स्वरों में क्रम हो। रागों के चलन अनुसार स्वरों की ऊँची आवाज की तरफ स्वर के चढ़ते क्रम में गाने बजाने को ही आरोह कहते हैं। आरोह का क्रम केवल मध्य सप्तक ही रहता है क्योंकि आरोह एक आधुनिक राग लक्ष्ण हैं।

3. अवरोह : स्वरों के उतरते क्रम को अवरोह कहते हैं, भाव ऊपर के स्वरों को कहना ही अवरोह कहलाता है। अवरोह का चलन तार सप्तक के सं से शुरू होता है। अवरोह में भी जरूरी नहीं कि स्वरों का नियमित क्रम हो जैसे सं नी ध प म ग रे स। स्वरों के वक्र रूप भी आ सकते हैं।

4. पकड़ : संगीत के हर राग में कुछ स्वर समूह ऐसा होता है जिन स्वर-समूह को गाते बजाते हैं। हमें पता चल जाता है कि कौन सा राग गाया या बजाया गया है। संगीत में इन स्वर समूह को ही पकड़ कहा जा सकता है। राग में आरोह और अवरोह कहने के बाद राग की पकड़ गाई या बजाई जाती है। पकड़ से ही स्पष्ट हो जाता है कि कौन से स्वर पर कितना न्यास करना, उस की चाल किस तरह की हैं। पकड़ से ही राग को मुख्य अंग का पता चलता है। यदि कोई राग गा बजा रहे है तो पहले राग की पकड़ गायेगें जिससे सुनने वालों को पता चल जाता है कि कौन सा राग गाया जा रहा है। राग के शुद्ध रूप को सीखने से पहले राग की पकड़ सीखनी जरूरी है।

5. जाति : संगीत में जाति से भाव राग में लगने वाले स्वरों की गिनती से है क्योंकि राग का नियम है कि राग में कम से कम पांच और अधिक से अधिक सात स्वरों का प्रयोग किया जाता है। राग के आरोह तथा अवरोह में लगने वाले स्वरों के आधार पर राग की जाति निश्चित की जाती है। राग की मुख्य तीन जातियां हैं जो इस प्रकार है :

(i) सम्पूर्ण जाति : जिस राग के आरोह और अवरोह में पूरे सात स्वरों का प्रयोग हो उसे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सम्पूर्ण जाति कहते हैं।

(ii) षाढ़व जाति : जिस राग के आरोह और अवरोह में छह स्वरों का प्रयोग हो उसे षाढ़व जाति कहते हैं।

(iii) औढ़व जाति : जिस राग के आरोह और अवरोह में पांच स्वरों का प्रयोग हो उसे औढ़व जाति कहते हैं।

6. वादी स्वर : वादी स्वर से भाव है वाद अर्थात् बोलना इसलिये राग में बहुत बोलने वाले स्वरों को वादी स्वर कहते हैं। यह राग का मुख्य स्वर होता है। राग की समूची सुन्दरता इस स्वर पर ही रहती है। इसलिये इस को प्रधान स्वर, जीव स्वर, अंश स्वर भी कहा जाता है। भरत मुनि जी के अनुसार, "जो अंश स्वर हो वह वादी ही है"। राग में इस स्वर का बार-बार प्रयोग किया जाता है। राग के वादी स्वर से ही राग के गाने-बजाने का समय निश्चित होता हैं जैसे स रे ग म प स्वर पूर्वांग वादी अर्थात् 12 बजे दिन से लेकर रात के 12 बजे तक इन का गाने बजाने का समय होता है। भूपाली राग का वादी स्वर गन्धार 'ग' है। इसलिये इस राग का निश्चित समय दिन के 12 बजे से रात के 12 बजे तक इनका गाने बजाने का समय ही होगा। राग के आलाप में भी वादी स्वर का बहुत महत्व है, क्योंकि राग के आलाप से ही राग के वादी स्वर का पता चल जाता है भाव राग में जिस स्वर का बार-बार प्रयोग करते है जिस स्वर पर अधिक ठहरते हैं उसे वादी स्वर कहते हैं। इसलिये वादी स्वर ही राग के स्वरूप को स्थापित करने में सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

7. संवादी स्वर : राग में लगने वाले स्वरो से अधिक पर वादी स्वरो से कम प्रयोग होने वाले स्वर को सम्वादी स्वर कहते है। वादी और सम्वादी स्वरों में आपसी अन्तर षड़ज-पंचम या षड़ज मध्यम रहता है। सम्वादी स्वर हमेषा उत्तरांग में अर्थात् म प ध नी सं में होता हैं। यदि किसी राग में 'स' स्वर वादी हैं तो उसका पाँचवा स्वर अर्थात् 'प' स्वर सम्वादी होगा। आचार्य बृहस्पति ने ठीक ही कहा है कि, "किसी भी एक स्वर के वादी बन जाने पर उस राग का सम्वादी स्वर अपने आप ही मिल जाता है।" सम्वादी स्वर को ईशट स्वर भी कहा जाता हैं क्योंकि जब इन को दोनों वादी सम्वादी छेड़ा जाता है बहुत ही मनमोहक लगते हैं।

8. अनुवादी स्वर : राग का एक नियम है कि राग में कम से कम पांच स्वर और अधिक से अधिक सात स्वर लगते हैं। वादी और सम्वादी को छोड़कर राग में बाकी स्वर राग की मदद के लिए रहते हैं। इन्हीं स्वरों को ही अनुवादी स्वर कहते हैं। जैसे राग भूपाली में वादी ग

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(गन्धार) सम्वादी ध (धैवत) हैं और बाकी बचे स्वर स रे प अनुवादी स्वर हैं। राग में अनुवादी स्वरों की बहुत महत्त्वपूर्ण जगह है क्योंकि राग में इन्हीं स्वरों के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती। अनुवादी स्वरों से राग की शान बढ़ती है। जब इन स्वरों को वादी-सम्वादी के साथ छेड़ा जाता है तो बहुत अच्छे लगते हैं।

9. वर्जित स्वर : जिन स्वरों के राग में लगने की मनाही हो उन्हें वर्जित कहते हैं जैसे राग भूपाली में म (मध्यम) और नी (निषाद) स्वर वर्जित है। यह दोनों स्वर राग में प्रयोग नहीं किए जाते। वर्जित स्वरों के आधार से ही राग की जातियां निर्धारित की जाती है। कई बार कोई स्वर आरोह में वर्जित होता है पर अवरोह में उसका प्रयोग किया जाता है। इससे पता चलता है कि एक स्वर वर्जित होने पर राग की जाति षाढव-सम्पूर्ण बन जायेगी। राग में कभी भी इक्ट्ठे दो स्वर क्रम से वर्जित नहीं होते। वर्जित स्वर राग में न ही सीधे रूप में और न ही विवादी स्वर के रूप में प्रयोग किये जा सकते हैं।

10. विवादी स्वर : जिस प्रकार शब्द से ही प्रकट हो जाता है विवाद पैदा करना। राग में प्रयोग होने वाला स्वर जिसे प्रयोग करने के लिए सभी विद्वानों का एक मत न हो या फिर स्वर का प्रयोग रंजकता, विचित्रता बढ़ाने के लिए बहुत कम समय के लिए राग में किया जाए उसे विवादी स्वर कहते हैं। विवादी स्वर का प्रयोग सिर्फ विद्वान, गुणीजन बहुत की कुशलता से कर सकते हैं। भातखण्डे जी, अभिनव राग मन्जरी में लिखते हैं, 'विवादी स्वर शत्रु के समान है।' आचार्य वृहस्पति का कहना है, विवादी का अर्थ है सम्वाद की कमी। अंत में यही कहेंगे कि विवादी स्वर का प्रयोग केवल कुछ समय के लिए राग में विचित्रता लाने के लिए ही ठीक है।

11. जन्य राग : पंडित व्यंकटमुखी जी ने गणित के अनुसार सप्तक के 12 स्वरों से 72 थाटों की रचना की। इन 72 थाटे में से सात भातखण्डे जी ने भारतीय संगीत के लिए 10 थाटों का प्रयोग किया। इन 10 थाटों के अंतर्गत जितने भी राग आते हैं वह सारे राग जन्य राग हैं। हर थाट के अलग-अलग जन्य राग हैं जैसे भूपाली राग कल्याण थाट का जन्य राग है। इन 10 थाटों के अंतर्गत जितने रागों का वर्गीकरण होता है वह सभी राग जन्य राग हैं। जन्य राग के स्वरों से ही पता चल जाता है कि वह किस थाट का राग है। कई जन्य राग इन 10 थाटों के अंतर्गत नहीं आते क्योंकि थाटों की संख्या निश्चित है केवल जन्य रागों के स्वर, प्राकृति, स्वरूप, समानता को देखकर ही राग जिस थाट में समां सकता है वहीं ही उसे रख दिया जाता है। जब कोई नया राग बनता तो भी उसे उस थाट का जन्य राग माना जाता है। थाटों में राग उत्पन्न करने की शक्ति होती

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

है। इसलिए वह नए रागों को अपने में समाने की शक्ति रखता है।

12. आश्रय राग : भारतीय संगीत में प्रचलित रागों को दस थाटों में बांटा गया है। इन थाटों के अलग-अलग नाम रखने के लिए प्रत्येक थाट से उत्पन्न सभी प्रचलित या प्रसिद्ध राग का नाम उसी थाट को ही दे दिया जाता है। इस तरह के राग को आश्रय राग कहते हैं। आश्रय राग का दूसरा नाम थाट बताने वाला राग ही हैं। दस रागों के नाम ही थाटों को दिए गए हैं इसलिए दस आश्रय राग ही हुए जैसे भैरवी राग में रे ग ध नी कोमल स्वर है। इस तरह कोमल स्वरों से ही भैरवी राग बनता है। स्वरों के कोमल स्वरूप को देखकर ही उसे भैरवी नाम दिया गया। इसलिए भैरवी थाट ने अपने नाम करण के लिए भैरवी राग का आश्रय लिया। इस प्रकार भैरवी राग आश्रय राग हो गया।

13. लय : गायन, वादन और नृत्य में समय की समान गति या चाल के लय कहा जाता है। संगीत और लय का संबंध प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। आज संगीत और लय इस प्रकार हो गए हैं कि इक दूसरे के बिना कल्पना भी नहीं की जा सकती। अमरकोष में लिखा है कि जब दो चीजों में समानता इस तरह हो कि उसका फर्क न कम और न ही अधिक हो उसे लय कहते हैं। लय संगीत के उस भाव से भरे पहलु को प्रकट करता है। राग का कोई भी स्वरूप बेशक आलाप हो, झाला हो, तोड़े या तानें हो सभी के लिए अलग - अलग लय प्रयोग की जाती है। लय की सहायता से स्वरों पर ठहराव का पता चलता है। लय के सहारे ही गायन वादन में रंजकता आती है।

संगीत में लय तीन प्रकार की होती हैं

विलम्बित लय : जिस लय की चाल बहुत धीमी हो उसे विलम्बित लय कहते हैं। अर्थात् साधारण चाल से दुगुणी कम धीरे वाली चाल विलम्बित लय है। इसे ठाअ लय भी कहा जाता है। इसका प्रयोग बड़े ख्याल, ठुमरी, ध्रुपद, धमार गायन शैलियों में और मसीत खानी गत में किया जाता है।

मध्य लय : जब लय की गति न ही अधिक और न ही कम हो उसे मध्य लय कहते हैं। इसे साधारण लय भी कहा जाता है। मध्य लय में छोटा ख्याल और रजाखानी गत के साथ बजायी जाती है।

द्रुत लय : जब लय की गति अधिक तेज है। उसे द्रुत लय कहते हैं। यह लय विलम्बित लय से चौगुणी तेज लय होती है। इसमें छोटा ख्याल, तराने और रजाखानी गते बजाई जाती हैं

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संगीत से क्या तात्पर्य है?
2. गायन संगीत से क्या भाव है?
3. संगीत की तीन कलायों के नाम बताओ।
4. स्वरों के चढ़ते क्रम को क्या कहते है।
5. स्वरों के उतरते क्रम को क्या कहा जाता है।
6. राग में सबसे अधिक प्रयोग होने वाले स्वर को क्या कहते है?
7. राग में जिन स्वरों की प्रयोग करने की मनाही होती है, उन स्वरों को क्या कहते है?
8. जन्य राग क्या है?
9. आश्रय राग का दूसरा नाम क्या है?
10. गायन वादन नृत्य से समय की समान चाल को क्या कहते है?
11. विलम्बित लय में गति किस प्रकार की होती है?
12. द्रुत लय की गति कैसी होती है?

अध्यापक के लिये :-

विद्यार्थियों से संगीत सम्बन्धि चारट बनवायें जायें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ-2

स्वर - शुद्ध स्वर, कोमल स्वर, तीव्र स्वर

स्वर : 22 श्रुतियों में नियम अनुसार चुनी गई सात श्रुतियां जिन्हें गाने बजाने में सरलता से प्रयोग किया जाए उन्हें स्वरों का नाम दिया गया। स्वर उस संगीत उपयोगी नाद को कहते हैं जो स्पष्ट स्थिर, सुरीला मधुर और आर्कषक हो। दामोदर पंडित ने 'संगीत दर्पण' में स्वर बारे लिखा है, 'जो नाद मधुर हों उसे स्वर कहते हैं।' पुंडरीक विठल का यह मत है, 'जब श्रुति रसमय हो जाती हैं तो वह स्वर बन जाती है।' इसी प्रकार शारंगदेव जी ने 'संगीत रत्नाकर' ग्रन्थ में स्वर की परिभाषा इस प्रकार की है, 'श्रुति के बाद जो नाद पैदा होता है और सुनते वाले के चित का रंजन कर सकता है, वह ही स्वर कहलाता है।' संगीत के मुख्य स्वर हैं, स रे ग म प ध नी। इनको हम संगीतक भाषा में षड़ज, रिषभ, गन्धार, मध्यम, पंचम धैवत निषाद कहते हैं।

प्रसिद्ध संगीत विद्वान दामोदर पंडित जी ने स्वर की उत्पति सात पक्षियों से मानी है जैसे मोर से षड़ज, पपीहे से रिषभ, बकरे से गन्धार, कांव से मध्यम, कोयल से पंचम, मेंढक से धैवत हाथी से निषाद।

षड़ज	स	मोर
रिषभ	रे	पपीहा
गन्धार	ग	बकरा
मध्यम	म	कांव
पंचम	प	कोयल
धैवत	ध	मेंढक
निषाद	नी	हाथी

1. शुद्ध स्वर : शुद्ध स्वर उन स्वरों को कहा जाता है जो अपनी जगह पर निश्चित रहते हैं। शुद्ध स्वर सात है, स रे ग म प ध नी। इन सात स्वरों में से दो स्वर ऐसे हैं जो स्वर 'स' षड़ज और 'प' पंचम। यह स्वर अपने स्थान पर निश्चित रहते हैं। अर्थात् अपनी जगह पर कायम रहते हैं।

2. कोमल स्वर : अपने निश्चित स्थान से जब स्वर नीचे हो जाते हैं वह कोमल स्वर कहलाते हैं अर्थात् स्वरों का वह रूप होता है जो शुद्ध स्वरों से नीची आवाज़ में हो। संगीत में सात शुद्ध स्वरों में से चार स्वर कोमल रे ग ध नी स्वर हैं। इन स्वरों के संकेत के लिए स्वर लिपि में

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वरों के नीचे सीधी या लेटवीं रेखा डाली जाती है जैसे रे ग ध नी।

3. तीव्र स्वर : स्वरों का वह रूप जो शुद्ध स्वरों से ऊंची आवाज़ में हो वह तीव्र स्वर है। सात स्वरों में केवल मध्यम 'म' स्वर तीव्र स्वर है। तीव्र स्वरों के लिए संगीत में स्वर लिपि में स्वर के ऊपर खड़ी रेखा लगाई जाती है। जैसे म।

इस प्रकार कुल 12 स्वर बने जैसे स रे रे ग ग म म प ध ध नी नी

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संगीत में शुद्ध और विकृत स्वरों की कुल कितनी संख्या है?
2. शुद्ध स्वरों की कितनी संख्या है?
3. स्वरों के नीचे लेटती रेखा वाले स्वर कौन से होते है?
4. तीव्र स्वर की क्या पहचान होती है?
5. वह कौन से स्वर है जो अपने निश्चित स्थान से कहीं हटते नहीं अर्थात् स्थिर रहते है?
6. संगीत में कोमल स्वरों की कितनी संख्या होती है?

अध्यापक के लिए :-

1. अध्यापक स्वयं हरमोनियम पर शुद्ध कोमल, तीव्र, स्वर बजा कर विद्यार्थियों को बताये।
2. एक खाली बोतल ले कर विद्यार्थी से उस समें फूँक मार कर स्वर (आवाज़) पैदा करने की कोशिश करें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 3

ताल, मात्रा, सम, ताली, खाली, विभाग, आवर्त्तन

ताल

ताल शब्द की उत्पति में कई मत प्रचलित है। एक मत के अनुसार शिव जी के तांडव नृत्य से (ता) और पार्वती जी के लास्य नृत्य से (ल) शब्द की उत्पति मानी जाती है। ताल लय पर आधारित है, इसलिए ताल को संगीत का प्राण माना जाता है। जिस प्रकार स्वर प्रयोग के कुछ नियम है जिसके आधार पर रागों की रचना की जाती है जैसे राग का वादी स्वर, संवादी स्वर, थाट, जाति आदि होती है उसी प्रकार ताल की मात्रा और लय के आधार पर ताल की रचना होती है। ताल में भी नियम अनुसार सम, ताली, खाली, विभाग, मात्रा आदि पाए जाते हैं। जब लय के इन्हीं नियमों को बांध कर प्रदर्शन किया जाए तो उसे ताल कहते हैं।

भरत मुनि के अनुसार संगीत में काल को मापने के साधन को ताल कहते हैं। आधुनिक विद्वानों का कथन है कि ताल वाद्यों के बोलों पर आधारित, सम, ताली, खाली के आधार पर भिन्न-भिन्न विभागों में बांटी जाती है तो उस एक आवर्तन को ताल कहते हैं। शास्त्रकारों के अनुसार संगीत में स्वर यदि शरीर है तो ताल उसकी आत्मा है।

हर ताल में अलग-अलग मात्रा, विभाग, खाली, ताली होते हैं। ताल ही गायक-वादक को लय में बांधकर रखने का काम करती है। वह ताल ही है जो गायक-वादक को बेताला नहीं होने देती।

मात्रा

निश्चित समय के बराबर भाग को मात्रा कहते हैं। या जब लय को बराबर हिस्सों के बांट दिया जाता है तो उसके हर भाग को मात्रा कहते हैं और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम यह भी कह सकते हैं कि एक, दो तीन, चार आदि गिनती को बोलने में जितना समय लगता है उसे ही मात्रा कहते हैं। संगीत में मात्रा समय को मापने का पैमाना है। हर ताल की अलग-अलग मात्रा होती है जैसे तीन ताल - 16 मात्रा, कहरवा, ताल-8 मात्रा, झपताल-10 मात्रा, एकताल-12 मात्रा।

सम

सम ताल की वह स्थान है जहां से गायन, वादन, नृत्य आरंभ किया जाता है। यदि हम यह कहे कि जहां से ताल शुरू होती है उसे सम कहते हैं तो यह गलत नहीं होगा। सम ताल की पहली

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मात्रा पर होता है। भारतीय संगीत में गायक वादक सम पर विशेष जोर देते हैं। इस प्रकार संगीत का प्राण ताल है उसी प्रकार ताल का प्राण सम है। स्वर लिपि पद्यति के अनुसार सम का चिन्ह (×) है।

ताली

ताल के जिस भाग में हाथ से ताली लगाई जाती है उसे ताली या भरी कहते हैं। ताल में सम के इलावा और भी विभाग पर ताली होती है जिसे हाथ पर चोट मार कर दर्शाया जाता है। ताली हर ताल की अलग-अलग मात्रा पर होती है। ताल में एक से अधिक स्थान पर भी ताली हो सकती है। जैसे एक ताल में पहली, पांचवी, नौंवी और ग्यारवीं स्थान पर ताली है। स्वर लिपि पद्धति के अनुसार ताली को क्रमश: 1, 2, 3, 4 लिखा जाता है।

खाली

हर ताल के कुछ भाग होते हैं। इन भागों में से जिस भाग की प्रथम मात्रा पर ताली नहीं बजाते हैं, वह खाली कहलाता है। तबले पर खाली के स्थान पर 'ता' या 'ती' का बोल बजाया जाता है। किसी ताल में एक से अधिक खाली भी हो सकती है जैसे एक ताल में तीसरी और सातवीं मात्रा पर खाली है। खाली का चिन्ह (0) है।

विभाग

ताल की मात्राओं को कुछ भागों में बांटा जाता है जिसको विभाग कहते हैं। हर ताल के भिन्न-भिन्न विभाग होते हैं जैसे तीन ताल में चार-चार मात्रा के विभाग हैं, इसी तरह झपताल में दो तीन मात्रा के विभाग हैं।

1 2 | 3 4 | 5 6 7 | 8 9 10 |

आवर्त्तन

आवर्तन का अर्थ है चक्कर लगाना। किसी ताल की निश्चित मात्रा का एक पूरा चक्कर आवर्तन कहलाता है। प्रत्येक ताल में मात्राओं की संख्या निश्चित रहती है। जब वह एक बार पूरी बजाई जाती है तब एक आवर्तन पूरा होता है। ताल को सम से सम तक बजाना एक आवर्तन होता है। जैसे तीन ताल की 16 मात्रा है। इस प्रकार एक मात्रा से 16 मात्रा तक ताल का एक आर्वतन बनता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उस क्रिया को क्या कहेंगे जो गायन वादन और नृत्य का आधार है?
2. निश्चित समय के बराबर भाग को क्या कहते है?
3. किसी भी ताल की पहली मात्रा को क्या कहते है?
4. ताली को और किस नाम से जाना जाता है?
5. खाली के लिये कौन सा चिन्ह प्रयोग में लाते है?
6. ताल की मात्रायों को जब हम कुछ विभागों में बाँटते हैं तब हम उसे क्या कहते हैं?
7. ताल के एक चक्र को क्या कहते है?
8. ताल से आपका क्या अभिप्राय है?

अध्यापक के लिये :-

विद्यार्थी अपने अध्यापक से हाथ पर तालें सीखने का अभ्यास करेंगे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 4

आलाप - आधुनिक आलाप गायन की विधि

आलाप

आलाप, राग के विस्तार करने का एक साधन है। आलाप से राग के बारे में पता चलता है जिसे प्रदर्शित करना होता है।

आलाप में, राग में लगने वाले स्वरों को विभिन्न तरह की कल्पनाओं से सजीव करके बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाता है क्योंकि संगीत में प्रत्येक स्वर का अपना ही महत्त्व सौन्दर्य और खूबसूरती होती है।

आलाप में राग की बन्दिश शुरू करने से पहले बिना किसी ताल के राग के वादी, सम्वादी मींड, गमक आदि प्रयोग करते हुए उसे सजाते हैं और राग के स्वरूप को स्पष्ट करते हैं। आलाप गम्भीर प्रकृति का होता है। पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे के अनुसार 'गायक कोई भी गीत गाने से पहले उस गीत में प्रयोग होने वाले राग-स्वरूप का थोड़ा सा दिग्दर्शन कराते है, उसी को आलाप कहते हैं।'

जब आलाप में गन्द्र सप्तक से मध्य सप्तक को लेते हुए तार सप्तक की ओर धीरे-धीरे बढ़त करते हुए राग के भावों को प्रगट किया जाता है, उसे आलाप कहा जाता है।

आलाप, गाने या प्रस्तुत करने का ढंग प्रत्येक गायक का अपना-अपना होता है।

आधुनिक काल में आलाप गायन के दो प्रकार है -

1. आकार का आलाप
2. नोम-तोम का आलाप

1. आकार का आलाप

आकार का आलाप कहने के लिए आऽऽऽ का उच्चारण किया जाता है। ख्याल गायकी में अधिकतर आलाप इसी प्रकार से किया जाता है। ख्याल की बन्दिश शुरू करने से पहले बिना ताल से गायक आऽऽऽ शब्दों के उच्चारण से राग के स्वर लगाते हैं और राग का स्वरूप स्पष्ट करते है उसे आकार का आलाप कहते हैं।

2. नोम-तोम का आलाप

नोम तोम का आलाप करने के लिए तन, दे, रे, यला ना रे त ना नाप शब्दों का प्रयोग किया

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जाता है। यह आलाप अधिकतर ध्रुपद शैली में किया जाता है। ध्रुपद को ताल और गीत के साथ शुरू करने से पहले बहुत देर तक नोम-तोम आदि के शब्दों से आलाप करके राग का स्वरूप स्पष्ट करते हैं। नोम तोम के आलाप, आकार के आलाप से अधिक प्रभावशाली होते हैं।

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. राग के विस्तार करने के साधन को क्या कहते है?
2. आलाप को कब गाया जाता है?
3. आकार के आलाप से आप क्या समझते है?
4. नोम तोम के आलाप का क्या भाव है?
5. नोम तोम के आलाप में कौन-कौन से शब्द प्रयोग किये जाते है?
6. नोम तोम का आलाप ज्यादा कौन सी शैली में प्रयोग किया जाता है?

अध्यापक के लिये :-

पाठक्रम में बताये गये रागों में विद्यार्थियों को आलाप गाकर दिखाना और उनको आलाप के उच्चारण करने का ढंग बताना और उसका अभ्यास करवाना।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 5

तान - तान की किस्में (प्रकार)

तान

तान, राग को विस्तार करने का एक साधन है। तान उस स्वर-समूह को कहते हैं जिसके द्वारा द्रुत लय से राग का विस्तार किया जाता है।

तान शब्द 'तन' धातु से बना है जिसका अर्थ है - तानना, खींचना, फैलाना। तानों में स्वरों का प्रयोग राग स्वरूप को ध्यान में रखकर किया जाता है। तानों के अलग-अलग क्रमों और भिन्न भिन्न तरह के प्रयोगों से राग में विचित्रता, चमत्कार और खूबसूरती पैदा होती है।

तान और तोड़ा एक ही चीज़ है क्योंकि तान का प्रयोग गायन में और वादन में तोड़ा कहलाता है। तान और तोड़ो की विविधता से ही राग की खूबसूरती में बढ़ोत्तरी होती है। किसी भी राग में उसमें लगने वाले स्वरों से ही तानों को बनाकर राग में प्रयोग किया जाता है। पंडित विष्णु नारायण जी के शब्दों में - राग, गायन को विस्तरित करने के लिए तानों का प्रयोग होता है। तानों का मुख्य उद्देश्य गायन में वैच्चिय पैदा करना है।

औंकार नाथ ठाकुर जी के शब्दों में 'जब कोई अलंकार किसी राग के नियमों में बंधकर किया जाता है तो वो तान कहलाता है।'

'तानों का वह स्वर समूह जो राग में भिन्न भिन्न क्रमों और प्रयोगों से राग का विस्तार करते हुए उसमें चमत्कार, रोमांच अद्भुत्ता, सुन्दरता भरते हुए राग को अलंकृत करे।'

तान की किस्में :

1. शुद्ध तान : जिस तान के स्वर क्रम अनुसार हो, उसे शुद्ध तान या सपाट तान कहते हैं जैसे स रे ग म प ध नी सं, सं नी ध प म ग रे स

2. कूट तान : जिस तान के स्वर क्रम अनुसार नहीं होते वक्र क्रम से लगते है उसे कूट तान कहते हैं। जैसे स नी रे सा, गे म ग।

3. मिश्र तान : शुद्ध और कूट तान का मिश्रण हो, मिश्र तान कहलाती है।

जैसे : स रे ग म प म ग म, ग रे म

4. अलंकारिकारिक तान : जो ताने अलंकारों पर आधारित हो उसे अलंकारिककारिक तान कहा जाता है। इस प्रकार के तानों में अधिकतर आरोह अवरोह में स्वरों

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

का क्रम अनुसार होता है जैसे – नी, स ग म प, ग म प नी सं।

5. छूट तान : तार सप्तक के किसी एक स्वर को जल्दी से छोड़ते हुए तान कहते हैं जैसे गंऽ रेसं नीध पम निरे सऽ। मं नी ध, नी, ध प, ध प म आदि।

6. सरगम तान : जिस तान को स्वरों में ही गाया जाए गीत के बोलों को या आकार में न लिया जाए उसे सरगम तान कहते हैं।

7. बोल तान : जिस तान में स्वरों का आकार लेने की बजाय, गीत के बोलों में गाया जाए उसे बोल तान कहते हैं। इस तान के गीत के बोलों को ही तान में गाया जाता है।

8. गमक तान : इस तान में स्वरों को अन्दोलित किया जाता है और दिल से जोर से बोला जाता है। इसे लय के उलट या बराबर लय में गाया जाता है जैसे सऽऽऽ रे ऽऽऽ

9. लड़ंत तान : जिस तान में कई लयकारियों का मिश्रण हो और गायक और तबला वादक में एक तरह की लड़त हो उसे लड़ंत तान कहते हैं जैसे स नी स रे रे रे रे ग म ग म प प प प प। इसमें दो तीन स्वरों का प्रयोग कई बार और कई तरह से किया जाता है।

ऊपर लिखित तानों के अतिरिक्त भी कई तरह की तानें होती है जैसे जबड़े की तान, फिरत तान, हलकतान, झटके की तान, अचरक तान, सरोकतान, दानेदार तान, गिटकरी की तान, खटके की तान, पलट तान आदि।

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. तान से आपका क्या अभिप्राय है?
2. तान का प्रयोग राग में किस समय किया जाता है?
3. जिस तान के स्वर क्रम अनुसार हो वह कौन सी तान होती है?
4. शुद्ध और कूट तान से कौन सी तान बनती है?
5. अलँकारों पर आधारित तान को क्या कहते है?
6. सरगम तान से क्या अभिप्राय है?

अध्यापक के लिये :-

पाठ्यक्रम के रागों में विद्यार्थियों को तानें गा कर सिखाई जायें और इनका अभ्यास बार-बार करवाया जायें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 6

संगीत का वाद्य - हारमोनियम, इतिहास, अंग वर्णन

इतिहास

आधुनिक काल का सबसे अधिक लोकप्रिय और आसान वाद्य हारमोनियम को माना जाता है। इसकी रख-रखाव और संभाल करनी बहुत ही आसान है। यह किसी भी स्थान पर आसानी के साथ उठाकर ईधर-ऊधर ले जाया जा सकता है। हारमोनियम बजाने में बहुत आसान होने के कारण इसकी गूंज हर घर में सुनाई देती है। संगीत के प्रचार में हारमोनियम का बहुत सहयोग माना जाता है। विदेशी वाद्य होने पर भी यह भारतीय वाद्य अधिक लगता है क्योंकि भारत में इसका अधिक प्रचलन है। मन्दिरों में भजन, गुरूद्वारों में शब्द कीर्तन और महफिलों आदि में इसकी संगति की जाती है।

इसका अविष्कार 15वीं शताब्दी 1840 ई. में फ्रांस के पैरिस शहर में अलैंग्जेंडर डिबिन ने किया। ग्रीस शब्द के हारमनी से हारमोनियम का नाम रखा गया। हारमनी का अर्थ है स्वर-सम्वाद। जब

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दो या दो से अधिक स्वरों को एक साथ बजाएं और जो मधुर भाव को पैदा किया जाता है, तब वह हारमनी है। इसलिए हारमोनियम को स्वर-सम्वादिनी कहा जाता है।

इसको स्वर-मंजुषा, स्वर पेटी या साधारण भाषा में पेटी या 'बाजा' भी कहा जाता है। हारमोनियम के प्रचार से पहले प्यानो का प्रचार रहा। प्यानो अधिक महंगी होने के कारण और आकार में बड़ी होने के कारण इधर उधर लाने आने में बड़ी मुश्किल होती थी, इसलिए हारमोनियम का अविष्कार हुआ। इसकी गिनती सुषिर वाद्यों में आती है।

अंग वर्णन : हारमोनियम आमतौर पर तीन या साढ़े तीन सप्तकों के होते हैं। यह सिंगल और डबल रीढ़ के होते हैं। इनमें स्वर उतारे या चढ़ाए नहीं जाते बल्कि स्थिर होते हैं। इन स्वरों को फ्री रीढ़ कहा जाता है।

1. रीढ़ : रीढ़ यह धातु के बने होते हैं। इनके बीच पतली पत्ती लगी होती है जो हवा के टकराने से कम्पन पैदा करता है। हवा के बन्द होने पर ही रीढ़ज की कंपन बंद हो जाती है और आवाज़ भी बंद हो जाती है।

2. धौंकनी : हारमोनियम में हवा भरने के लिए पीछे धौंकनी होती हैं। इसको बाएं हाथ के साथ आगे पीछे करने से हवा भरी जाती है।

3. छिद्र : धौंकनी के पीछे, ठीक बीच में एक छोटा सा, छः या आठ छिद्रों वाला भाग होता है जिसमें से हवा अंदर बाहर आती जाती रहती है।

4. स्टापर : हारमोनियम के आगे वाले भाग में कुछ स्टापर लगे होते हैं। जिनको खोलने और बंदन करने से हारमोनियम की अंदरुनी (अंदर) की अवा को हल्का या भारी अपनी ज़रूरत अनुसार किया जाता है।

5. परदे : हारमोनियम के ऊपरी भाग पर लकड़ी की पट्टियां लगी होती हैं जिनको परदे कहा जाता है। इन परदों पर काले या सफेद रंग के प्लास्टिक लगाकर परदों को सुन्दर बनाया जाता है। इन परदों से हारमोनियम के रीडस एक तरफ से बंद रहते हैं। हवा रीडस में से बाहर नहीं निकलती है। इन परदों को बाएं हाथ की ऊंगलियों से दबाकर रीडस के बीच की हवा बाहर निकलती है और आवाज़ पैदा होती है। इस तरह हारमोनियम बजाकर गायन की संगति की जाती है।

हारमोनियम की बनावट कुछ दोषपूर्ण मानी जाती है। इसमें से हमेशा खड़े खड़े स्वर निकलते

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हैं। शास्त्रीय संगीत में केवल खड़े स्वरों से ही काम नहीं चलता। मींड, गम आदि क्रियाओं के लिए यह वाद्य उपयोगी नहीं है। इसकी बनावट 12 स्वरों के साथ है। भारतीय संगीत 22 श्रुतियों पर आधारित है। इसलिए यह वाद्य स्वर-साधना के लिए उपयुक्त नहीं है।

इसके बावजूद भी इस वाद्य का प्रयोग दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ता जा रहा है। संगीत महफिलों के अलावा इसका स्वतंत्र या एकल वादन भी किया जाता है।

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हारमोनियम का अविष्कार कब और कहां हुआ?
2. हारमोनियम का दूसरा नाम क्या है?
3. स्टापर में हारमोनियम क्या काम है?
4. हारमोनियम पर लगी सफेद, काली पट्टीयों को क्या कहते है?
5. हारमोनियम में एक भाग ऐसा है जिससे हवा अन्दर बाहर आती जाती रहती है, उस भाग को क्या कहते हैं ?

अध्यापक के लिये :-

विद्यार्थियों के आगे हारमोनियम रखकर इसके अंग वर्णन करना और समझाना। हारमोनियम का चारट बनाओ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 7

भारतीय संगीत में वाद्यों का महत्व

प्राचीन काल से ही भिन्न भिन्न वाद्यों के वादन का प्रचलन रहा है जैसे मां सरस्वती के हाथों में वीणा, भगवान शंकर के हाथ में डमरू भगवान विष्णु का शंख, भगवान कृष्ण की बांसुरी आदि। संगीत वाद्यों के सहयोग से ही अधिक प्रभावशाली बनता है। संगीत तीन कलाओं–गायन, वादन और नृत्य के मेल से बनता है। इन तीनों ही कलाओं के प्रदर्शन में वाद्यों का प्रयोग न किया जाए तो यह कलाएं नीरस और बेजान लगेगी। इन कलाओं में वाद्यों का प्रयोग लय ताल देने के लिए किया जाता है। यह कहना गलत नहीं होगा की स्वर, लय, ताल देने वाले वाद्यों के बिना संगीत अधूरा है। इसीलिए संगीत में ताल वाद्यों और स्वर वाद्यों का अपना ही एक अलग स्थान है। विभिन्न गायन शैलियों का भिन्न-भिन्न चलन होने के कारण ही विभिन्न वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। संगीत में प्रयोग होने वाले वाद्यों को चार भागों में वर्गीकरत किया जाता सकता है।

1. तत् वाद्य : जिन वाद्यों पर प्रहार ऊंगली से, गज से, लकड़ी से या मिजराब की सहायता से किया जाता है उसे तत् वाद्य कहते हैं जैसे – सितार, तानपुरा, दिलरुबा, सारंगी, वॉयलन आदि इस श्रेणी में आते हैं।

2. अवनद्ध वाद्य : जो वाद्य भीतर से खोखले तथा चमड़े से मढ़े हुए होते हैं और हाथ या किसी अन्य वस्तु के थाप देने से स्वर उत्पन्न करते हैं वे अवनद्ध वाद्य कहलाते हैं। जैसे ढोल, ढोलकी, नगाड़ा, डमरू आदि इस श्रेणी में आते हैं।

3. सुषिर वाद्य : वायु प्रवेश से स्वरों की उत्पति करने वाले स्वर के वाद्य को सुषिर वाद्य कहते हैं। जैसे –हारमोनियम, बीन, शहनाई, अलगोजे आदि वाद्य इस श्रेणी में आते हैं।

4. धन वाद्य : जिन वाद्यों में ध्वनि की उत्पति आपसी रगड़ से या लकड़ी की छड़ी के प्रहार द्वारा उत्पन्न की जाए उसे धन वाद्य कहा जाता है। जैसे चिमटा, मंजीरा, खड़ताल, जलतरंग आदि इसी श्रेणी के वाद्य है।

उपरोक्त वर्णित सभी चार प्रकार के वाद्यों का प्रयोग संगीत में किया जाता है। आजकल भारतीय संगीत में स्वतंत्र वादन का बहुत प्रचलन है। स्वतंत्र वादन के अंतर्गत वादक किसी एक वाद्य पर अपनी कला का प्रदर्शन करता है। स्वतंत्र वादन के अंतर्गत तबला, सितार, हरमोनियम, सारंगी, सरोद आदि वाद्य आते हैं। आजकल गायन में भी हारमोनियम का प्रयोग स्वतंत्र वादन के रूप में अधिक होने लगा है। इसी प्रकार तबले का प्रयोग भी स्वतंत्र वादन के रूप में अधिक होने लगा है। हर प्रकार के संगीत के साथ या स्वतंत्र वादन में तबले का प्रयोग लय और ताल देने के लिए किया जाता है। यदि यह वाद्य संगीत कला के साथ प्रयोग न किया जाए तो संगीत नीरस

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लगेगा।

आजकल स्वतंत्र वादन के साथ वादवरिंद का भी बहुत प्रचलन है। इस कला में जब वाद्यों के समूह को एक स्वर पर मिलाकर छेड़ा जाता है तो उस समय जो ध्वनि उत्पन्न होती है वह श्रोताओं के कानों को सुनने में बहुत मधुर लगती है और श्रोताओं के मन का रंजन करती है। इन सभी वाद्यों की झनकार से वातावरण संगीतमय हो जाता है।

संगीत का श्रेय इतना विशाल है कि इसमें हर वाद्य का अपना स्थान है। आजकल भारतीय संगीत में पश्चिमी वाद्यों का प्रचलन भी अधिक हो गया है। आजकल धार्मिक स्थान पर, चलचित्र में, तमाशे में, रेडियो में, टीवी आदि में कार्यक्रम की शुरूआत में अलग-अलग तरफ के महौल के मुताबिक लय और स्वर देने के लिए वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।

अंत में यह कहने में अतिशयोक्ती नहीं होगी कि संगीत की सुंदरता स्वर वाद्यों और ताल वाद्यों पर निर्भर करती है। संगीत का जन्म ही वाद्यों द्वारा हुआ। वाद्यों के संगीत में इतना महत्व है कि बिना वाद्यों के संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संगीत किस के सहयोग से प्रभावशाली बनता है?
2. संगीत की कौन-कौन सी कलायें है? जो वाद्यों पर आधारित है?
3. एकल-वादन क्या है?
4. वाद्यवृन्द्ध से आप का तात्पर्य क्या है?
5. तत्-वाद्य में कौन-कौन से वाद्य आते हैं?
6. अवनद्ध वाद्य कौन से होते है?
7. जिन वाद्यों में हवा भर कर बजाया जाता है, वह कौन से वाद्य होते है?
8. जो वाद्य लकड़ी की छड़ी के प्रहार से बजाये जाते है उन दो वाद्यों का नाम लिखो।

अध्यापक के लिये :-

1. विद्यार्थियों को सितार पर मिजराब से प्रहार कर बजाना सिखाना। हारमोनियम में हवा भरना सिखाना, ढेलक, तबलें पर हाथ से ताल देना सिखाना, चिमटा, खड़ताल डफली बजा कर दिखाना और अभ्यास करवाना।
2. चारों किस्मों के वाद्यों के चित्र बनवाकर कक्षा में लगवाना।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उस्ताद बड़े गुलाम अली खां

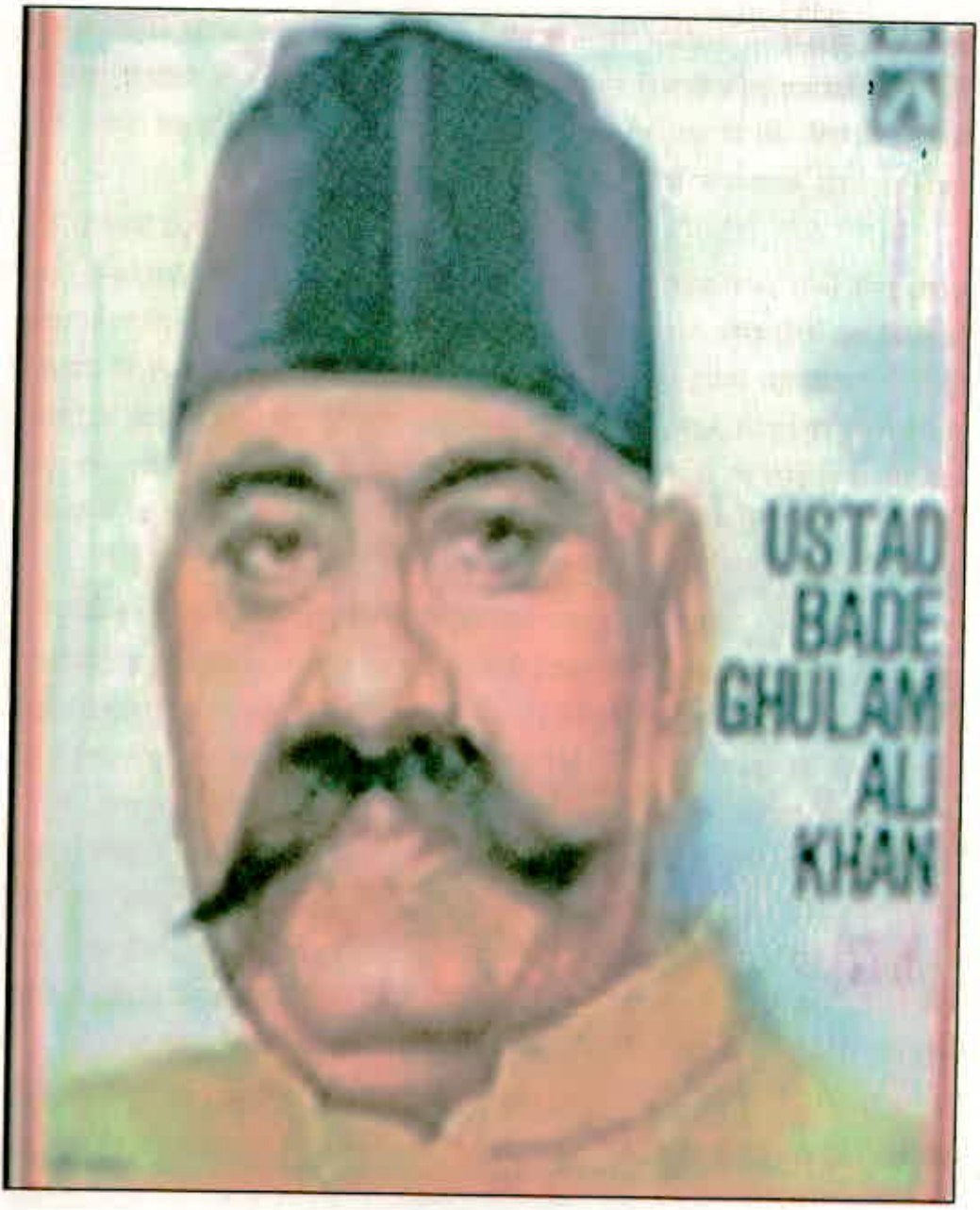

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 8

जीवनी - बड़े गुलाम अली खां

20वीं सदी का कोई भी कलाकार, संगीत के प्रति रूचि रखने वाला व्यक्ति, संगीत अध्यापक, इस ऊंचे लंबे, भारी शरीर, बड़ी बड़ी मूंछे वाले, मधुर और सुरीली आवाज के मालिक, तानों के बादशाह, पंजाबी अंग की ठुमरी गाने वाले गायकी के बादशाह को कौन नहीं जानता। इस तरह के महान कलाकार का जन्म कभी-कभी ही होता है।

जीवन और शिक्षा : बड़े गुलाम अली खां साहब का जन्म सन् 1902 को लाहौर में हुआ। इनके पिता 'अली बख्श' दरबार गायक थे, इसलिए इन्हें गायकी विरासत में मिली। सात साल की उम्र में ही इनके पिता ने इन्हें पटियाला के उस्ताद काले खां, जो रिश्ते में इनके चाचा लगते थे, उनके पास संगीत सीखने के लिए भेज दिया। यहां पर इन्होंने दस साल की उम्र तक संगीत शिक्षा ली। इनके चाचा जी की अचानक मृत्यु हो जाने के कारण इन्होंने बंबई के सिध्धी खां और अपने पिता जी से संगीत की शिक्षा ली। 22 साल की उम्र तक आपने दिन-रात सख्त मेहनत की, ख्याल अंग की बारिकियों को समझा। इस प्रकार इन्होंने अपने पिता जी से गायकी की कला सीख के, इसको संजो कर पटियाला घराने को नया जीवन दिया।

गायकी अंग : उस्ताद बड़े गुलाम अली खां को जिस किसी ने भी सुना वह उनकी सुरीले कंठ से बहुत प्रभावित हुआ। ठुमरी गायकी में जिस तरह का योगदान और प्रदर्शन इन्होंने किया उससे इनकी लोकप्रियता और भी बढ़ गई। आप को ठुमरियों का बादशाह भी कहा जाता है। आप ख्याल, ठुमरी के साथ गज़ल गाने में भी पूर्णतय: निपुण थे। खां साहब को परंपरागत रागों में ही अपनी गायकी का प्रदर्शन करना अच्छा लगता था जैसे - कल्याण, बिलावल, भूपाली, भैरवी, मालकौंस, पूरिया, बिहाग, केदार आदि राग। खां साहब का राग गोष्ठी में 'हरि ओम तत्सत्' उनकी अविस्मय रचना है। इनका ठुमरी के विषय में कहना था कि ठुमरी का एक अपना ही स्वभाव और विशेषता है और यह पंजाब और पूरब अंग की है। इनकी कुछ प्रसिद्ध ठुमरी इस प्रकार है - 'नैना मोरे, आवे ना बालम, याद पिया की आवे' आदि। वह अपनी गायकी के साथ जलतरंग, कास तरंग, दिलरूबा, बांसुरी, हरमोनियम, तबला आदि वाद्यों को प्रयोग करते थे।

खां साहब का स्वभाव : खां साहब का स्वभाव मजाकिया था। वह सुनने वाले की भावनाओं को समझने में अधिक विश्वास रखते थे। उनका विश्वास था कि जब हम सुनने वाले की

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दिल की भावनाओं को पढ़कर अपनी गायकी पेश करते हैं, तो उस समय गायक और श्रोता दोनों ही आनंदित हो उठते हैं। वह गाते समय चारों तरफ रोशनी का होना पसंद करते थे।

खां साहब के प्रोग्राम : खां साहब ने अपनी गायकी का प्रदर्शन पंजाब में ही नहीं अपितु पूरे भारत में किया। सन् 1922 में 'प्रिंस आफ वेल्स' की भारत यात्रा के दौरान फिर सन् 1925 में 'लखनऊ के संगीत सम्मेलन' में और सन् 1936 में 'कलकत्ता के संगीत सम्मेलन' में भाग लिया। सन्1940 में कलकत्ता और गया की प्रथम म्युजिक कांफ्रेंस में भाग लिया। इन सभी सम्मेलनों में इनको सम्मानित भी किया गया। इसके साथ-साथ इन्होंने समय-समय पर पंजाब में भी प्रोग्राम दिए। खां साहब बंबई रेडियो पर भी अपने प्रोग्राम देते रहे। महात्मा गांधी ने इनका संगीत सुनकर इन्हें प्रशंसा पत्र भी भेजा था। इनके ठुमरी, गज़ल, ख्याल गायकी के रिकार्ड हमें आज भी सुनने को मिलते हैं।

सम्मान : सन् 1961 में खां साहब को लकवा का दौरा पड़ा पर खां साहब की गायकी पर उनकी बीमारी का कोई असर नहीं पड़ा। इन्हें 'संगीत सम्राट' और 'पदम् भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया। इनके पुत्र मनवर अली खां भी उच्च कोटि के गायक हैं।

मृत्यु : खां साहब ने 23 अप्रैल 1965 को इस दुनिया से विदा ली। इनकी मौत के साथ संगीत के इस युग का अंत हो गया। परन्तु इनकी गायकी का अंदाज संगीतकारों को नव जीवन देता रहेगा। उन्होंने संगीत के जिस उच्च शिखर को छू लिया था उसे शायद ही किसी ने स्पर्श किया होगा।

सारांश : पंजाब अंग की ठुमरी को ऊचाईयों के शिखर तक पहुंचाने का श्रेय भी खां साहब को ही जाता है। इनकी 'क्या करूं सजनी आए न बालम', 'याद पिया की आवे', मुगले आज़म फिल्म में 'प्रेम जोगन बन जाऊं' आदि कभी न भूलने वाली ठुमरियां हैं। खां साहब हंसमुख स्वभाव के थे, उनकी आवाज़ में मधुरता, स्वर अधिकार, गले की तैयारी, लय पर अधिकार होने के साथ-साथ एक विशेषता यह भी थी कि वह कठिन से कठिन हरकत भी अपने गले से बड़ी आसानी से निकाल लेते थे।

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उस्ताद बड़े गुलाम अली खां का जन्म कब और कहाँ हुआ?
2. पंजाबी ठुमरी गाने वाले बादशाह कौन थे?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. उह्यताद बड़े गुलाम अली खां किस घराने से सम्बन्ध रखते थे?
4. बड़े गुलाम अली खा का प्रोग्राम बम्बई रेडियो से सुनने पर किसने उनको प्रशंसा भरा पत्र भेजा?
5. खां साहिब को किस से सम्मानित किया गया?
6. खां साहिब की मौत किस सन में हुई?
7. कौन सी हिन्दी फिल्म में आपने (उस्ताद बड़े गुलाम अली खां) ठुमरी गाई।
8. खां साहिब की किसी प्रसिद्ध ठुमरी का नाम लिखो।

अध्यापक के लिये :-

1. खां साहिब का चित्र बनाकर उनके जीवन के बारे बताया जाये।
2. खां साहिब के अतिरिक्त गायकी अंग के और प्रसिद्ध संगीतकारों के बारे में बताया जाये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 9

राग - राग के नियम, जातियां, उपजातियां

राग

राग भारतीय संगीत का एक महत्त्वपूर्ण पारिभाषिक शब्द है। राग द्वारा ही भारतीय संगीत का असली रूप दर्शाया जा सकता है इसलिए भारतीय संगीत रागों पर आधारित है।

राग, मूलरूप में संस्कृत भाषा का शब्द है। इसकी उत्पति 'रंज' धातु से हुई है जिसका अर्थ है रंजकता, प्रसन्नता जो मन को आनंद और प्रसन्नता प्रदान करे।

राग शब्द की परिभाषा कुछ संगीतकारों के ग्रंथों में इस प्रकार मिलती है।

राग शब्द का प्रयोग सबसे पहले 7वीं शताब्दी में मतंग मुनि के ग्रंथ बृहद्देशी में मिलता है। मतंग मुनि के शब्दों में 'षड़ज' इत्यादि स्वरों और स्थाई आदि वर्णों से विभूषित ऐसी ध्वनि की रचना, जिससे मनुष्य के मन का रंजन होता है, राग है। भरत मुनि ने लिखा है :-

'जिससे तीन लोकों में विराजमान प्राणियों के दिलों का रंजन होता है, उसको राग कहते हैं।'

पंडित अहोबल ने संगीत पारिजात में कहा है -

'रंजक स्वर संदभ्री राग इत्याभिधियते'।

अर्थात, 'स्वरों का सुगठित समूह राग कहलाता है।'

पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा लिखित 'लक्ष्य संगीत' में लिखा है,

'ध्वनि की वह विशेष रचना जिसको स्वरों और वर्णों से विभूषित किया हो, सुनने वालों का मन मोह ले, राग कहलाती है।'

भातखण्डे द्वारा रचित 'अभिन्न राग मजरी' ग्रंथ में भी राग की परिभाषा इस प्रकार दी गई है -

'ध्वनि की वह विशेष रचना जिसमें स्वरों और वर्णों के कारण सुंदरता हो, जो मनुष्य के चित का रंजन करे अर्थात् जो श्रोताओं के मन प्रसन्न करे उसे बुद्धिमान लोग, राग कहते हैं।'

ए, जी, कान्हरे ने संगीत की परिभाषा इस प्रकार दी है,

'संगीत की भाषा में स्वरों का ऐसा संयोजन जो मस्तिष्क में किसी भाव को पैदा करे, राग है।'

फिलिप स्टर्न के शब्दों में

'एक वातावरण जो संगीत द्वारा रंगा जाता है, राग कहा जाता है।'

संस्कृत में कहा है :- 'रंजयते इति राग' अर्थात् 'मन को रंजन करने वाला, कानों को आनंद देने वाला' ऐसा स्वर समूह जो एक स्पष्ट राग को प्रकट करे, उसे राग कहते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आधुनिक समय के विद्वान लेखक पंडित औंकार नाथ ठाकुर ने भी राग का मुख्य गुण रंजकता बताते हुए राग की परिभाषा इस प्रकार दी है,

'राग शब्द का अर्थ है ऐसा स्वर समूह जो रंजक हो सुख का आनंद देने वाला हो।'

इस प्रकार प्राचीन और आधुनिक ग्रंथकारों का एक ही मत है,

'ध्वनि की वह विशेष रचना जिसे स्वरों और वर्णों से विभूषित किया हो सुनने वाले का मन मोह ले राग कहलाती है।' आजकल लगभग 150-200 गाए बजाए जाते हैं।

राग में रंजकता होने से राग नहीं बनता। राग में कुछ विशेषताएं भी होती है। लोकगीत या बाकी धुने भी रंजक होती है पर उन्हें राग नहीं कहा जा सकता। राग एक शास्त्रीय रचना है जिसमें रंजकता के साथ-साथ कुछ नियमों का भी बन्धन होता है।

राग के नियम

1. प्रत्येक राग में रंजकता का होना जरूरी है।

2. प्रत्येक राग किसी न किसी थाट से उत्पन्न माना जाता है।

3. किसी भी राग में षड़ज 'स' स्वर वर्जित नहीं होना चाहिए क्योंकि 'स' स्वर को भारतीय संगीत का आधार स्वर (की नोट) माना जाता है।

4. राग में कम से कम पांच स्वर और अधिक से अधिक सात स्वर होने चाहिए। पांच स्वर से कम क राग नहीं माना जाता।

5. राग में मध्यम 'म' और पंचम 'प' यह दोनों स्वर इक्ट्ठे वर्जित नहीं हो सकते। यदि किसी राग में 'प' के साथ शुद्ध 'म' भी वर्जित है तो तीव्र में 'मध्यम' का प्रयोग होगा अर्थात् दोनों स्वरों में से एक स्वर का होना जरूरी है।

6. राग में आरोह अवरोह दोनों का होना जरूरी है। केवल आरोह से राग का स्वरूप स्पष्ट नहीं होता।

7. राग में वादी, सम्वादी स्वरों का होना जरूरी है। वादी, सम्वादी स्वरों का राग में विशेष महत्व है। इन स्वरों की प्रधानता पर राग की सुंदरता निर्भर है।

8. राग में किसी भी स्वर के दोनों रूप इक्ट्ठे प्रयोग नहीं हो सकते जैसे कोमल रे और शुद्ध रे या कोमल ग और शुद्ध ग दोनों किसी भी राग में इक्ट्ठे नहीं आने चाहिए। पर यह संभव है कि आरोह में शुद्ध स्वर का प्रयोग हो और अवरोह में कोमल लग सकता है। जैसे राग खम् में आरोह में शुद्ध 'नी' और अवरोह में कोमल 'नी' का प्रयोग होता है।

9. प्रत्येक राग में पकड़ समय आदि का होना जरूरी है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग की जातियां

जब कोई राग तैयार किया जाता है जितने स्वर उस थाट में लिए जाते हैं उसी के आधार पर उसकी जाति निर्धारित जाति से राग में लगने वाले स्वरों की गिनती का पता चलता है। जिस राग में जितने स्वर लग रहे हैं उसके अनुसार ही उसकी जाति निश्चित होती है। राग के नियम अनुसार राग में कम से कम पांच स्वर और अधिक से अधिक सात स्वर होते हैं। इस तरह पांच, छह और सात स्वरों के अनुसार राग की मुख्य तीन जातियां मानी गई हैं। सम्पूर्ण जाति षाढ़व जाति और औढ़व जाति।

1. सम्पूर्ण जाति : जिस राग में पूरे सात स्वर प्रयोग किए जाएं उसे सम्पूर्ण जाति का राग कहा जाता है जैसे स रे ग म प ध नी।

2. षाढ़व जाति : जिस राग में सिर्फ छह स्वर प्रयोग किए जाएं षाढ़व जाति का राग कहलाता है जैसे स ग म प ध नी।

3. औढ़व जाति : जिस राग में पांच स्वर लगे उसे औढ़व जाति का राग कहा जाता है। जैसे स ग म ध नी।

रागों को देखने से पता चलता है कि कई राग ऐसे हैं जिनके आरोह अवरोह में स्वरों की भिन्नता होती है। अर्थात् किसी राग के आरोह में सात स्वर लगते हैं और उसके अवरोह में छः या पांच स्वर हो सकते हैं। इसलिए राग की पहचान के लिए इन ऊपर लिखित तीन जातियां और प्रत्येक की तीन तीन उपजातियां और बना दी गई है इस तरह 3×3=9 और उपजातियों में बांट दिया गया है।

उपजातियां

सम्पूर्ण जाति

सम्पूर्ण-सम्पूर्ण सम्पूर्ण-षाढ़व सम्पूर्ण-औढ़व

1. सम्पूर्ण-सम्पूर्ण जाति : जिस राग के आरोह और अवरोह दोनों में सात-सात स्वरों का प्रयोग हो, सम्पूर्ण-सम्पूर्ण जाति का राग होता है।

2. सम्पूर्ण-षाढ़व जाति : जिस राग के आरोह में सात और अवरोह में छः स्वर लगे उसे सम्पूर्ण-षाढ़व जाति का राग कहते हैं। अवरोह में 'स' स्वर को छोड़कर कोई भी स्वर वर्जित हो सकता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. सम्पूर्ण-औढ़व जाति : जिस राग के आरोह में सात स्वर और अवरोह में कोई प
स्वर लगे उसे सम्पूर्ण-औढ़व जाति का राग कहते हैं।

षाढ़व जाति

षाढ़व-सम्पूर्ण षाढ़व-षाढ़व षाढ़व-औढ़व

4. षाढ़व-सम्पूर्ण : जिस राग के आरोह में छः स्वर और अवरोह में सात स्वर लगते
अर्थात् षाढ़व-सम्पूर्ण जाति का राग कहते है।

5. षाढ़व-षाढ़व : जिस राग के आरोह-अवरोह दोनों में छः-छः स्वर लगे उसे षाढ़व
षाढ़व जाति का राग कहते है।

6. षाढ़व-औढ़व : जिस राग के आरोह में छः स्वर और अवरोह में पांच स्वरों का प्रयो
किया जाता है। उसे षाढ़व-औढ़व जाति का राग कहते है।

औढ़व

औढ़व-सम्पूर्ण औढ़व-षाढ़व औढ़व-औढ़व

7. औढ़व-सम्पूर्ण : जिस राग के आरोह में पांच स्वर और अवरोह सम्पूर्ण हो। उसे
औढ़व-सम्पूर्ण जाति का राग कहते है।

8. औढ़व-षाढ़व : जिस राग के आरोह में पांच और अवरोह में छः स्वर लगते हैं। उसे
औढ़व-षाढ़व जाति का राग कहते है।

9. औढ़व-औढ़व : जिस राग के आरोह अवरोह दोनों में पांच-पांच स्वरों का प्रयोग होत
है। उसे औढ़व-औढ़व जाति का राग कहते है।

इस प्रकार रागों की इन कुल जातियों से 484 रागों की उत्पति होती है जैसे -

सम्पूर्ण-सम्पूर्ण	=	1 राग
सम्पूर्ण-षाढ़व	=	6 राग
सम्पूर्ण-औढ़व	=	15 राग
षाढ़व-सम्पूर्ण	=	6 राग
षाढ़व-षाढ़व	=	36 राग
षाढ़व-औढ़व	=	90 राग
औढ़व-सम्पूर्ण	=	15 राग
औढ़व-षाढ़व	=	90 राग
औढ़व-औढ़व	=	225 राग
कुल	=	484 राग

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस प्रकार एक थाट से गणित के आधार से अधिक से अधिक 484 राग पैदा माने जाते हैं। दस थाटों के अनुसार 484 ×10 = 4840 राग पैदा हो सकते हैं। पर रंजकता अनुसार इतने अधिक राग गाने बहुत मुश्किल हैं। प्रचलित रागों की कुल संख्या 150-200 ही है।

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सम्पूर्ण भारतीय संगीत किस पर आधारित है?
2. राग से क्या अभिप्राय है?
3. राग में कम से कम और अधिक से अधिक कितने स्वर लगते हैं?
4. राग की कुल मुख्य कितनी जातियाँ होती है?
5. राग में एक वर्जित स्वर करने से कौन सी जाति बनती है?
6. षाढ़व-षाढ़व जाति के राग में कितने स्वर लगते है?
7. सम्पूर्ण जाति किस को कहते है?
8. राग की तीन मुख्य जातियों से और कितनी उपजातियाँ बनती है?

अध्यापक के लिये :-

1. विद्यार्थियों से राग की मुख्य जातियां, उप-जातियों का चाट बनवाया जाये।
2. गत्ते पर कागज चिपकाकर कोई तीन जातियों के नाम और उस में लगने वाले स्वर लिखे जायें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पं. विष्णु नारायण भातखण्डे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 10

आधुनिक भारतीय संगीत (हिन्दुस्तानी संगीत) में पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे जी की संगीत प्रति देन

आधुनिक काल में पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे जी की भारतीय संगीत को बहुत बड़ी देन है। पंडित जी का निवास स्थन बालकेश्वर (महाराष्ट्र) था। इनका जन्म 10 अगस्त 1862 ई को एक ब्रह्मण परिवार में हुआ। आप उच्चकोटि के विद्वान और अपने समय के माने हुए वकील थे। आपको संगीत की ऐसी लगन लगी कि आप वकालत छोड़कर संगीत में आई त्रुटियों को दूर करने में लग गए। सन् 1904 ई को पंडित जी ने दक्षिण यात्रा कर बड़े बड़े संगीतकारों के साथ विचार विमर्श किया और कमजोर प्राचीन ग्रंथ का अध्ययन किया। दो साल दक्षिण में गुजारने के पश्चात पं. जी ने उत्तर भारत का दौरा किया। यहां भी पं. जी ने संगीतकारों से विचार विमर्श के साथ साथ प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन किया। इसके पश्चात पं. जी ने मध्य भारत और उत्तरप्रदेश का भी दौरा किया। इस प्रकार पं. जी ने भारत की अलग-अलग दिशाओं की यात्रा करके वहां की परंपरा की जानकारी एकत्रित की। भातखण्डे जी ने संगीत की अराधना करके संगीत को जनसाधारण के बीच में सम्मानित स्थान दिलाया। संगीत ग्रंथ को आसान भाषा में लिखकर उसे आम लोगों तक पहुंचाया। पं. भातखण्डे जी की भारतीय संगीत को निम्नलिखित देन प्राप्त है :

1. भातखण्डे स्वर लिपि : गीतों की स्वर लिपि लिखने के लिए सरल ढंग का निर्माण करना भातखण्डे जी की सबसे बड़ी देन है। इसलिए उन्होंने नई स्वरलिपि पद्धति का अविष्कार किया जिसे भातखण्डे स्वर लिपि पद्धति के नाम से जाना जाता है। इससे पहले संगीत की बंदिशे जुबानी याद की जाती थी परंतु भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति के कारण पुरानी बंदिशों को नष्ट होने से बचाया।

2. संगीत को लोकप्रिय बनाना : संगीत को लोकप्रिय बनाने का क्षेत्र भी भातखण्डे जी को ही जाता है। पं. जी ने जनसाधारण में संगीत के प्रति रूचि और लग्न पैदा की। संगीत के प्रति जनसाधारण की रूचि बढ़ाने के लिए उन्होंने संगीत का प्रचार शुरू किया।

3. संगीत पुस्तक : पं. जी ने भारत भ्रमण कर जो सामग्री संगीतकारों से प्राप्त की उसके

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

फलस्वरूप उसकी कई पुस्तके छपवाई जैसे हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति (भाग-4) में संगीत शास्त्र की चर्चा की गई है। क्रमिक पुस्तक मालिका (भाग-6) में सैंकड़ो ध्रुपद, धमार, तराना, ख्याल लिखे गए थे। अभिनव राग मंजरी।

कुछ संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद भी किया। आधुनिक समय के संगीतों को पुरातन संगीत से भी अवगत करवाया।

4. संगीत शिक्षा और परीक्षा प्रणाली शुरू करवाना – पं. जी ने अपनी नवीन संगीत शिक्षा प्रणाली की रचना की। विद्यार्थियों के लिए स्कूल और कॉलेजों के स्तर तक प्रणाली को लागू करवा कर संगीत जगत को नई दिशा दी।

5. संगीत विद्यालय की स्थापना : पं. जी ने मैरिस कॉलेज ऑफ म्युजिक लखऊ, माधव संगीत विद्यालय ग्वालियर, म्युजिक कॉलेज बडौदरा में संगीत विद्यालय की स्थापना करवाई। जिससे संगीत कला का प्रचार और प्रसार हुआ।

6. थाट राग पद्धति : पं. जी के व्यंकटमुखी के 72 थाटों में से 10 थाटों को उत्तरी प्रणाली के लिए चुनकर उनके आधार पर रागों की रचना की। थाट राग पद्धति से पूर्व राग-रागिनी पद्धति प्रचलित थी जिसमें बहुत त्रुटियां थी। इन त्रुटियों को दूर कर पं. जी ने थाट राग पद्धति का निर्माण किया।

7. रागों का वर्गीकरण : रागों का निर्माण पंडित जी ने अपने समय के सौ रागों का निर्माण दस थाटों के आधार पर किया। संगीत को शास्त्रीय आधार पर पंडित जी ने ही दिया जिससे संगीत का विकास वैज्ञानिक ढंग से होने लगा।

8. गीत रचना : आपने ख्याल, ध्रुपद, धमार, तराना और कई लक्षण गीतों की रचना की। भारतीय संगीत में लक्षण गीतों को स्थान दिलाने का श्रेय भी भातखण्डे जी को ही जाता है।

9. संगीत सम्मेलन : जनसाधारण में संगीत के प्रति रूचि पैदा करने के लिए पं. जी ने अनेकों गोष्ठियों का प्रबंध किया और सन् 1916 में बड़ौदा में संगीत सम्मेलन भी करवाया। इन संगीत सम्मेलन में देश भर के संगीतकारों को आमंत्रित किया गया। यह सम्मेलन बहुत सफल रहा। इस प्रकार संगीत प्रेमियों की सहायता से संगीत सम्मेलन करवाए गए। इसलिए भारत में हो रहे संगीत सम्मेलनों का श्रेय भी भातखण्डे जी को ही जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10. प्राचीन कलाकरों की सामग्री को स्वर लिपिबद्ध करना और ग्रंथ परिचय करवाना : भातखण्डे जी ने संगीतकारों की न समझ आने वाली बंदिशों को इक्ट्ठा कर नोटेशन प्रणाली में निबद्ध कर संगीत के विद्यार्थी को एक उच्चकोटि का उपहार था। कौन सी पुस्तक किस ग्रंथ में उपलब्ध है, यह सारी जानकारी का वर्णन लिखकर संगीत के विद्यार्थी को नया रास्ता दिखाया।

अंत में हम कह सकते हैं कि भातखण्डे जी ने संगीत की सेवा में अपना सारा जीवन लगा के संगीत को नव जीवन दिया। पं. जी जितने समय जीवित रहे संगीत के लिए ही जिए। आज का भारतीय संगीत उनकी महान् सेवाओं के लिए सदा ऋणी रहेगा।

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे का जन्म कब और कहाँ हुआ?
2. आधुनिक काल में भारतीय संगीत को किस संगीतकार की देन है?
3. पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे की स्वर लिपि से क्या तात्पर्य है?
4. पंडित भातखण्डे जी ने कौन-कौन से शहरों में संगीत विद्यालयों की स्थापना की।
5. पंडित जी की लिखी पुस्तक का नाम बतायें?
6. पंडित जी किस पद्धति को प्रचार में लाये?
7. रागो का वर्णन किस पद्धति के आधार पर पंडित जी ने किया।

अध्यापक के लिये :-

1. विद्यार्थियों को विष्णु नारायण भातखण्डे जी की संगीत प्रति देन बता कर उनका चित्र लगवाकर इस सम्बन्धी चारट बनवाये जाये।
2. पंडित जी के अतिरिक्त और संगीतकारों की जानकारी जिन्होने संगीत प्रति कुछ काम किया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

क्रियात्मक भाग

नौंवी (गायन)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 11

अलंकार

(भैरवी, काफी, बिलावल)

भैरवी थाट (रे ग ध नी स्वर कोमल)

अलंकार - 1

आरोह - सा, रे, ग, म, प, ध, नी, सां

अवरोह - सां, नी, ध, प, म, ग, रे, सा

अलंकार - 2

आरोह - सा सा, रे रे, ग ग, म म, प प, ध ध, नी नी, सां सां

अवरोह - सां सां, नी नी, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे, सा सा

अलंकार - 3

आरोह - सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नी, ध नी सां

अवरोह - सां नी ध, नी ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा

अलंकार - 4

आरोह - सा रे ग म, रे ग म प, ग म प ध, म प ध नी, प ध नी सां

अवरोह - सां नी ध प, नी ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा

अलंकार - 5

आरोह - सा रे ग, सा रे ग म प, रे ग म, रे ग म प ध, ग म प, ग म प ध नी म प ध, म प ध नी सां

अवरोह - सां नी ध, सां नी ध प म, नी ध प, नी ध प म ग, ध प म, ध प म ग रे प म ग, प म ग रे सा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

काफी थाट (ग नी कोमल)

अलंकार - 1

आरोह - सा, रे, ग, म, प, ध, नी, सां

अवरोह - सां, नी, ध, प, म, ग, रे, सा

अलंकार - 2

आरोह - सा सा, रे रे, ग ग, म म, प प, ध ध, नी नी, सां सां

अवरोह - सां सां, नी नी, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे, सा सा

अलंकार - 3

आरोह - सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नी, ध नी सां

अवरोह - सां नी ध, नी ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा

अलंकार - 4

आरोह - सा रे ग म, रे ग म प, ग म प ध, म प ध नी, प ध नी सां

अवरोह - सां नी ध प, नी ध प म, ध प म ग, प म ग रे, म ग रे सा

अलंकार - 5

आरोह - सा रे ग, सा रे ग म प, रे ग म, रे ग म प ध, ग म प, ग म प ध नी, म प ध, म प ध नी सां

अवरोह - सां नी ध, सां नी ध प म, नी ध प, नी ध प म ग, ध प म, ध प म ग रे, प म ग, प म ग रे सा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विलावल थाट (सारे स्वर शुद्ध)

अलंकार - 1

आरोह - सा, रे, ग, म, प, ध, नी, सां

अवरोह - सां, नी, ध, प, म, ग, रे, सा

अलंकार - 2

आरोह - सा सा, रे रे, ग ग, म म, प प, ध ध, नी नी, सां सां

अवरोह - सां सां, नी नी, ध ध, प प, म म, ग ग, रे रे, सा सा

अलंकार - 3

आरोह - सा रे ग, रे ग म, ग म प, म प ध, प ध नी, ध नी सां

अवरोह - सां नी ध, नी ध प, ध प म, प म ग, म ग रे, ग रे सा

अलंकार - 4

आरोह - सा रे सा रे ग, रे ग रे ग म, ग म ग म प, म प म प ध, प ध प ध नी, ध नी ध नी सां

अवरोह - सां नी सां नी ध, नी ध नी ध प, ध प ध प म, प म प म ग, म ग म ग रे, ग रे ग रे सा

अलंकार - 5

आरोह - सा रे ग, सा रे ग म प, रे ग म, रे ग म प ध, ग म प, ग म प ध नी, म प ध, म प ध नी सां

अवरोह - सां नी ध, सां नी ध प म, नी ध प, नी ध प म ग, ध प म, ध प म ग रे, प म ग, प म ग रे सा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 12

राग
राग भैरवी

साधारण परिचय : यह भैरवी थाट का राग है। इस राग में रे ग ध नी स्वर, कोमल और बाकी के स्वर शुद्ध लगते है। इस राग का वादी स्वर म (मध्यम) और सम्वादी स्वर स (षड़ज) है। इसकी जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है और इसके गाने बजाने का समय प्रात:काल का पहला पहर है।

थाट - भैरवी
जाति - सम्पूर्ण-सम्पूर्ण
वादी स्वर - म (मध्यम)
संवादी स्वर - स (षड़ज)
कोमल स्वर - रे ग ध नी बाकी शेष स्वर शुद्ध
गायन समय - प्रात काल
आरोह - सा रे ग म प ध नी सां
अवरोह - सां नी ध प म ग रे सा
पकड़ - म, ग, सा रे सा, ध नी सा

आलाप

1 स ऽ ध नि स, स रे ग ऽ, स रे स
2 स रे ग म प ऽ प ध प ध, नि ध प ऽ
प ध म ग ऽ स रे ग ऽ रे स ऽ, ध नि स
3 प ध म ग ऽ स रे ग रे स ऽ ध नि स
4 ग म ध नि सं-, नि सं रें- सं रें
स रे ग - सं रें सं सं नि ध प ऽ,
प ध म ग रे स

बंदिश के बोल

स्थायी- अरज सुनो मोरी राखो लाज।
प्राण पती सुनो बेनती आज।।
अन्तरा - इस युग में ना ही अपना कोई

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग भैरवी (तीन ताल) मध्य लय (छोटा ख्याल)

1				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
							स्थायी	नी	स	ग	म	प	ध	प	प
								अ	र	ज	सु	नो	ऽ	मो	री
ग	ग	ध	म	रे	रे	स	स								
रा	ऽ	खो	ऽ	ला	ऽ	ज	ऽ								
								नी	स	ग	म	प	ध	प	प
								अ	र	ज	सु	नो	ऽ	मो	री
प	ध	नी	सं	रें	रें	सां	सां								
रा	ऽ	खो	ऽ	ला	ऽ	ज	ऽ								
								नी	रें	सं	नी	ध	ध	प	प
								प्रा	ऽ	ण	प	ती	ऽ	सु	नो
ग	ग	ध	म	रे	रे	स	स								
बे	न	ती	ऽ	आ	ऽ	ज	ऽ								
							अन्तरा	ग	ग	म	म	ध	ध	नी	ध
								ई	स	यु	ग	में	ऽ	ना	ही
सं	सं	सं	सं	नी	नी	सं	सं								
अ	प	ना	ऽ	को	ऽ	ई	ऽ								
								नी	नी	नी	नी	सं	सं	सं	सं
								भं	व	र	फं	सी	ऽ	मो	री
नी	रें	सं	नी	ध	ध	प	प								
ना	ऽ	व	ब	चा	ऽ	वो	ऽ								
								प	प	प	प	ध	ध	प	प
								घ	ड़ी	घ	ड़ी	प	ल	छि	न
ग	ग	ध	म	रे	रे	स	स								
द	र	स	दि	खा	ऽ	वो	ऽ								

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग भैरवी (छोटा ख्याल)

तानें

	× 1	2	3	4	2 5	6	7	8	0 9	10	11	12	3 13	14	15	16
1)	निस	गम	पध	पप	ग ग	धम	रे रे	सस	अ	र	ज	सु	नो	ऽ	मो	री
2)	पध	मप	गम	धप	ग ग	धम	रे रे	सस	-	-	-	-	-	-	-	-
3)	निसं	गम	पध	निसं	नि ध	पम	ग रे	सस	-	-	-	-	-	-	-	-
4)	गम	ध नि	सरें	संसं	संनि	धप	मग	रेंस	-	-	-	-	-	-	-	-
5)	निस	गम	पध	पम	गम	पध	निध	पम	गम	पध	निसं	रेंसं	नि ध	पम	ग रे	स-

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 13

राग काफी

साधारण परिचय :

राग काफी, काफी थाट का जन्य राग है। इस राग में ग, नी, स्वर कोमल और शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी स्वर 'प' (पंचम) और सम्वादी स्वर 'स' (षड्ज) है। इसका गायन समय मध्य रात्रि का है।

थाट	=	काफी
स्वर	=	ग, नी कोमल बाकी शुद्ध
वादी	=	'प' (पंचम)
सम्वादी	=	'स' (षड्ज)
जाति	=	सम्पूर्ण-सम्पूर्ण
समय	=	मध्य रात्रि
आरोह	=	स रे ग, म प, ध नी सं
अवरोह	=	सं नी ध प, म ग, रे स
पकड़	=	प म ग रे, रे ग म प, म ग रे स

आलाप :-

1) स, नी ध स, स रे ग रे, रे म प म ग रे, म प ग रे, रे नी ध़ स

2) रे म प, ध म प ग रे, स रे ग - रे ग म - ग रे प म प ग रे, - ग स, - ग स - ग रे - म म प -

3) - रे म प ध नी ध प, नी ध नी सं, गं रें सं नी ध प, प म प ग रे, रे नी ध़ - स

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बन्दिश के बोल

स्थाई : मान ले मोरी बात कान्हा
ऐसो न रूठो मोसे कान्हा

अन्तरा: तुम ज्ञाता विधाता जाग के
नूर भरो मोपे गुणीजन कान्हा

राग काफी (छोटा ख्याल)

×				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
						स्थायी		नी	ध	प	म	प	ग	ग	म
								मा	न	ले	मो	ऽ	री	ऽ	ऽ
प	प	ग	म	ग	रे	स	स								
बा	ऽ	त	ऽ	का	ऽ	्	हा								
								नी.	स	ग	ग	म	प	प	म
								ऐ	ऽ	सो	ऽ	ना	रू	ऽ	ऽ
प	ध	नी	सं	नी	ध	प	प								
ठो	ऽ	मो	से	का	ऽ	्	हा								
						अन्तरा		प	प	प	प	ध	ध	नी	नी
								तु	म	ज्ञा	ऽ	ता	ऽ	वि	ऽ
सं	सं	सं	सं	नी	नी	सं	सं								
धा	ऽ	ता	ऽ	ज	ग	के	ऽ								
								गं	रें	नीं	नी	नी	ध	प	ध
								नू	ऽ	र	भ	रो	ऽ	मो	पे
प	प	ग	म	ग	रे	स	स								
गु	णी	ज	न	का	ऽ	्	हां								

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग काफी (छोटा ख्याल)

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
	×				2				0				3			
1)	सरे	गग	रेग	मम	गम	पम	गरे	स-	मा	न्	ले	मो	ऽ	री	ऽ	ऽ
2)	सस	रेरे	ग ग	मम	पप	गम	गरे	स-	-	-	-	-	-	-	-	-
3)	पध	मप	धनी	संसं	रेंनी	धप	मग	रेस	-	-	-	-	-	-	-	-
4)	सरे	ग ग	रेस	रेग	मम	गरे	गम	धध	पम	गम	पनी	संनी	धप	मग	रेस	पम
5)	पध	मप	धनी	संसं	रेंनी	धप	मग	रेस	-	-	-	-	-	-	-	-

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 14

राग बिलावल

साधारण परिचय :

भारतीय संगीत में यह एक महत्त्वपूर्ण राग माना जाता है। इस राग में सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। इसलिए इस राग की जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। कुछ विद्वान इस राग की जाति षाड़व-सम्पूर्ण मानते है क्योंकि वह आरोह में म स्वर वर्जित मानते है। इस राग का वादी स्वर ध (धैवत) और सम्वादी स्वर ग (गन्धार) है और इस राग के गाने-बजाने का समय दिन का दूसरा पहर है। आजकल यह राग बहुत प्रचलित है। इस राग का मिलता जुलता हुआ राग अलीहया बिलावल है जिसमें दोनों निशान प्रयोग किये जाते है।

थाट	=	बिलावल।
स्वर	=	सभी शुद्ध
वादी स्वर	=	धैवत।
संवादी स्वर	=	गन्धार।
जाति	=	सम्पूर्ण-सम्पूर्ण।
गायन समय	=	प्रातः काल का प्रथम पहर।
आरोह	=	सा रे ग, म प, ध नी सां
अवरोह	=	सां नी ध प, म ग, रे सा
पकड़	=	ग रे, ग प, ध नी सां

आलाप :-

1) सा, सा रे गा, गा रे गा मा गा, गा रे गा मा पा, पा धा पा मा गा, मा रे सा

2) सा रे गा, सा रे गा मा गा, गा पा धा, धा पा मा गा, पा धी नी सां, सां नी धा पा, धा पा मा गा, मा पा, मा गा, मा रे सा

3) पा, धी नी धा नी सां, सां रें सां, सां रें गां, गां रें सां, सां नी धा पा, धा नी सां नी धा पा मा पा, मा, गा, मा रे सा

बंदिश के बोल

स्थायी – गरज बरस मेघा रूत आई,
रूत अलबेली नई नवेली,
काली काली बदरा छाई।

अन्तरा – वन वन कूकत कोयलीया,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग बिलावल (छोटा ख्याल)

×				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
						स्थायी		सं	नी	ध	प	म	ग	रे	ग
								ग	र	ज	ब	र	स	मे	ऽ
प	प	ग	म	ग	रे	स	स								
ध	ऽ	रू	त	आ	ऽ	ई	ऽ								
								प	प	सं	नी	सं	रें	सं	सं
								रू	त	अ	ल	वे	ऽ	ली	ऽ
ध	नी	ध	प	म	ग	प	प								
न	ई	ऽ	न	वे	ऽ	ली	ऽ								
								सं	नी	ध	प	म	ग	म	रे
								का	ऽ	ली	ऽ	का	ऽ	ली	ऽ
ग	ग	रे	म	ग	रे	स	स								
ब	द	रा	ऽ	छा	ऽ	ई	ऽ								
						अन्तरा		प	प	प	प	नी	ध	नी	नी
								व	न	व	न	कू	ऽ	क	त
सं	सं	सं	सं	नी	नी	सं	सं								
को	ऽ	य	ऽ	ली	ऽ	यां	ऽ								
								नी	सं	रें	सं	नी	सं	ध	प
								ना	ऽ	ये	ऽ	म	ऊ	आ	ऽ
ग	ग	रे	म	ग	रे	स	स								
हू	ऽ	क	सु	ना	ऽ	ई	ऽ								

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग बिलावल (छोटा ख्याल)

'ताने'

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
×				2				0				3			
1)															
सरे	गरे	सर	गम	पप	गम	गरे	सस	ग	र	ज	ब	र	स	मे	ऽ
2)															
गग	मम	पप	मम	गग	मम	रेरे	सस	–	–	–	–	–	–	–	–
3)															
गम	पग	मप	गम	पप	गम	गरे	सस	–	–	–	–	–	–	–	–
4)															
सरें	संनी	धनी	धप	गप	धनी	सरें	संसं	–	–	–	–	–	–	–	–
5)															
गम	पध	नीसं	रेंसं	नीध	पम	गरे	स–	–	–	–	–	–	–	–	–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 15

तालें

तीन ताल, झपताल, कहरवा ताल, दादरा ताल

तीन ताल

साधारण परिचय : तीन ताल तबले की प्रसिद्ध ताल है। इस ताल को प्रिताल या तीन ताल भी कहते हैं। तीन ताल की 16 मात्राएं होती है जिसको चार-चार मात्रा के चार विभाग में बांटा जाता है। इस ताल की पहली, पांचवी और तेहरवी मात्रा पर ताली और नौवी मात्रा खाली होती है। इस ताल का प्रयोग गायन में द्रुत ख्याल, तराना, भजन, शब्द के साथ वादन में मसीतखानी गत, रज़ाखानी गत और नृत्य में कथक नृत्य आदि में किया जाता है। यह ताल विलम्बत, मध्य और द्रुत लय में बजाई जाती है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धा	धिं	धि	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
(एक गुण)																
(दुगुण)	धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धाधि	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा
चिन्ह्	×				2				0				3			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

झपताल

साधारण परिचय : झपताल तबले की प्रसिद्ध ताल है। झपताल की 10 मात्राएं हैं। इसमें 2-3, 2-3 मात्रा के चार विभाग होते हैं। इस ताल की पहली, तीसरी, आठवीं मात्रा पर ताली और छठी मात्रा पर खाली होता है। इस ताल की झुमती हुई चाल पर ही इसका झपताल पड़ा है। यह ताल श्रृंगार रस का परिचायक है। इस ताल का प्रयोग ख्याल गीत, कथक नृत्य और गत के साथ किया जाता है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
बोल (एक गुण)	धिं	ना	धिं	धिं	ना	तिन	ना	धि	धि	ना
(दुगुण)	धिंना	धिंधिं	नातिं	नाधिं	धिंना	धिंना	धिंधिं	नातिं	नाधिं	धिंना
चिन्ह	×		2			0		3		

कहरवा ताल

साधारण परिचय : इस ताल की आठ मात्राएं होती है जिसे चार-चार मात्रा के दो विभाग में बांटा जाता है। इस ताल की पहली मात्रा पर सम या पहली ताली और पांचवी मात्रा खाली होती है। यह ताल सुगम संगीत के साथ तबले पर बजाई जाती है। यह ताल लोक संगीत के साथ इस प्रकार बजाई जाती है कि बच्चे बूढ़े भी इस ताल के बजने पर झूम उठते हैं।

मात्रा बोल	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल (एक गुण)	धा	गे	ना	ती	ना	के	धिं	ना
(दुगुण)	धागे	नाती	नाके	धिंना	धागे	नाती	नाके	धिंना
चिन्ह	×				0			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दादरा ताल

साधारण परिचय : दादरा ताल छः मात्रा की ताल है। इस ताल में तीन-तीन मात्रा के दो विभाग होते हैं। इस ताल की पहली मात्रा पर सम या पहली ताली होती है और चौथी मात्रा खाली होती है। यह ताल सुगम संगीत शैली के साथ तबले पर बजाई जाती है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6
बोल (एक गुण)	धा	धिं	ना	धा	तिं	ना
(दुगुण)	धाधिं	नाधा	तिंना	धाधिं	नाधा	तिंना
चिन्ह्	×			0		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 16

शब्द की स्वर लिपि

(शब्द - 1)

स्थायी : शांत पाई गुर सतगुर पूरे
सुख उपजे वाजे अनहद तूरे

अन्तरा : ताप पाप सन्ताप विनासे
हरि सिमरत किलविख सभ नासे

अन्तरा : अनद करहो मिल सुन्दर नारी
गुर नानक मेरी पैज सवारी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग बिलावल (शब्द)

स्वर लिपि

×				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
					स्थायी				ग	रे	म	ग	रे	नि़	सं
									शा	त	पा	ई	ऽ	गु	र
प	प	रे	ग	म	प	म	ग	ग							
स	त	गु	र	पु	ऽ	रे	ऽ	ऽ							
									ग	रे	म	ग	रे	नि़	स
									शां	त	पा	ई	ऽ	गु	र
प	प	रे	ग	म	प	म	ग								
स	त	गु	र	पु	ऽ	रे	ऽ								
								नी	नी	नी	नी	सं	सं	नी	ध
								सु	ख	3	प	ई	ऽ	बा	जे
प	प	ध	प	ग	प	म	ग	ग							
अ	न	ह	द	धु	ऽ	रे	ऽ	ऽ							
								ग	रे	म	ग	रे	नि़	स	
								शां	त	पा	ई	ऽ	गु	र	
प	प	रे	ग	म	प	म	ग								
स	त	गु	र	पु	ऽ	रे	ऽ								
						अन्तरा		प	प	प	प	नी	ध	नी	नी
								ता	ऽ	प	पा	ऽ	प	स	़
सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं	सं								
ता	ऽ	प	वि	ना	ऽ	से	ऽ								
								नी	नी	नी	नी	सं	सं	नी	ध
								ह	रि	सि	म	र	त	कि	ल
प	प	ध	प	ग	प	म	ग	ग							
वि	ख	स	भ	ना	ऽ	से	ऽ	ऽ							

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग भैरव

(शब्द - 2)

स्थायी	:	राखा एक हमारा सुआमी
		सगल घटा का अंतरजामी
अन्तरा	:	उठत सुखीआ बैठत सुखीआ
		भओ नही लागै जां अेसे बुझीआ
अन्तरा	:	सोए अचिंता जागे अचिंता
		जहा कहां प्रभ तूं वरतंता
अन्तरा	:	घर सुख वसेआ बाहर सुख पाएआ
		कहो नानक गुर मंत्र दृढाएआ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग भैरव (शब्द)

स्वर लिपि

तीन ताल

×				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
					स्थायी			प	प	प	ध	प	म	प	ग
								रा	ऽ	खा	ऽ	ए	ऽ	क	ह
म	म	ग	म	ग	रे	स	स								
मा	ऽ	रा	ऽ	स्वा	ऽ	मी	ऽ								
								प	म	ग	म	प	ध	प	प
								स	ग	ल	घ	टा	ऽ	का	ऽ
ग	म	प	म	ग	रे	स	स								
अं	ऽ	त	र	जा	ऽ	मी	ऽ								
						अन्तरा		म	म	प	ध	सं	नी	सं	सं
								उ	ऽ	ठ	त	सु	खी	पा	ऽ
सं	नी	सं	रे	सं	नी	ध	प								
बै	ऽ	ठ	त	सु	खी	या	ऽ								
								प	प	प	ध	प	म	प	ग
								भ	यो	न	ही	ला	ऽ	गे	जां
म	म	ग	म	ग	रे	स	स								
ऐ	ऽ	से	ऽ	बु	झी	या	ऽ								

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 17

भजन की स्वर लिपि

भजन

स्थायी : संत की महिमा हर जन गावो,
अपने चरणों में दास बनावो।

अन्तरा : संत की सेवा सुख फल मेवा,
पाप संताप हरे महादेवा।

अन्तरा : संत की वाणी सर्व निधानी,
कह गए गुरू अवतार ज्ञानी।

अन्तरा : जग ये झूठा, झूठी माया,
सपने स्यों यह कंचन काया।

अन्तरा : सांचा नाम जपो मन मेरे,
संतन पार लगावे बेड़े।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वर लिपि

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
						स्थायी		नी	स	ग	म	प	ध	प	-
								सं	ऽ	त	की	म	हि	मा	ऽ
ग	रे	ग	म	ग	रे	स	-								
ह	र	ज	न	गा	ऽ	वो	ऽ								
								सं	नी	ध	प	नी	ध	प	म
								अ	प	ने	चर	णों	ऽ	का	ऽ
ग	रे	ग	म	ग	रे	स	-								
दा	ऽ	स	व	ना	ऽ	वो	ऽ								
						अन्तरा		म	म	म	म	प	ध	नी	ध
								सं	ऽ	त	की	से	ऽ	वा	ऽ
सं	सं	सं	सं	रें	नी	सं	सं								
सु	ख	फ	ल	मे	ऽ	वा	ऽ								
								सं	नी	ध	प	नी	ध	प	म
								पा	ऽ	प	सं	ता	ऽ	प	ह
ग	रे	ग	म	ग	रे	स	-								
रे	ऽ	म	हा	दे	ऽ	वा	ऽ								

नोट : - सारे अन्तरे ऐसे ही गाए-बजाए जाएंगे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ – 18

लोक गीत की स्वर लिपि

स्थायी	:	ऊडदा ते जावी वे कांवा बैदडा जावी वे बैदडा जावी मेरे पेकड़े
अन्तरा 1	:	इक न दसी अडीओ बाबुल राजे नू रोऊंगा भरी कच्हरि छोड के मैं वारी जावा .....
अन्तरा 2	:	इक न दसी मेरी मां रानी नू रोऊंगी गूडीयां पटोले फरह्रोल के मैं वारी जावा .....
अन्तरा 3	:	इन न दसी मेरी भैण रानी नू रोऊंगी वेख व्रिजण झुटके मैं वारी जावा .....
अन्तरा 4	:	दसी वे दसी वे कांवा वीर मेरे नू आंऊगा नीला घोड़ा वीहड के मैं वारी जावा .....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वर लिपि

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								स्थायी				–	स	ग	ग
													ऊड	दा	ते
गम	मग	मप	प	–	प	नीप	-म	गम	मग	मनी	प	–			
जाऽ	वीऽ	काऽ	वां	ऽ	बै	ऽद	ऽडा	जाऽ	वीऽ	वेऽ	ऽ	ऽ			
													प	सनी	-स
													वैऽ	ऽद	ऽडा
नीप	पनी	मप	-ग	म	–	–	पम	ग	–	नी	स	–			
जाऽ	वीऽ	ऽमे	ऽरे	पे	ऽ	ऽ	कऽ	डे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ			
													स	ग	ग
													ऊ	उ	दा
गम	मग	मनी	धनी	पध	ध	प	–	–	–	–	–	–			
जाऽ	वीऽ	काऽ	ऽऽ	वाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ				
								अन्तरा				–	ग	ग	म
												ऽ	इ	क	ना
नी	नी	नी	स	–	पसं	सं	सं	संनी	रेसं	नी	ध	प			
द	सी	अडे	आं	ऽ	बाऽ	बुल	रा	जेऽ	ऽऽ	नू	ऽ	ऽ			
													नी	नी	नी
													गे	ऊ	गा
धध	-ध	प	म	मध	पम	ग	गम	रे	ग	म	प	–			
भरी	ऽक	च्चह	री	छोऽ	ऽड	के	मेंऽ	वा	री	जा	वा	ऽ			
												–	नी	नी	नी
												ऽ	गे	ऊ	गा
धध	-ध	प	पनी	ग	ग	–	पम	ग	–	नी	म	–			
भरी	ऽक	च्चह	रीऽ	ऽ	छो	ऽ	ड	के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ			

नोट : - सारे अन्तरे ऐसे ही बजाए और गाए जाएंगे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 19

देश भक्ति गान की स्वर लिपि

स्थायी : हम बंगाली हम पंजाबी गुजराती मद्रासी हैं
लेकिन हम इन सबसे पहले केवल भारतवासी हैं

अन्तरा : हमें सत्य के पथ पर चलना पुरखों ने सिखलाया है
जो हमने उनसे सीखा है उस पर चलते जाना है
हम सब सीधी सच्ची बातें करने के अभियासी हैं

अन्तरा : हम अपने हाथों में लेकर अपना भाग्य बनाते हैं
मेहनत करके बंजर धरती पर सोना उपजाते हैं
पत्थर को भगवान बना दें हम ऐसे विश्वासी हैं

अन्तरा : वो भाषा हम नहीं बोलते वैर भाव सिखलाती जो
मीठी बोली बोल के कोयल सबके मन को भाती वो
जिसके अक्षर भरे प्रेम से हम वह भाषा भाषी हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वर लिपि

×				0				×				0			
1	2	3	4	5	6	7	8	1	2	3	4	5	6	7	8
स्थायी															
स	सध	प	म	म	म	म	म	स	सम	स	सम	स	स	नी़	नी़
हम	बं	गा	ली	हम	पं	जा	बी	गुज	रा	ती	मद	ऽ	सी	हैं	ऽ
नी़	नी़	ग	ग	प	प	प	प	ग	ग	म	ध	प	प	म	म
ले	किन	हम	इन	सब	से	पह	ले	के	वल	भा	रत	वा	सी	हैं	ऽ
अन्तरा :															
पं	सं	नी	ध	प	म	म	प	ग	ग	म	प	नी	नी	नी	नी
ह	में	सत	य	के	ऽ	प	थ	प	र	च	ल	ना	ऽ	ऽ	ऽ
सं	नी	ध	प	म	म	म	प	ग	स	प	प	म	म	म	म
पु	र	खों	ऽ	ने	ऽ	सि	ख	ला	ऽ	या	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
सं	सं	नी	ध	प	म	म	प	ग	ग	म	प	नी	नी	नी	नी
जो	ऽ	ह	म	ने	ऽ	उ	न	से	ऽ	सि	खा	है	ऽ	ऽ	ऽ
सं	नी	ध	प	म	म	म	प	ग	स	प	प	म	म	म	म
उ	स	प	र	च	ल	ते	ऽ	जा	ऽ	ना	ऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ
स	स	ध	म	प	ग	म	म	स	सम	स	सम	स	स	नी	नी
हम	सब	सी	धी	स	च्ची	बा	तें	कर	ने	के	अभि	या	सी	हैं	ऽ
नी़	नी़	ग	ग	प	प	प	प	ग	ग	म	ध	प	प	म	म
ले	किन	हम	इन	सब	से	पह	ले	के	वल	भा	रत	वा	सी	हैं	ऽ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दसवीं श्रेणी (गायन)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 1

परिभाषा

1 सप्तक : सात स्वरों के समूह को सप्तक कहते हैं। सप्तक का अर्थ है सप्त (सात)। हम यह भी कह सकते हैं कि चल और अचल स्वरों के गाने और बजाने के अन्तर से 12 स्वर बनते हैं। इनके सात स्वर के समूह को सप्तक कहते हैं।

सप्तक की किस्में : आवाज़ या ध्वनि कई प्रकार की होती है। कई ध्वनियां भारती और बारीक होती है। इन ध्वनियों के अन्तर को देखते हुए सप्तक मुख्य तीन प्रकार के हैं :

(i) मन्द्र सप्तक : इस सप्तक की आवाज़ आम आवाज़ से दुगुनी नीची होती है। स्वर लिपि में इन स्वरों के नीचे बिन्दु लगाई जाती है जैसे स़, रे़, ग़

(ii) मध्य सप्तक : इस सप्तक की आवाज़ न अधिक नीची और न ही अधिक ऊंची होती है। इस आवाज़ को मध्य सप्तक की आवाज़ कहते हैं। स्वर लिपि में इन स्वरों के नीचे कोई चिन्ह नहीं लगाया जाता जैसे स रे ग म

(iii) तार सप्तक : इस सप्तक के स्वरों की आवाज़ मध्य सप्तक के स्वरों की आवाज़ से दुगनी ऊंची होती है। इस सप्तक की आवाज़ ऊंची और तीखी होती है। रियाज़ के साथ इस सप्तक को गाया जाता है। स्वर लिपि में इन स्वरों के ऊपर बिन्दु का चिन्ह लगाया जाता है। जैसे: सं रें गं मं

2. अचल स्वर : अचल का अर्थ है – 'स्थिर' या 'न चलने वाला' या 'अपनी जगह पर अड़िग रहने वाला।' अंत: भारतीय संगीत के वह स्वर जो अपने मूल स्थान पर निश्चित रहें उन्हें अचल स्वर की संज्ञा दी जाती है। संगीत में अचल स्वर दो ही माने जाते हैं – 'स' और 'प'। यह दो ऐसे स्वर हैं जो गायन, वादन में अपने निश्चित स्थान पर रहते हैं।

3. चल स्वर : चल का अर्थ है – 'चलने वाला'। अंत: वह स्वर जो अपने निश्चित स्थान से ऊपर या नीचे की ओर जाएं उसे चल स्वर कहते हैं। इन स्वरों की संख्या पाँच है जैसे – रे ग म ध नी

अचल स्वर	–	स, प
चल स्वर	–	रे ग म ध नि

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. अलंकार

अलंकार शब्द संस्कृत का शब्द है, जिसका अर्थ है, 'सजाना' जैसे मनुष्य अपने शरीर को सजाने के लिए भिन्न भिन्न तरह के आभूषण पहनता है ताकि वह खूबसूरत लगे उसी तरह जब हम गायन वादन और नृत्य में भिन्न भिन्न तरह के स्वर समूहों को प्रयोग करके इन कलाओं को सजाते हैं उसे अलंकार कहते हैं। अलंकारों का एक सिद्धांत हैं कि जो स्वर हम अलंकारों के आरोह में लगाएंगे वही स्वर अवरोह में लगेंगे। अलंकार शुद्ध स्वर के अतिरिक्त कोमल स्वर और तीव्र स्वर लगाकर भी बनाए जा सकते हैं। अलंकारों को पलटा भी कहा जाता है जिसका अर्थ है पलटना। अलंकार बनाते समय स्वरों की संख्या और क्रम अपनी इच्छानुसार नियमबध किए जा सकते हैं। गायन में ताने भी अलंकारों के आधार पर बनती है। इनके अभ्यास से गायन वादन दोनों में निखार आ जाता है। संगीत में स्वरों के छोटे-छोटे स्वर समूह लेकर अलंकारों की रचना की जाती है क्योंकि जब हम एक स्वर का प्रयोग करते हैं तो वह इतना मन को भी भाता परन्तु जब हम अलंकार में स्वरों के छोटे छोटे टुकड़ों का वक्र रूप में प्रयोग करते हैं तो इन दोनों क्रियाओं में एक मस्ती जैसी आ जाती है और अलंकार को गाने बजाने वाा पूरा आनंद लेता है। भरत नाट्य शास्त्र में भरतमुनि जी ने ठीक ही कहा है जैसे पानी के बिना नदी, चन्द्रमा के बिना रात, फूल के बिना लता है उसी तरह अलंकारों के बिना संगीत की सुंदरता की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

अलंकारों के लाभ : अलंकारों के निम्नलिखित लाभ हैं –

1. अलंकारों को यदि आकार के साथ गाया जाए और तालबद्ध गाया जाए तो विद्यार्थी का गला और ताल दोनों तैयार हो जाते हैं।

2. अलंकारों के अभ्यास से वाद्य पर बजाकर हाथ की मांसपेशियां और गले की मांसपेशियों को लंबे समय तक काम करने की शक्ति मिलती है।

3. अलंकारों गाने, बजाने के साथ स्वर ज्ञान बढ़ाता है।

4. अलंकारों के अभ्यास के बाद विद्यार्थी स्वयं अलंकारों की रचना कर सकता है।

5. इनके अभ्यास के साथ आलाप और तानों की तैयारी में सहायता मिलती है।

6. अलंकारों के अभ्यास से स्वर ज्ञान में बढ़ोत्तरी और लय का अभ्यास होता है।

5. श्रुति

श्रुति का अर्थ है सुनना। संगीत में हर सुनने वाली आवाज़ को श्रुति नहीं कह सकते। हम इस प्रकार कह सकते हैं कि जो ध्वनि दूसरी ध्वनियों से अलग पहचानी जा सके उसे संगीत में श्रुति

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कहते हैं। अभिनव राग मंजरी में इसकी परिभाषा इस प्रकार दी गई है, 'वह आवाज़ जो संगीत में प्रयोग की जाए, एक दूसरे से अलग पहचानी जा सके, उसे श्रुति कहते हैं।'

संगीत में बाइस नाद ऐसे हैं जिनको सुनकर पहचाना जा सकता है। संगीत में इन बाईस नादो को ही श्रुति कहा जाता है। हर श्रुति नाद है (आवाज़) परंतु हर एक नाद (आवाज़) श्रुति नहीं हो सकती। श्रुति वह ध्वनि है जो कानों को स्पष्ट सुनाई दे, संगीत के लिए उपयोगी हो, एक दूसरे से अलग पहचानी जा सके, सुनने में मधुर और मीठी हो, वही श्रुति है।

22 श्रुतियों के नाम निम्नलिखत हैं :

1	तीव्रा	12	प्राति
2	कुमुद्वती	13	मार्जनी
3	मन्दा	14	क्षिति
4	छन्दोवती	15	रक्ता
5	दयावती	16	संदीपनी
6	रंजीनी	17	आलापिनी
7	रक्तिका	18	मदन्ती
8	रौद्री	19	रोहिणी
9	क्रौधी	20	रम्या
10	वज्रिका	21	उग्रा
11	प्रसारिणी	22	क्षोभिणी

भारतीय संगीत में गाते बजाते समय इन बाईस श्रुतियों का ही प्रयोग किया जाता है।

ठाह

ठाह को बराबर की लय भी कहते हैं। जब एक मात्रा काल में एक बोल बोला या बजाया ए तो उसे ठाह या बराबर की लय कहते हैं। ताल में लिखते समय एक मात्रा में एक ही बोल लखा जाता है जैसे–

(1)	1	–	–	–	2	–	–	–
	ग	ऽ	ऽ	ऽ	धा	ऽ	ऽ	ऽ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) ठाह लयकारी

1	2	3	4	5	6	7	8
धा	गे	ना	ती	ना	के	धिं	ना
×				2			

7. दुगुन

जब एक मात्रा काल में दो मात्राएं बोली जाए उसे दुगुन कहते हैं या जब लय की एक मात्रा पर दो बोल बोल जाए या बजाए जाए तो उसे दुगुन कहते हैं। ताल में लिखत समय एक मात्रा में ताल के दो बोल लिखे जाते हैं। जैसे –

ठाह लयकारी	1	2	3	4	5	6	7	8
	धा	गे	ना	ती	ना	के	धिं	ना
दुगुन लयकारी	धागे	नाती	नाके	धिंना	धागे	नाती	नाके	धिंना

8. वक्र स्वर : वह स्वर जिसका प्रयोग राग में सीधे क्रम को तोड़कर किया जाए उसे वक्र स्वर कहते हैं। वक्र का अर्थ है 'टेढ़ा'। जब हम एक स्वर तक जा के पीछे मुड़ते हैं तो जिस स्वर से हम वापसी करते हैं, तो उस स्वर को छोड़ दिया जाता है, उसी को वक्र स्वर कहते हैं, जैसे ग म ग प। इस क्रम में 'म' स्वर वक्र है, क्योंकि हम म स्वर तक जा के फिर वापस ग स्वर पर आते हैं, और आगे चलकर ही उसे छोड़ देते हैं, और फिर ग स्वर पर पुनः आ जाते हैं, क्योंकि यहां पर हम 'ग म ग' स्वर का वक्र प्रयोग कर रहे हैं।

9. सरगम गीत : राग के स्वरों में रची गई तालबद्ध रचना को सरगम गीत कहते हैं। सरगम गीत में राग के स्वरों को नियमानुसार स्वर और ताल के साथ सुंदर और मधुर ढंग से गाया जाता है। यह एक शास्त्रीय गायन शैली है। इस रचना द्वारा राग में प्रयोग होने वाले स्वर औश्र रा के स्वरूप का ज्ञान कम समय में हो जाता है। सरगम गीत केवल शास्त्रीय रागों में निबद्ध होते और इनके साथ मध्य लय की तालें जैसे तीन ताल, झपताल, रूपक ताल आदि बजाई जाती है सरगम गीत की गायन शैली छोटे ख्याल की तरह होती है। इसमें पहले स्थाई फिर अन्तरा और बाद में छोटी-छोटी सरगमों की तानों का प्रयोग किया है। यह एक सीधी और सरल राग रचना है विद्यार्थी इसको बड़ी जल्दी से समझ जाते हैं और गाने लगते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10. स्थायी : यह गीत या गत का पहला भाग होता है। गीत या गत से पहले पद्य या भाग को स्थायी कहते हैं। गायन/वादन में स्थाई का प्रयोग सबसे अधिक होता है। राग का आलाप/तान के द्वारा स्वर विस्तार करते हुए वादक/गायक बार-बार स्थाई के मुखड़े को पकड़ कर ताल के चक्कर में पहुंच जाते हैं। इसमें मन्द्र सप्तक मध्यम सप्तक के स्वरों का प्रयोग होता है। इसके एक या दो तीन आवर्तन होते हैं। ध्रुपद गायन शैली में चार आवर्तन की स्थाई होती है। राग के अन्तरे के एक भाग को गा या बजाकर फिर वापस दुबारा स्थाई बजाई जाती है।

11. अन्तरा : गीत या गत के दूसरे भाग को अन्तरा कहते हैं। इसका विस्तार क्षेत्र मध्य सप्तक से होता तार सप्तक के गन्धार, मध्यम स्तर तक होता है। अन्तरा हमेशा मध्यम सप्तक के स्वरों अर्थात्, गन्धार मध्यम पंचम से शुरू किया जाता है। अन्तरे के भी दो या दो से अधिक आवर्तन होते हैं।

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सात स्वरों का वह स्वर समूह जिस में राग पैदा करने की शक्ति होती हैं उसे क्या कहते है?
2. म़ प़ ध़ नी़ यह स्वर किस सप्तक के हैं?
3. जो स्वर अपनी जगह से चल पड़ते हैं वह कौन से स्वर कहलाते हैं।
4. स और प र स्वर कौन से स्वर है?
5. अलंकारों से क्या अभिप्राय है?
6. श्रुति का क्या अर्थ है?
7. जब लय में एक मात्रा पर एक अंक या शब्द बोला जाता है तब उसे क्या कहते है?
8. दुगुण में एक मात्रा में कितने अंक बोले जाते हैं?
9. तार सप्तक के स्वरों पर कौन सा चिन्ह लगाया जाता है?
10. वक्र स्वर का क्या अर्थ है?
11. गत या गीत के दुसरे भाग को क्या कहते है?
12. गीत या गत के पहले भाग को क्या कहते हैं?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

13. अन्तरे के स्वरों की चलन अधिकतर कौन से सप्तक में होती है?

14. अन्तरे के कितने भाग होते है?

अध्यापक के लिए :-

1. विद्यार्थियों को परिभाषायें समझा कर कापी पर लिखवा कर याद करवाई जायें।
2. विद्यार्थियों से परिभाषायों का चार्ट बनवाया जायें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 2

थाट - थाट के नियम, भातखण्डे जी के दस थाट

थाट

भारतीय संगीत में अलग-अलग सिद्धांतों के तहत समय-समय पर वर्गीकरण होता रहा है जैसे ग्राम, मुरशना, जाति, राग, रागिनी, वर्गीकरण और थाट-राग वर्गीकरण। सात स्वरों का वह समूह जिसके राग उत्पन्न करने की शक्ति हो उसे संगीत की भाषा में थाट कहते हैं। थाट को कई गुणीजन मेल भी कहते हैं। थाट राग का सिद्धांत सबसे पहले पंडित व्यंजकटमुखी जी ने किया जिसमें उन्होंने गणित के आधार पर ये सिद्ध किया कि बारह सुरों (शुद्ध, कोमल, तीवर) से बहत्तर थाट उत्पन्न हो सकते हैं। आधुनिक काल में पंडित भातखण्डे जी ने राग रागिनी पद्धति को नकारते हुए उन्होंने इन बहत्तर थाटों में से, दस थाट लेकर उत्तरी संगीत पद्धति के सभी रागों का वर्गीकरण इन थाटों के सिद्धांत पर किया। भातखण्डे जी ने इन थाटों के अंतर्गत आये रागों के नाम पर ही इन थाटों का नामकरण किया। इन थाटों में स्वर क्रमवार प्रयोग किए गए। कई थाट स्वर समूह की पहचान के लिए ही बनाए गए हैं और कई राग इन सिद्धांतों पर खरे नहीं उतरते क्योंकि जो स्वर उस राग में प्रयोग किए गए स्वरों के आधार वह इन दस थाट में से किसी थाट के अंतर्गत नहीं आए। कंई संगीत शास्त्रियों उनके स्वरों के प्रयोग या वादी-सम्वादी के आधार पर इन थाटों के अंतर्गत रागों को रखना उचित समझा।

थाटों के नियम-

थाट के नीचे लिखे गए नियम हैं -

1. थाट में सात स्वरों का होना जरूरी है।
2. थाट में स्वर क्रम अनुसार होने जरूरी हैं जैसे 'स के बाद रे' 'रे के बाद ग' स्वर आना जरूरी है।
3. थाट में केवल आरोह का होना जरूरी है क्योंकि राग में लगने वाले स्वरों से थाट की आरोहों से ही थाट का नाम पहचाना जा सकता है।
4. थाट की पहचान के लिए उसमें उत्पन्न हुए किसी राग का नाम दिया जाता है जैसे बिलावल राग बिलावल थाट से उत्पन्न हुआ है। इसलिए उस थाट का नाम बिलावल थाट रख दिया गया।
5. थाट गाए बजाए नहीं जाते इसलिए इसे रंजकता की आवश्यकता नहीं है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. एक थाट से कई रागों की उत्पत्ति की जा सकती है।
7. थाट से रागों की उत्पत्ति की जाती है।
8. थाट में स्वरों के रूप कोमल और तीव्र, क्रमवार आ सकते हैं।

पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे के दस थाट

1. थाट बिलावल : इस थाट में सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। जैसे स रे ग म प ध नी। इस थाट को शुद्धथाट माना गया है। इस थाट के अंतर्गत बिलावल, बिहाग, देशकार आते हैं। इस राग पर ही थाट का नामकरण बिलावल हुआ।

2. थाट कल्याण : इस थाट में म (मध्यम) स्वर तीव्र लगता है। भाव शुद्ध म और प के बीच वाला ऊंचा स्वर म है जैसे स रे ग में प ध नी। इस थाट में स्वर तीव्र बाकी शुद्ध स्वर लगते हैं। इस थाट के मुख्य राग हैं, कल्याण, यमन, भूपाली।

3. थाट खमाज : इस थाट में कोमल नी और बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे स रे ग म प ध नी। इस थाट के प्रसिद्ध राग खमाज, देस, तिलक कामोद, जैजैवन्ती।

4. थाट काफी : इस थाट में ग और नी स्वर कोमल और बाकी शुद्ध लगते हैं जैसे स रे ग म प ध नी। इस थाट के अंतर्गत राग हैं, काफी भीम पलासी, वृन्दावनी सारंग, बागेश्वरी।

5. थाट भैरव : इस थाट में रे ध कोमल बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं जैसे सा रे ग मे प ध नी। इसके अंतर्गत भैरव, रामकली है।

6. थाट पूर्वी : इस थाट में रे, ध स्वर कोमल और म तीव्र लगते हैं जैसे स रे ग,म प ध नी। इस थाट के अंतर्गत पूर्वी ललित पूरिया आदि राग हैं।

7. थाट मारवा : इस थाट में रे कोमल और म तीव्र स्वर लगता है जैसे स रे ग म प ध नी। इस थाट के अंतर्गत मारवा, सोहनी आदि राग आते हैं।

8. थाट आसावरी : इस थाट में ग, ध नी स्वर कोमल और बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं। जैसे स रे ग म प ध नी इस थाट के अंतर्गत आसावरी दरबारी, अड़ाना, जौनपुरी आदि राग आते हैं।

9. थाट भैरवी : इस थाट में रे ग ध नी कोमल और बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं। जैसे स रे ग म प ध नी। इस थाट के अंतर्गत भैरवी, मालकोस आदि राग आते हैं।

10. थाट तोड़ी : इस थाट में रे ग ध नी कोमल और म तीव्र स्वर लगता है जैसे स रे ग म ध नी। इस थाट के अंतर्गत तोड़ी, गुजरी तोड़ी, मुलतानी राग आदि आते है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जिसमें राग पैदा करने की शक्ति हो उसे क्या कहते हैं?
2. थाट में स्वर कैसे लगाये जाते हैं?
3. पण्डित भातखण्डे जी ने कुल कितने थाट बनाये?
4. शुद्ध स्वरों वाले थाट का नाम बताओ?
5. रे और ध (कोमल) किस थाट में प्रयोग होते हैं?
6. तीव्र म वाले थाट का नाम बताएं।
7. भैरवी थाट में कौन से स्वर लगते हैं?

अध्यापक के लिए :-

1. विद्यार्थियों से दस थाटों के फ्लैश कार्ड बनवायें जायें और खेल-खेल में दस थाटों के नाम और उनमें लगने वाले स्वरों को याद करवाया जाए।
2. दस थाटों का चार्ट तैयार करके कक्षा में लगवाया जाये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 3

ख्याल, बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल

ख्याल

शास्त्रीय संगीत जगत में ख्याल गायन शैली को आधुनिक समय की सबसे अधिक लोकप्रिय शैली माना जाता है। ख्याल शब्द फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है, विचार, कल्पना। इस गायन शैली में कल्पना या ख्याल का अधिक महत्व होता है। ख्याल गाते समय गायक कलाकार गाए जाने वाले राग की प्रवृति अनुसार राग में लगने वाले स्वरों राग के नियम अनुसार उसमें आलाप, तान, बोलतान और विभिन्न अलंकारों द्वारा अपनी बन्दिश को सजाते हैं।

साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि वह स्वर समूह जिसमें गायक अपनी कल्पना शक्ति से कुछ स्वरों, बोलों को लेकर उसमें आलाप, तान, बोलतान और विभिन्न लयकारियों को प्रदर्शित करते हैं उसे ख्याल कहते हैं माना जाता है कि ख्याल शैली का विकास ध्रुपद धमार शैली के बाद हुआ। ख्याल शैली के अविष्कार बारे विद्वानों के भिन्न भिन्न मत हैं। 15वीं सदी में ख्याल का अविष्कार जौनपुर के सुल्तान हुसैन शर्की ने किया पर कुछ लेखक इसका श्रेय अमीर खुसरो को देते हैं।

ख्याल शैली को विकास में, 18वीं, सदी के सुल्तान मोहम्मद शाह रंगीले के दरबारी गायक न्यामत खां (सदारंग) और नौबत खां (अदारंग) किया गया।

ख्याल दो प्रकार के होते हैं -

1. बड़ा ख्याल
2. छोटा ख्याल

1 बड़ा ख्याल (विलम्बित ख्याल)

इस गायन का अविष्कार हुसैन शक्ति को माना जाता है। मुगल काल के अन्तिम बादशाह मुहम्मद शाह रंगीले के दरबारी गायक सदारंग और अदारंग ने हजारों ही ख्याल अनेक रागों में बनाए और अपने शिष्यों को सिखाएं। बड़े ख्याल का गायन विलम्बित लय में होता है। इसके दो भाग होते हैं, स्थायी और अन्तरा। इसके प्रकृति गंभीर होती है। इसमें मुख की तान पलटे आदि का प्रयोग करके इसकी सुंदरता को बढ़ाते हैं। इसमें पहले बराबर की तान लेने के बाद दोगुन, चौगुन की ताने ली जाती है। विलम्बित ख्याल के साथ एकताल, झूमरा, तिलवाड़ा आड़ा चार ताल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

और धीमी तीन ताल आदि तालें बजाई जाती हैं।

2. छोटा ख्याल (द्रुत ख्याल)

माना जाता है कि इसकी रचना अमीर खुसरो ने की है। द्रुत ख्याल के दो भाग हैं स्थाई और अन्तरा। यह चंचल प्रकृति का होता है। बोलतान, आलाप, तान, खटका, मुर्की और अलंकारों आदि का प्रयोग होता है। द्रुत ख्याल की लय मध्य या द्रुत होती है। इसके साथ एक ताल, तीन ताल, झपताल और रूपक आदि तालों का प्रयोग किया जाता है।

ख्याल गायन में आलाप प्रस्तुत करने के बाद विलम्बित ख्याल और फिर द्रुत ख्याल गाया जाता है।

देश के कुछ प्रसिद्ध ख्याल गायकों के नाम इस प्रकार है – उस्ताद फैयाज़ खां, पंडित दलीप चन्द्र बेदी, पंडित ओंकार नाथ ठाकुर, भीमसेन जोशी, बड़े गुलाम अली खां आदि।

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ख्याल शब्द का अर्थ क्या होता है?
2. बड़ा ख्याल किस लय में गाया जाता है?
3. बड़ा ख्याल को प्राकृति कैसी होती है?
4. ख्याल के कितने भाग होते है?
5. छोटा ख्याल किस लय में गाया जाता है?
6. छोटा ख्याल में कौन-कौन सी तालों का प्रयोग किया जाता है।
7. छोटा ख्याल की प्राकृति कैसी होती है।

अध्यापक के लिये :-

विद्यार्थियों को ख्याल गा कर बताये जाये और जानकारी दे कर अभ्यास करवायें जायें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तानपुरा

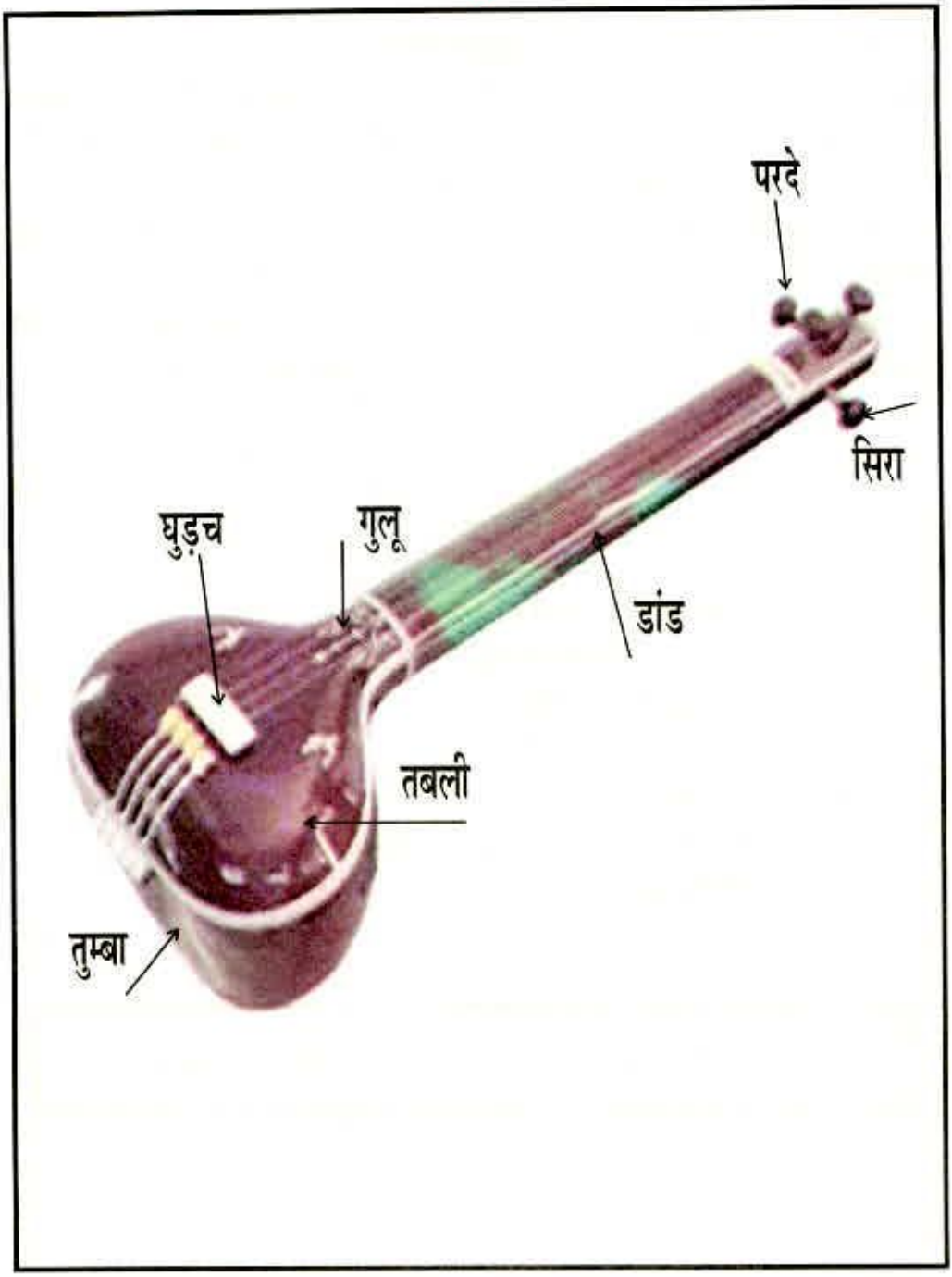

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 4

संगीत का वाद्य - तानपुरा, इतिहास, अंग वर्णन

इतिहास

भारतीय शास्त्रीय संगीत, गायन वादन और नृत्य पर आधारित है। भारतीय शास्त्रीय संगीत खासकर गायन में तानपुरे का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान माना जाता है। स्वर संगति देने के लिए गायन में इसकी संगत की जाती है। लगातार स्वर संगीत देने के लिए इस तंत्र वाद्य से कोई और महत्त्वपूर्ण वाद्य नहीं माना जाता है। इसका स्वर बहुत ही मधुर होने के कारण गायक के अनुकूल वातावरण बनाने में सहायक होता है। इसकी झंकार सुनते ही गायक अपने आप ही मचल उठता है। तानपुरे से आधार स्वर प्राप्त होता है, जिससे गायक आसानी से राग का विस्तार कर सकता है।

उत्तरी भारतीय संगीत और दक्षिण भारतीय संगीत क्षेत्रों में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

तानपुरे के अविष्कार के बारे में मतभेद हैं। प्राचीन काल में गायन की संगति देने के लिए एक तंत्री, दुई तंत्री वीणाओं का प्रयोग किया जाता था। माना जाता है उसके बाद ही चार तारों वाले तानपुरे का प्रचार हुआ। यह भी माना जाता है कि तुम्बरू नामक गांधख ने इसका अविष्कार किया था। इसलिए इसको तम्बूरा या तानपुरा कहा जाता है।

अंग वर्णन :

1. तुम्बा : तानपुरे के नीचे वाले गोलाकार भाग को तुम्बा कहते हैं। यह सूखी लौंकी के गोलाकार भाग का बना होता है। यह बीच में से खोखला होने के कारण इसमें स्वर गूंजते हैं।

2. तबली : तुम्बे के ऊपर वाला भाग जो तुम्बे के ढक्कन का काम करता है, तबली कहलाता है। यह लकड़ी का बना होता है।

3. घुड़च : घुड़च या घोड़ी (ब्रिज) तकड़ी या हाथी दांत की बनी एक चौकी की तरह होती है जो तबली पर टिकी होती है। घुड़च (घुरच) के ऊपर तानपुरे की चारों तारें टिकी होती हैं। इसकी ऊपर सतह जवारी कहलाती है।

4. डांड : तुम्बे और तबली के साथ जुड़ा हुआ एक खोखला लम्बा और गोल, लकड़ी का टुकड़ा होता है। जिसे डांड कहते हैं।

5. सिरा : डांड का ऊपर वाला भाग 'सिरा' कहलाता है। यह भाग तारदान के पीछे होता है। इसमें तानपुरे की चार खुंटियां लगी होती है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. गुलू : तुम्बा और डांड जिस स्थान पर आपस में जोड़े जाते हैं। उस स्थान को गुलू कहा जाता है।

7. लंगोट : डांड पर तने हुए तार जिस जगह पर बांधे जाते हैं। उसे लंगोट कहा जाता है। इसे कील या मोंगरां भी कहा जाता है।

8. तारदान : यह डांड के ऊपर की तरफ लगाया जाता है। यह छिद्रों वाली छोटी सी पट्टी होती है। इन छिद्रों में से तार निकाले जाते हैं। इसे तार गहन भी कहा जाता है।

9. अट्टी : तारदान से पहले भी एक छोटी सी पट्टी होती है। तार इसके ऊपर से होकर गुजरते हुए तारदान में जाते हैं। इस पट्टी को अट्टी कहा जाता है। इसे 'अंटक' भी कहते हैं।

10. खूंटियां : डांड के 'सिरे' भाग के ऊपर लकड़ी की चार खूंटियां लगी होती है। इससे तानपुरे के चारों तार बंधे होते हैं। इसी को खूंटियां कहा जाता है। खूंटियां तानपुरे की तारों को ढीला अथवा कसकर, स्वरों के मिलाने का काम आती है।

11. मनका : घुड़च और कील के बीच तारों में, अलग-अलग मोती पिरोये जाते हैं। इनको मनका कहते हैं। स्वरों के थोड़े-बहुत बेसुरेपन को ठीक करते हैं। यह गोल, चपटे, मोर आदि शक्ल के और हाथी दांत, लकड़ी या कांच आदि के बने होते हैं।

12. जवारी : घुड़च के ऊपरी स्थान को जवारी कहते हैं जिसे छूकर तारें खूंटियों की तरफ जाती है।

13. सूत या धागा : घुड़च (घुरच) के ऊपर जहां तारें होती हैं वहां धागे की तांत दबाई जाती है। तानपुरे की जवारी को ठीक ढंग से प्रयोग करने के लिए यह धागा प्रयोग में लाया जाता है। धागे के ठीक स्थान पर रखे जाने से तानपुरे की झंकार निकलती है और ध्वनि में निखार आता है जिसको कहा जाता है कि तानपुरे को जवारी खुली है। यही धागा सूत कहलाता है।

14. तार : तानपुरे में चार तारें होती हैं। यह तारें तुम्बे के सिरे पर कील या लंगोट से बंधी होती है और तुम्बे के ऊपर रखे घुड़च के ऊपर से होती हुई अट्टी पर टिकी होती है। फिर तारगहन में पिरो कर सिरे ऊपर लगी खुंटियों से कसी जाती है। आजकल तानपुरे में कहीं-कहीं पांच या छः तारों वाले तानपुरे का चलन देखने में आया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तानपुरे के तारों को मिलाना :-

तानपुरे में चार तार होते हैं। इसका पहला तार लोहे का होता है, मन्द्र सप्तक के पंचम से मिलाते हैं। जिन रागों में प (पंचम) वर्जित है तब मन्द्र सप्तक के शुद्ध म 'मध्यम' से मिलाते हैं। पर कुछ रागों में न ही पंचम और न ही शुद्ध मध्यम प्रयोग में आते हैं। उनमें मन्द्र सप्तक को नी (निषाद) के साथ मिलाया जाता है। दूसरा और तीसरा तार मध्य सप्तक के षड़ज 'स' से मिलाया जाता है। यह लोहे के होते हैं, इन्हें जोड़ी के तार भी कहा जाता है। चौथा तार पीतल का बना होता है। यह मन्द्र षड़ज 'स' से मिलाया जाता है। यह बाकी तारों से कुछ मोटा होता है।

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. तानपुरा कब बजाया जाता है?
2. क्या तानपुरे पर कोई राग बजाया जा सकता है?
3. तानपूरे में कुल कितनी तारें होती है?
4. इस में कुल कितनी खूँटियां लगी होती है?
5. तानपुरे का तुम्बा किस चीज़ से बना होता है?
6. तानपूरे की तारें किस से बन्धी होती है?

अध्यापक के लिए :-

1. विद्यार्थियों से तानपूरे को चार्ट बनवाकर क्लास में लगवाया जाये।
2. तानपूरे की पूरी जानकारी विद्यार्थियों को दी जायें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ-5

पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे जी की स्वरलिपि और ताल लिपि

उत्तर भारत में प्रयोग होने वाली लिपि को भातखण्डे की स्वर लिपि से जाना जाता है। यह पद्धति आसान होने के कारण उत्तर भारत में बहुत प्रचलित है। भातखण्डे जी ने सारे भारत का भ्रमण करके पुराने घराने के संगीतज्ञों से संगीत की सामग्री प्राप्त की। संगीत की इस सामग्री पर मेहनत करके एक नई स्वर लिपि तैयार की और अपनी पुस्तक 'क्रमिक पुस्तक मालिका' में इक्ट्ठा किया। पंडित जी का विचार था कि विशेष राग किस तरह गाया जाए और कहां पर कितना ठहराव दिया जाए। इसका ज्ञान विद्यार्थियों को करवाने के लिए उन्होंने नोटेशन पद्धति शुरू की। नोटेशन पद्धति अपने आप में पूरी सिद्ध न हो सकी क्योंकि संगीत की बारीकियों को दिखाने के लिए स्वर लिपि प्रणाली योग्य है। इस लिए स्वर, ताल भाषा के साथ लिपि नोटेशन ज़रूरी है। भातखण्डे की स्वर लिपि और ताल लिपि के चिन्ह :-

1. स्वर

(i) शुद्ध स्वर : संगीत में उपयोग होने वाले सात स्वर शुद्ध स्वर है। इनको स्वर लिपि में लिखने में कोई स्वर चिन्ह नहीं लगाया जाता जैसे स रे ग म प ध नी।

(ii) कोमल स्वर : कोमल स्वरों को स्वर लिपि में लिखने के लिए स्वरों के नीचे लाईन (पंक्ति या डैश) लगाकर सूचित किया जाता है जैसे रे ग ध नी।

(iii) तीव्र स्वर : इन स्वरों के लिए ऊपर छोटी सी रेखा लागई जाती है जैसे म स्वर ही तीव्र स्वर है इसलिए इसके ऊपर खड़ी रेखा लगाई जाएगी। जैसे में

2. सप्तक

(i) मन्द्र सप्तक : मन्द्र सप्तक के स्वरों की पहचान के लिए स्वरों के नीचे बिन्दु लगाया जाता है जैसे स़ रे़ ग़ म़

(ii) मध्य सप्तक : मध्य सप्तक के स्वरों के लिए स्वर लिपि में कोई भी चिन्ह की ज़रूरत नहीं है जैसे स रे ग म

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(iii) तार सप्तक : तार सप्तक के स्वरों के ऊपर बिन्दु चिन्ह लगाया जाता है जैसे सं रें गं मं

3. स्वर मान : '‿' इस प्रकार के अर्द्धचन्द्र के अन्दर जितने भी स्वर आते हैं तो उन्हें एक मात्रा काल में उच्चारण इक्ट्ठे किया जाता है जैसे गम पधनी सरेगम

4. स्वरों की सुन्दरता :

(i) मींड : '⁀' मींड का चिन्ह स्वर लिपि में बताने के लिए स्वरों के ऊपर अर्द्धचन्द्राकार लगाते हैं जैसे ग⁀म। इससे यह स्पष्ट है कि 'ग' के परदे पर 'म' स्वर की मींड क्रिया द्वारा इस प्रकार की ध्वनि का उच्चारण करना 'ग' की स्वर धवनि खण्डित हुए बिना 'म' स्वर पर आकर रूक जाए।

(ii) कण : $\frac{म}{प}$ इस तरह के स्वर ऊपर दूसरा स्वर लिखा गया हो तो इसका अर्थ है कि 'प' स्वर के उच्चारण करने से पहले 'म' स्वर थोड़ा सा छूना। कण पहले स्वर का था बाद के स्वर का भी सकता है। जो स्वर ऊपर बाद वाला स्वर लिखा होगा तो उसका भी कण लिया जाएगा। जैसे $\frac{ग}{प}$ $\frac{म}{ध}$ ।

(iii) खटका : (म) इस प्रकार का कोई स्वर बरैकट में बन्द में बन्द हो तो उस स्वर का उच्चारण करने से पहले उसके बाद वाले स्वर का खटका लेकर अन्दर वाले स्वर कहेंगे जैसे ग म प म या $\frac{ग\ प}{म\ म}$ यह क्रिया जल्दी से और स्वरों के स्पष्ट उच्चारण से की जाती है।

5. गीतों का उच्चारण :

(i) डैश : '–' डैश का निशान जिन स्वरों के आगे लगा हो तो उन स्वरों को उच्चारण करने के बाद उन पर ठहरा जाता है जितने स्वरों के आगे डैश का चिन्ह होगा वह उतने ही मात्रा काल का ठहराव होता है।

(ii) अवग्रह : 'ऽ' यह चिन्ह जिन स्वरों के आगे लगा हो तो उन स्वरों का मात्रा काल के लिए उन बोलों को बढ़ावा जाता है जैसे सऽऽऽ

(iii) अर्द्धविराम : ',' इस तरह का कौमा का निशान जिन गीतों या गत के बोलों के आगे लगा हो तो उसके उतने ही सम, विभाग होते हैं।

6 ताल-लिपि

(i) सम : '×' ताल में सम के चिन्ह के लिए इस तरह के गुणा के चिन्ह लगाए जाते हैं। सम

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ताल की पहली मात्रा पर होता है।

(ii) खाली : '0' ताल में खाली के लिए ज़ीरो का चिन्ह लगाया जाता है। ताल में खाली एक से अधिक भी हो सकती है।

(iii) विभाग : ' ।' इस तरह की रेखा से ताल की मात्राओं की बांट का पता चलता है। प्रत्येक मात्रा के अलग अलग विभाग होते हैं। विभाग के लिए सीधी रेखा का चिन्ह लगाया जाता है।

(iv) ताली : 1.2:3:4 स्वर लिपि में ताल में ताल के चिन्ह के लिए गिनती के चिन्ह जैसे 1,2,3,4 लगाए जाते हैं। कई तालों में एक से अधिक तालियां होती हैं।

स्वर लिपि के लाभ (अच्छाईयां)

1. स्वर लिपि का सबसे बड़ा लाभ यह है कि किसी से सीखी हुई सामग्री को याद करने में मदद मिलती है क्योंकि लिखी हुई सामग्री याद करने में आसानी होती है।

2. स्वर लिपि की सहायता से दूसरी भाषाओं में भी इसका प्रचार हो सकता है।

3. यदि किसी गुणीजन से गायकी की कोई चीज़ सीखी है तो उस स्वर लिपि से उसे सुरक्षित रखा जा सकता है।

4. स्वर लिपि से समय की बचत होती है। लिखी हुई सामग्री को कम समय में सीखना आसान है।

5. रागों की नोटेशन लिखकर रखने से हम अगली पीढ़ी को वह वस्तु या सामग्री करवाने में कारगर सिद्ध हुई है क्योंकि नोटेशन ही ऐसा साधन है जो सभी का रिकार्ड संभाल कर रखता है।

6. स्वर लिपि द्वारा ही हम घरानेदार गायकों की सामग्री को संभालकर रख सकते हैं। जैसे भातखण्डे जी ने पुस्तक 'क्रमिक पुस्तक मालिका 6' में घरानेदार चीज़े लिखी हैं।

7. स्वर लिपि स्पष्ट, सरल होने पर कम ज्ञान वाले और विद्वान दोनों लाभ ले सकते हैं।

8. किसी भी घराने की शैली (गायन, वादन) की स्वर लिपि की सहायता से ही लिखकर सुरक्षित रखी जा सकती है।

9. स्वर लिपि का उद्देश्य स्पष्ट और शुद्ध रूप से सभी सामग्री का वर्णन करना है जिससे पढ़ते ही यह चीज़े स्पष्ट हो जाए।

स्वर लिपि की हानियां (बुराईयां)

1. स्वरों का शुद्ध उच्चारण जैसे स्वरों के विषाम, कोमल और तीव्र स्वरों का उच्चारण आदि

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वर लिपि में नहीं उतारा जा सकता। केवल स्वर लिपि पर ही आधारित होना पड़ता है। संगीत की असलियत से दूर चले जाते हैं।

2. स्वरों का उच्चारण, राग को गाने का ढंग, लिखकर नहीं सीखा जा सकता है, सुनकर सीखा जा सकता है।

3. स्वर लिपि ने संगीत के विद्यार्थियों को आलसी बना दिया है जिससे विद्यार्थी स्वयं ही गलत तरीके से घर बैठकर संगीत सीख रहे हैं जिससे गुरू शिष्य परंपरा समाप्त होती जा रही है।

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उत्तर भारत में प्रयोग होने वाली स्वर लिपि को क्या कहते है?
2. पंडित भातखण्डे की पुस्तक का नाम बताओ जिस में उन्होंने स्वर लिपि की सामग्री लिखी है।
3. ⌣ के अर्धचन्द्र से क्या तात्पर्य है?
4. गपि यह चिन्ह किस चीज़ का है?
5. × का चिन्ह किसका है?
6. गीत के ठहराव के लिये कौन सा चिन्ह लगाया जाता है?
7. स्वर लिपि का कोई एक लाभ बतायें।

अध्यापक के लिये :-

1. विद्यार्थियों को कापी पर स्वर लिपि और ताल लिपि लिखवाई जाये।
2. छोटे-छोटे गत्ते के टुकड़े लेकर उन पर स्वर लिपि और तालिपि के चिन्ह बनाने के लिये विद्यार्थियों को कहा जाये और खेल-खेल में इन चिन्हों का अभ्यास करवाया जाये।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ-6

गीतों की किस्में - शब्द, भजन, लोकगीत

(i) शब्द

शब्द गायन में गुरू जी की वाणी का गायन है जो गुरूद्वारों, धार्मिक स्थानों, धार्मिक समारोहों में गाये जाते हैं। शब्द गायन को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है। शब्दों को रागों में गाना अतियंत पवित्र माना जाता है। शब्द को 'गुरूमूर्त' (गुरू मूर्ति) के समान समझा गया है। शब्द के मूल (सर्वप्रथम) लेखक श्री गुरू नानक देव जी ही हैं। इनके समय से ही कीर्तन की प्रथा थी। श्री गुरू अर्जुन देव जी के समय से ही गायन का विशेष समय निर्धारित किया गया। यह समय दिन में चार बार रखा गया। आज भी इस नियम की पालना की जाती है।

समय के चक्र को चौंकी के नाम से संबोधित किया जाता है।

1. आसा दी वार दी चौंकी

यह अमृत वेले प्रातः काल की संधि बेला की वाणी है। यह वाणी राग आसा में गाई जाती है।

2. चरण कमल की चौंकी

इस चौकी का समय दिन के पहले पहर से आरंभ होता है। इसमें तोड़ी, गुजरी, बिलावल देव गन्धारी, सारंग, सूही, वडहंस यह गाए जाते हैं।

3. कल्याण की चौंकी

रात के पहले पहर के बाद इन रागों को गाया जाता है जैसे जैतसरी, गौड़ी, धनाश्री, माल गौड़ी, मारू मल्हार, बंसत, केदार आदि।

श्री गुरू अर्जुन देव जी ने 31 रागों में से 22 रागों में अपनी बाणी का गायन किया है। 12 रागों में उन्होंने शब्द की रचना की, दूसरे गुरूओं, संतों, फकीरों रचनाओं का शब्द गायन किया। उन्होंने अपनी भाषा में भी शब्द रचना की पर गुरू ग्रंथ साहिब में उन्हों शब्दों को मूल रूप पंजाबी लिपि का नाम दे दिया। इस तरह अब राग तालों में नियमबद्ध शब्द का गायन किया जाता है।

(ii) भजन

ईश्वर की उपासना के लिए अराधना के लिए जो गीत गाए जाते हैं उसे भजन कहते हैं। भजन से मन को शांति मिलती है। भजन आत्म विश्वास, आत्म विकास, आत्म ज्ञान का सबसे आसान तरीका है। यह भजन ईश्वर गुणगान, देवी देवताओं की स्तुति के लिए होते हैं। भक्ति काल में

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सूरदास, मीराबाई, कबीर, तुलसीदास के भजनों का गायन किया जाता है। भजन लोगों की आत्म शक्ति बढ़ाने का साधन है। भजन का गायन शास्त्रीय रागों में होता है और तालें आसान रखी जाती हैं ताकि जनसाधारण को समझ आ सके। भजन में शब्द के भावों का विशेष स्थान है। इसकी शब्दावली का प्रयोग मन्दिरों, धार्मिक समारोहों में किया जाता है। भजन आमतौर पर भैरवी, खमाज, भीम पलासी, बागेश्वरी, तिलंग देस आदि रागों में गाए जाते हैं। भजन में आमतौर पर ढोल, ढोलकी, तबले का प्रयोग किया जाता है और कहरवा, दादरा तालें बजाई जाती है।

(iii) लोक गीत

लोक गीतों को संगीत की सबसे पुरानी शैली कहा जाता है। इस प्रकार भी कह सकते हैं कि जब से मनुष्य ने धरती पर पैर रखा तब से ही लोकगीत का जन्म हुआ है। जब मनुष्य अपने हृदय के दुख सुख के भावों को शब्दों और संगीत द्वारा प्रकट करता था तो भिन्न-भिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले संगीत को लोक गीत कहते हैं। लोक गीतों का संबंध सीधा लोगों से होता है। लोक गीतों में सादगी, अल्हड़पन, सरलता होती है। लोक गीत आदि काल से ही मनुष्य का मनोरंजन करते आ रहे हैं। इसमें हर व्यक्ति गायक, वादक और कवि है। प्रकृति का कोई अंग नहीं जहां लोक गीतों की रचना न हुई हो। यह प्रकृति के झरने की तरह अपने आप उत्पन्न होती है। इनके गीत बनाए नहीं जाते। वह अपने आप माहौल के अनुसार हृदय में से निकलते हैं।

लोक गीत के आधार पर कई रागों का अविष्कार हुआ जैसे मांड, देस, पहाड़ी, पीलू आदि। हमारे देश में उत्साह, प्यार, मस्ती, बलिदान के अनेकों लोक गीत प्रचलित हैं। लोक गीतों में कठिन तालों और स्वरों का लगाव बड़ी सादगी और मधुरता से लगाया जाता है। आज का फिल्मी दौर भी लोक गीतों के कारण प्रसिद्धी प्राप्त कर रहा है। पंजाब के लोक गीतों में लोक कथाएं जैसे : हीर रांझा, जग्गा, ससी पुन्नु, मिरजा साहिबा, मलकी, घोड़ियां, सुहाग, सिठणीयां। यह लोक गीतों का हिस्सा है। लोक गीत मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक साथ देता है। पंजाब के भिन्न भिन्न त्यौहार जैसे बसंत ऋतु, लोहड़ी, वैशाखी, बरसात की ऋतु, (तीयां के गीत) त्रिजंना के गीत भिन्न भिन्न अवसरों पर गाए जाते हैं।

लोक गीतों में प्रयोग होने वाले वाद्य जैसे ढोल, ढोलकी, चिमटा, खड़ताल आदि का प्रयोग होता है। इन गीतों के साथ अधिकतर कहरवा दादरा दीपचन्दी खेमटा आदि तालें बजाई जाती हैं। लोक गीत हमेशा मध्य लय या द्रुत लय में गाए जाते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. परमात्मा की उस्तत में (अराधना में) गुरुद्वारों में किस का उच्चारण किया जाता है?
2. सुबह 4 बजे से 7 बजे गुरुद्वारों में कौन सी चौकी पढ़ी जाती है?
3. शब्द किस ग्रन्थ में दर्ज हैं?
4. गुरुद्वारों में गाये जाने वाली वाणी को क्या कहते है?
5. मन्दिरों में ईश्वर की उपासना में क्या गाया जाता है?
6. मीरा बाई किस वाध के साथ भजन गाती थी?
7. लड़कियों को विवाह शादियों पर गाये जाने वाले गीतों को क्या कहा जाता है?
8. लोकगीतों से क्या तात्पर्य है?

अध्यापक के लिये :-

विद्यार्थियों को शब्द भजन और लोकगीत तैयार करवायें जायें। स्कूल में आपसी मुकाबलें करवाये जायें ताकि इन तीनों में फर्क समझ सकें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 7

गायक के गुण और दोष

विधि के विधान हर स्थान गुणों और अवगुणों का सुमेल है। संगीत मंच प्रदर्शन की कला है क्योंकि इसका सीधा संबंध श्रोताओं के साथ होता है। संगीत की कोई कला गायन, वादन और नृत्य सभी का मूल रूप और सारा फल श्रोताओं को ही जाता है। गायक श्रोताओं के मन प्रसन्न करने में सफल तो वह उसके गुण होते हैं। इन सभी के अतिरिक्त उसके हाव भाव गुण दोष भी उसकी कला पर प्रभाव डालते हैं और बिगड़ने में भी उतने ही उत्तरदायी होते हैं। संगीत का मुख्य उद्देश्य श्रोताओं का मन प्रसन्न करना है। यह सारा कुछ कलाकार के गुणों पर निर्भर करता है। इसलिए किसी गायक में कुछ दोष रह जाए तो अपनी गायकी द्वारा श्रोताओं को खुश नहीं कर सकता। इसलिए गायक को गुण अपनाकर दोषों का सुधार करना चाहिए ताकि वह अपनी गायकी का प्रदर्शन अच्छी तरह से कर सके इसलिए गायक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए :-

गायक के गुण :

1. **मीठी और सुरीली आवाज़ :** जिसकी आवाज़ मीठी और सुरीली है। अभ्यास के साथ गायक के इस कमी को दूर कर अपनी आवाज़ को मनमोहक बना सकता है।

2. **एकाग्र चित्त होकर गायन करना :** गायक का यह महत्त्वपूर्ण गुण है क्योंकि संगीत प्रदर्शन के समय गायक के राग स्वरूप, रागदारी ताल का ध्यान और श्रोताओं पर पड़ते प्रभाव को देखना होता है।

3. **स्वाधीन कंठ :** जिसका कण्ठ खुली आवाज़ वाला हो। यह कंठ अभ्यास और साधना के साथ ही हो सकता है।

4. **ताल और लय का ध्यान :** यह गुण प्रत्येक गायक में होने ज़रूरी हैं क्योंकि बेताला गायक कभी भी अपनी कला से श्रोताओं का मन नहीं मोह सकता।

5. **भिन्न भिन्न गायकी में गाना :** जो ख्याल ध्रुपद, धमार, टप्पा आदि निपुण हो। जिस किसी गायन शैली में प्रदर्शन करे उसके विस्तार से पूरा ज्ञाता हो।

6. **प्रयोगी लय :** जो अपने गायन से सुनने वालों का दिल जीतने में माहिर है। राग के रस को रंजंकता का ध्यान रखे।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7. गमक : कुशल गायक का कंठ तीनों सप्तकों मन्द्र, मध्य, तार सप्तकों का कुशलता पूर्वक गायन कर सकता हो।

8. अभ्यास : जो राग विस्तार में ताल आलाप अलंकार बोल ताल का अच्छा अभ्यास पेश करे और अपनी कला में नियमित अभ्यास करे।

9. शुद्ध शब्द उच्चारण : जिसे संगीत के साथ-साथ भाषा और साहित्य का भी ज्ञान हो जो शुद्ध शब्द उच्चारण कर सके।

10. संगीत शास्त्रकारों का जानकारी : जो संगीत के साथ संबंधित शास्त्रों की और संगीत के महान कलाकारों के कामों (योगदान) की और जीवनी की अधिक से अधिक जानकारी रखता हो।

11. विधि अनुसार शिक्षा : जिसने विधि अनुसार संगीत शिक्षा किसी गुरू या अध्यापक से ली हो।

दोष : जिस गायक में ऊपर लिखित गुण न हो वह उसके दोष माने जाते हैं।

गायक के दोष :

1. दांत पीसकर गाना
2. जिसके गायन में नीरसता हो
3. डरते-डरते गाना
4. कांपती आवाज़ या मुंह फाड़कर गाना
5. स्वरों का ठीक जगह पर न लगना बेसुरा हो जाना
6. बेताला गाना, गले की नसें फूलाकर गाना
7. मुंह टेढ़ा और पैर पटक कर गाना
8. गाते समय वर्जित स्वरों का प्रयोग करना
9. शब्द उच्चारण ठीक न होना
10. भयानक मुंह खोलकर गाना
11. नाक से ध्वनि निकाल कर गाना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गायक के कोई दो गुण लिखो?
2. गायक को अपना कन्ठ सुरीला बनाने के लिये क्या करना चाहिये?
3. क्या किसी गायक को किसी गुरु से शिक्षा लेनी चाहिये या नहीं?
4. गायक के कोई दो दोष बताओ?
5. जब कोई गायक मुँह बिगाड़ कर गाये तों उस गायक का दोष है या गुण?

अध्यापक के लिए :-

विद्यार्थियों को संगीत सिखाने से पहले ही उनमें अधिक गुण डालने चाहेंये ताकिं वह दोषों से बचे अगर कोई दोष हो तो दूर करने के कोशिश करनी चाहिये ताकि वह अच्छे गायक बन सके।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 8

राग और थाट के नियमों की आपसी तुलना (अन्तर)

राग की परिभाषा

कम से कम पाँच और अधिक से अधिक सात स्वरों की वह सुन्दर रचना जो कानों की अच्छी लगे उसे राग कहते है। अविनव राग मन्जरी में इस की परिभाषा इस प्रकार दी गई है स्वर और वर्ण से सजी ध्वनि जो मनुष्य का मनोरजंन करें, राग कहलाती है।

थाट की परिभाषा

सप्तक के 12 स्वरों में से सात क्रम बार मुख्य स्वरों के उस समूह को थाट कहते है जिससे थाट पैदा हो। थाट को मेल भी कहा जाता है। अविनव रागमंजरी में इस की परिभाषा इस प्रकार दी गई है मेल या थाट स्वरों के उस समूह को कहते हैं जिस में राग पैदा करने की शक्ति हो।

राग और थाट के नियमों की तुलना

राग के नियम	थाट के नियम
1 राग की उत्पत्ति थाट से होती है।	थाट की उत्पत्ति के सात स्वरों से होती है। इन स्वरों में किसी स्वर का शुद्ध या विकृत रूप प्रयोग हो सकती है।
2. राग में कम से कम पाँच स्वर और अधिक से अधिक सात स्वर होने चाहिये। इससे कम या अधिक नहीं।	प्रत्येक थाट में कम से कम और अधिक से अधिक सात स्वर ही होने चाहिये क्योंकि यदि थाट सम्पूर्ण (सात स्वर) नहीं रहता तो सम्पूर्ण राग की उत्पत्ति नहीं कर सकेगा।
3. किसी भी राग में षड्ज स स्वर कभी भी वर्जित नहीं होता क्योंकि यह सप्तक का आधार स्वर (की-नोट) होता है।	यह सम्पूर्ण होने चाहिये और स्वर भी क्रमानुसार होने चाहिये।
4. राग में आरोह और अवरोह दोनों का होना जरूरी है केवल आरोह से राग की पहचा नहीं हो सकती।	किसी भी थाट में आरोह-अवरोह दोनों का होना जरूरी नहीं है क्योंकि हरके थाट के आरोह-अवरोह में कोई अन्तर नहीं होता केवल आरोह या अवरोह देखने से ही थाट की पहचान हो जाती है।
5. प्रत्येक राग में म (मध्यम) प (पंचम) में से कम से कम एक स्वर का होना जरूरी है। दोनों स्वर इक्ट्ठे कमी भी वर्जित नहीं हो सकते। यदि प के साथ शुद्ध म भी वर्जित है तो उस राग में तीव्र में लगेगा।	थाट में इस तरह का कोई नियम नहीं है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. राग में किसी भी स्वर के दोनों इक्टठे प्रयोग नहीं होने चाहिये पर यह सम्भव है कि आरोह में शुद्ध स्वर प्रयोग किया जाये और अवरोह में कोमल स्वर	थाट में इस तरह का कोई नियम नहीं है क्योंकि थाट गाये बजाये नहीं जाते।
7. राग में आरोह और अवरोह के स्वरों की गिनती में भिन्नता कारण राग की मुख्य तीन जातियां और नौं उप जातियां होती है।	थाट की कोई जाति नहीं होती।
8. प्रत्येक राग में आरोह, अवरोह, पकड़ समय वादी सम्वादी का होना जरूरी है।	थाट गाये बजाये नहीं जाते इसलिए समय पकड़ आदि के जरूरत नहीं है।
9. राग में रजकता का होना जरूरी है।	इनमें रजकता की जरूरत नहीं क्योंकि यह गाये बजाये नहीं जाते।
10. राग थाट से उत्पन्न होते है पर राग का नाम स्वतन्त्र होता है भाव राग को कोई भी नाम दिया जा सकता है।	थाट का नामकरण उससे निकले किसी प्रसिद्ध राग के नाम पर किया जाता है।
11. हर एक राग किसी न किसी थाट से पैदा माना जाता है। इसलिए हर राग को जन्य राग कहा जाता है। जन्य का अर्थ, जो पैदा हुआ हो।	प्रत्येक राग किसी न किसी थाट से उत्पन्न माना गया है इसलिए प्रत्येक थाट को जनक थाट कहा जाता है। जनक का अर्थ है पिता जिन थाटों में राग पैदा हुए हों।

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. राग से कम से कम और अधिक से अधिक कितने स्वर लगते है?
2. रागों की उत्पत्ति किस से होती है?
3. क्या राग में 'स' स्वर वर्जित किया जा सकता है?
4. क्या थाट में स्वर क्रमानुसार होने चाहिये।
5. थाट में किस को पैदा करने को शक्ति होती है?
6. क्या राग गाए-बजाए जाते है।

अध्यापक के लिए :-

विद्यार्थियों से राग और थाट के नियमों का चार्ट बनवा कर कक्षा में लगवाया जाए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ-9

पंजाब के लोक साज (वाद्य)

हमारा सम्पूर्ण संगीत वाद्यों के सहयोग से त्योहार आगे बढ़ता हैं। पंजाब प्रान्त इस प्रकार का प्रान्त है जहाँ कई जैसे त्योहार बसाखी लोहड़ी बसंत ऋतु का विवाह शादियों पर गाए जाने वाले गीत खुशी पर पाये जाने वाले लोक नृत्य जैसे गिधा भागंडा, मलवई गिद्धा लुडी, गुरूद्वारों और मन्दिरों में उच्चारण किये जाने वाले शब्द, भजन पंजाब की प्रसिद्ध लोक कथायें जैसे हीर, रांझा, ससी पुन्नु, मलकी आदि इन सभी के साथ भिन्न-भिन्न तरह के लोक साज (वाद्य) लय और ताल देने के लिये प्रयोग किये जाते है। यह सभी लोक साजो की श्रेणी में आते है। पंजाब प्रातं में चार प्रकार के वाद्य प्रयोग किये जाते हैं और इनका प्रचलन भी बहुत अधिक है। जैसे सितार, वीणा सारंगी तन्त्रवाद या तन्त्री वाद्य को श्रेणी में आते है इन वाद्यों का प्रयोग गज या किसी और चीज के साथ तार पर किया जाता है। दूसरी श्रेणी में अवनद वाद्य, इस श्रेणी में चमड़े की खाल को मड़ें वाद्य है जैसे ढोल, ढोलकी, तबला ढड आदि। तीसरी श्रेणी में सुषिर वाद्य आते है। इन वाद्यों में हवा भरने से ध्वनि पैदा करते है बेशक वह मुंह से भरी जाए या हाथ के प्रयोग से, जैसे बांसुरी, हारमोनीयम शहनाई बीन आदि। चौथी श्रेणी में धन वाद्य आते हैं जो आपसी रगड़ से बजतें है जैसे खड़ताल चिमटा मंजीरा, छुनछुना आदि। इन चारों श्रेणी के लोक वाद्य के साथ है। पंजाब प्रांत का संगीत आगे बढ़ता हैं। इसीलिये इन वाद्यों के पारम्परिक ढंग से बजाया जाता है। पंजाब प्रांत में किये जाने वाले कुछ वाद्यों के बारे में हम बात करेगें जो निम्नलिखित है।

1. ढोल:-

पंजाब के लोक साज़ों में ढोल बहुत ही महत्वपूर्ण वाद्य है। यह वाद्य अवतद्ध वाद्यों की श्रेणी में आता है। जहां यह खेल वीरता का प्रतीक है वहाँ सामाजिक जीवन में उत्साह का प्रतीक है। इसका प्रयोग लोकगीत, लोकनाच, भागंड़ा,

ढ़ोल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गिद्धा, मलवई गिदधा, लुडी, अखाड़ो में, गतकों के साथ बहखुबी बजाया जाता है। जब यह वाद्य बजता है तो अपने आप ही पैर थिरकने लग जाते है और कन्धे फड़फड़ाने लग जाते हैं। ढोल अन्दर से खोखला होता है और यह लकड़ी का बना होता है। इस के दो भाग होते है दायां और बायां। यह दोनों भाग बकरे की खाल के मढ़े होते है। चमड़े को कसने के लिये रस्सी का प्रयोग किया जाता है। बांये हाथ से ढोल को ऊँचे स्वर में और बायें भाग के ढोल के नीचे के स्वरों में और बायें भाग के ढोल के नीचे के स्वरों में मिलाया जाता है। स्वर ऊँचा नीचा करने के लिये रस्सी को प्रयोग किया जाता है इन में छल्ले डाले जाते है इन छल्लों को कसने से स्वर ऊँचा नीचा होता है। ढोल को रस्सी के साथ पिरोकर कन्धे रस्सी के साथ लटका कर, लकड़ी या बाँस की छड़ियों से बजाया जाता है। ढोल के बाई तरफ हॉकी की शक्ल को एक छड़ी मारी जाती है जिसे डगा कहते है। ढोल पर कहरवा ताल, दादरा ताल, भंगड़ा ताल आदि बजाई जाती है।

2. ढोलकी:-

पजांब के लोक गीतों में ढोलकी का खास स्थान है। पंजाब का कोई भी ऐसा लोकगीत नहीं जिस में यह वाद्य न बजता हो। पंजाब का प्रसिद्ध लोक नृत्य गिदधा, विवाह शादियों पर गाये जाने लोकगीत मन्दिरों में गाये जाने वाले भजन, जगरातों में गाये जाने भजन, प्रभातफेरियों में और गुरूद्वारों में शब्दों के साथ इस वाद्य को खूब प्रयोग किया जाता हैं। ढोल को शीषम, आम, सागवान देवदार आदि की लकड़ी को अन्दर से खोखला करके अन्दर से बनाई जाती है। इसके दो भाग होते हैं। दायां और बांया। इन दोनों की तरफबकरे की खाल मढ़ी जाती है और सूत की रस्सीयों में पीतल या लोहे के छल्लें ढोलकी को कसने या ढीला करने के लिये लगाये जाते हैं। ढोलकी के बायें मुँह के अन्दर विशेष प्रकार का मसाला लगाया जाता है जिस से आवाज़ भारी निकलती है। ढोलकी के दोनों हाथों को हथेलियों और उँगलियों के सहारे बांध

ढ़ोलकी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बजाया जाता है। कई बार वादक इसे और रोचक बनाने के लिये अँगूठे में छल्ला या कलाई पर घुघँरू बांध लेते है जब ढोलकी बजती है तो छल्ले और घुघँरू की आवाज़ बहुत की प्रभावशाली लगती है। ढोलकी का प्रयोग लोकगीत, लोक कथायें, लोक गाथायें जैसे मलकी को मिरज़ा, जग्गा आदि के साथ बजाई जाती है।

3. ढड :-

ढंड

इस वाद्य का प्रयोग पंजाब में बहुत किया जाता है। यह वाद्य बहुत ही प्राचीन साजों में से एक है यह डमरू, डरू, डिमडिम आदि वाद्यों की जाती में से एक हैं। इस वाद्य की संगति अधिकतर सांरगी वाद्य के साथ की जाती है। जब यह दोनों वाद्य ढड और सांरगी, कलियां, किस्से धार्मिक गाथायों आदि के साथ ढड वाद्य बजाया जाता है। ढड आम शहतूत टाहली या शीषम की लकड़ी से बनाई जाती है। इसका बीच का भाग अन्दर का होता है। इसके दो मुँह गोलाई में होते हैं इस पर चमड़े के पुड़े चढ़ाये जाते है। दोनों तरफ से सूत की पतली रस्सी के साथ सात आठ स्थानों से बाँधा जाता है। इसमें रस्सी फालतु और लम्बी रखी जाती है जिसे ढड के बीच के हिस्से पर लिपटा दिया जाता हैं। उसके बाद ढड को बजाते हैं। इस रस्सी को बार बार खींचा जाता है और ढड्ड ढीला किया जाता है। रस्सी के खिचें जाने पर ही ढड का दोनों तरफ का चमड़ा कसा जाता है उस में से स्वर पैदा किया जाता है। वादक एक हाथ में ढड पकड़ कर दूसरे हाथ की ऊंगलियों से इसे बजाया जाता है और बार-बार इसकी रस्सी के सहारे स्वर ऊँचे और नीचे करता रहता है।

4. सांरगी :-

जैसे सांरगी के नाम से ही स्पष्ट है कि सौ रंगो वाली। यह पंजाब का प्रसिद्ध वाद्य है इसे गम्भीर प्रकृति का वाद्य माना जाता है। इस का प्रयोग ढड के साथ अधिक किया जाता है। इसका प्रयोग वार, लोकगाथा, धार्मिक गाथायें, शास्त्री संगीत, लोकगीत के साथ किया जाता है जिस पर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चमड़ामद दिया जाता है। इस चमड़े पर ऊँठ की हड्डी की घोड़ी टिकाई जाती हैं। इस घोड़ी पर खूंटियां की तरफ से चमड़े की चार तारें लगाई जाती है। सारंगी को कमान की मदद से बजाया जाता है। बायें हाथ को ऊंगलियों के नाखूनों के साथ तारों के पीछे से छू कर अपनी मन मुताबिक स्वर निकाले जाते हैं। इस वाद्य को बजाना आसान नहीं है। इसके स्वर अभ्यास के साथ ही निकाले जाते हैं। आज के नौजवान इस वाद्य के बखूबी बजा रहे है। आज के प्रसिद्ध सारंगी वादकों में से मोहन सिंह सीतल, नारायण सिंह दीदार सिंह, पाल सिंह, अमर सिंह आदि।

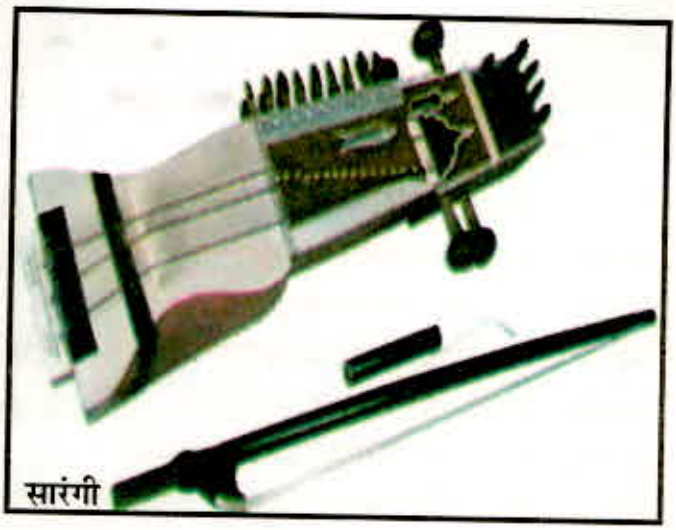
सारंगी

5. नगाड़ा:-

यह एक अवनद साज है। इसे बहुत ही प्राचीन वाद्य माना जाता है क्योंकि पहले युद्धों की। चेतावनी या राजाओं को फरमान के लिये जनता को इकट्ठा करने के लिये या कोई जनतक सूचना के लिये इस वाद्य का प्रयोग किया जाता था। यह वाद्य ताल प्रधान, वीर रस का प्रतीक है। पंजाब में गुरूद्वारों में धार्मिक समारोहों में इस वाद्य का प्रयोग किया जाता है। इसका खोल लोहे के धातू से बना होता है और इस पर भैंस के खाल से मढ़ा जाता है। फिर इसको चमड़े की रस्सी के साथ कसा जाता है। इस पर सूत को आठ

नगाडा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दस बद्दरी मढी जाती हैं जिस के साथ नगाड़ा को सुर में किया जाता है। नगाड़े को तिपाई पर रख कर डंडों के साथ बजाया है।

6. अलगोज़ा:-

अलगोजा

अलगोज़े का पंजाब के लोक नृत्यों और गीतों में बहुत अधिक स्थान है। लोक नृत्यों और गीतों में यह वाद्य चार चाँद लगा देता है। अलगोज़ा बांसुरी शहनाई की जाति का हैं। यह वाद्य खोखले बांस से बनाया जाता है। अलगोज़ें में चार से सात तक छिद्र होते है। ऊपर से इकट्ठी फूंक मारने से दोनों हाथों में पकड़ कर बजाया जाता है। दोनों अलगोज़ों पर भिन्न-भिन्न ऊंगलियों का प्रयोग किया जाता है। इस वाद्य के स्वतन्त्र रूप में बजाया जाता है। इस साज़ का स्वर बहुत ऊचाँ होता है। इसलिये गायक को भी बहुत ऊँचा गाना पड़ता है। इस पर रंग बिरंगे धागे की गुत्ते बना कर सजावट की जाती है। पंजाब में इस वाद्य को प्रयोग गिद्धे भंगड़े की बोलियों के साथ किया जाता हैं।

7. बांसुरी:-

बांसुरी

बांसुरी बहुत ही प्राचीन वाद्य हैं पंजाब के मन्दिरों में, लोक नृत्यों में लोक कथाओं मे प्रयोग किया जाता है। हीर रांझा में बांसुरी को रांझे की वंझली कहा गया है क्योंकि रांझा खुद बांसुरी बजाता था। बांसुरी बांस या और धातुओं की बनी होती है पर बांस की बांसुरी को अच्छा माना जाता है पर यह गर्मी में तिड़क कर फट जाती है। पंजाब में बांसुरी बांस की ही अधिक प्रचलित है। इसके दोनों तरफ बाँस की गाठों से बन्द किया जाता है। बांसुरी के बांई तरफ एक दो इंच जगह छोड़ कर छिद्र किये जाते है। इस रास्ते से वादक बांसुरी में हवा भर कर और बांसुरी को दोनों हाथों से पकड़ कर बजाता है। बांसुरी को पकड़ने के लिये दायें हाथ की ऊंगलियों को नीचे के तीन छिद्रों पर टिकाया जाता है और बायें हाथ की तीन ऊंगलियों को ऊपरी तीन छिद्रों पर रखा जाता है जब सारे छिद्र अच्छी तरह बन्द हो जाते है तो हल्की सी फूंक लगाई जाती है और नीचे से एक एक

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

छिद्र खुलता जाता है और ध्वनि (सुर) पैदा हो जाता है। बांसुरी पर पुराने गीतों की धुनें लोक गीत लोक कथायें, हीर रांझा, ससी पुन्नु, मिरज़ा साहिबा के किस्से गाये जाते है।

8. तुम्बी:-

तुम्बी प्राचीन का बहुत प्राचीन वाद्य है। यह वाद्य लकड़ी या कद्दु को खोखला करके बनाया जाता है। इस पर एक फुट या फुट तक का लम्बा लकड़ी का डांड लगाया जाता है। खोल की चौड़ाई दस सैंटीमीटर तक की होती है। खोल के मुंह पर चमड़े की पतली खाल चढ़ाई जाती है। डांड के ऊपर की तरफ बाई तरफ हाथ की लकड़ी के ऊपर एक खूंटी लगाई जाती है। इस खूंटी में तार को पिरो कर लकड़ी की खोल में बीच से निकले फालतू डंडे के साथ बांधी जाती है। चमड़े की खाल पर बांस या लकड़ी का एक टुकड़ा रखा जाता है जिसे घोड़ी कहते है। खूंटी को घुमाने से आवाज़ में उतार चढ़ाव आता है। इस वाद्य को दायें हाथ की पहली ऊंगली में मिज़राव डाल कर बजाया जाता है। पंजाबी लोक गीतों में जो स्थान इस वाद्य का है शायद ही किसी और वाद्य का हो।

तुम्बी

9. चिमटा:-

चिमटा एक प्रसिद्ध लोक वाद्य है इस साज़ को भजन कीर्तन, नगर कीर्तन, प्रभात फेरी में प्रयोग किया जाता हैं। चिमटे की लम्बाई 4 फुट तक होती है और लोहे का होता है इसके ऊपर की तरफ लोहे का एक गोल कड़ा डाला जाता है। इस कड़े को बायें हाथ से चिमटे पर मारा जाता है और दायें हाथ से दोनों पत्तरों को आपस में रगड़ा जाता है। चिमटे के दोनों पत्तरों में सात से आठ स्थानों पर लोहे या पीतल के छल्ले लगाये जाते है। दोनों पत्तरों को आपस में

चिमटा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

टकराया जाता है और बहुत ध्वनि निकलती है। बड़े चिमटे के आकार के छैणे देहाती बाजे के साथ और आकार के छैणे वाले चिमटे का प्रयोग भंगड़े कीर्तन और भजन आदि के साथ की जाती है। कई नौजवान भंगड़े में इसे रख हाथ से बजाते है और आप भी जोश में आ जाते हैं।

10. खड़ताल:-

खड़ताल को खरताल के साथ भी जाना जाता है। पुराने समय में साधु सन्त इस वाद्य का प्रयोग करते थे और भजन उच्चारण करते थे। नारद मुनि के हाथ में खड़ताल देखने को मिलता है। पंजाब में इस वाद्य का प्रयोग मन्दिरों, गुरूद्वारों में भजन और कीर्तन के साथ किया जाता है। यह लकड़ी के टुकड़े से बनाई जाती है। इन में पीतल या लोहे के गोल आकार के छल्ले लगाये जाते है यह साज एक ही हाथ से पकड़ कर बजाया जाता है। इस वाद्य में अंगूठा डालने की जगह होती है और दूसरी तरफ चार ऊंगलियां डालने की जगह होती है। इन दोनों टुकड़ो के आपस में खड़ताल से आवाज निकलती है। कहा जाता है कि मीरा बाई ने खड़ताल के साथ भजन कीर्तन करते मोक्ष प्राप्त किया।

खड़ताल

11. सप्प:-

पंजाब के लोकनृत्य भंगड़ा का एक यह मुख्य वाद्य है। इसको 'सप्प' इसलिये कहा जाता है क्योंकि इसकी बनावट 'सप्प' जैसी होती है। यह साज सिंफ पंजाब में ही प्रयोग किया जाता है। सप्प की उत्पत्ति लोगों के स्वभाव की जरूरत अनुसार ही हुई है। इस वाद्य को आवाज़ इस तरह की है जैसे कुछ व्यक्ति इक्ट्ठे (ताड़ी) तालीयां बजा रहे हो। यह एक घण और ताल प्रधान वाद्य है इस साज़ की बनावट बच्चों के खेलने वाली खेल 'सपखेल' से मिलती जुलती है। इस वाद्य में लकड़ी की खड़ी और चपटिंया फटीयां जुड़ी होती है। इन फट्टीयों की लम्बाई लगभग डेढ फुट और

सप्प

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चौड़ाई एक इंच होती है फट्टीयों को मोटाई पौनी इंच होती है। 'सप्प' 28 सैंटीं मीटर के लम्बाई में होता है। जहाँ दो फट्टीयों का स्पर्श होता है वहाँ छिद्र निकाले जाते है। इन छिद्रों में मोटे कील या सरिया डाल कर ऊपर से रंग कर दिया जाता है। सप्प की फट्टीयों की गिनती 8 से 24 तक हो सकती है। यह फट्टीयाँ टाहली को लकड़ी को होती है। ऊपर 'सप्प' को आंखों को जीभ दिखाई जाती है। उसे और सुन्दर बनाने के लिये सप्प के गले में रंगदार धागे पिरोये जाते है। भंगड़े में जब नौजवान इस का प्रयोग करते है तो वह कैंची जैसा खुलता बन्द होता है और आगे की क्रिया ताल के बीट पर करता है।

12. काटो:-

पंजाब के लोकनाच में काटोसाज का एक अलग ही स्थान है। इस का रूप सिर्फपंजाब प्रान्त में ही देखने को मिलता है। काटों ताल प्रधान वाद्य है जैसे पंजाबी संगीत में ढड सारंगी की जोड़ी है वैसे ही पंजाब के नृत्य भंगड़े में 'सपकाटों' की जोड़ी प्रसिद्ध है। भंगड़े में जब तक इन दोनों वाद्यों का प्रयोग न किया जाये तब तक भंगड़ा पूर्ण नहीं होता। काटो की शक्ल लकड़ी का टुकड़ा ले कर घड़ी बनाई जाती है। उस की आंखों और पैरों पर कोके जड़े जाते है और जहाँ काटो का मुँह खुलता है उसे कई रंगो से सजाया जाता है। काटो के और खूबसूरत बनाने के लिये गले में रंगदार रिबन और पूंछ पर छोटे-छोटे घुँघरू बांधे जाते है। काटो के एक रंगदार डंडे पर बांधा जाता है जिस डंडे की लम्बाई 90 सैंटीमीटर से 100 सैंटीमीटर होती है। काटो को एक डंडे पर बांध कर लाल धागा पिरोया जाता है। जब इस धागे को खीचां जाता है तो काटे अपने आप ही नाच उठती है। इस तरह घुंघरुओं की ताल पर काटो कभी ऊपर और कभी नीचे नाचती भागती फिरती है और दर्शकों का मनोरंजन करती है।

काटो

13. डफली:-

खड़ताल, खन्जरी की श्रेणी में डफली का अपना ही स्थान है। लोकगीतों में खास कर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गुरूदास मान की डफली तो पंजाब में बहुत ही प्रसिद्ध है। गोल आकार में लोहे की पत्ती लगाई जाती है। जिस में छः से आठ स्थानों पर छिद्र करके छल्ले पिराये जाते है। इस गोलाकार पर चमड़ा मड़ा जाता है।

डफली

इस वाद्य को ताल देने के लिए प्रयोग किया जाता है। यह छोटे और बड़े दोनों आकार के मिलते है। इस वाद्य के बाएं हाथ में पकड़ कर दायें हाथ की ऊंगली और हथेलियों से बजाया जाता है। जब हाथ सै छैणों की आवाज़ निकलती है तो वह बहुत मनोरंजन लगती है।

14. घड़ा :

इस वाद्य का प्रयोग भी पंजाब के लोक गीतों के साथ, जगरातों में भजन उच्चारण के समय प्रयोग किया जाता है। पंजाब में महीवाल का घड़ा बहुत प्रसिद्ध है। घड़े का आकार नीचे से गोल और ऊपर से छोटा मुंह होता है। घड़ा मिट्टी कांसे या पीतल का भी हो सकता है। इसे सजाने के लिए ऊपर बेलबूटे भी डाले जाते हैं। इस वाद्य वादक अपनी गोद में रखकर या छोटे से बीनू (जो गोल आकार में कपड़े का गोला बना होता है) पर रखा जाता है और अपने आगे रखकर दायें हाथ की ऊंगलियों और अंगूठे में ऊपर वाली तरफ लोहे या पीतल के छलड़े डाल के ताल देकर बजाया जाता है और बांया हाथ साथ-साथ घड़े के बाएं हाथ छलड़ों की सहायता से बीच बीच में मुंह पर बांया हाथ मारकर बजाया जाता है।

घड़ा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पंजाब प्रांत में प्रयोग होने वाले किसी दो लोक वाद्यों के नाम लिखो।
2. ढोल को कौन से नृत्य के साथ बजाया जाता है?
3. ढोलकी के मुँह पर क्या मढ़ा जाता है?
4. सारंगी वाद्य की प्रकृति किस प्रकार की होती है?
5. ढड किस हाथ में पकड़ा जाता है।
6. अलगोजा कौन से नृत्य के साथ बजाया जाता है।
7. चिमटे का प्रयोग कहाँ कब किया जाता है।
8. भाँगड़े में प्रयोग होने वाले वाद्य काटो की शक्ल किस तरह बनती है?

अध्यापक के लिए :-

1. विद्यार्थियों से पंजाब में प्रयोग होने वाले वाद्यों के चित्र बनवाकर चार्ट पर लगवायें जायें।
2. पंजाब के वाद्यों को इकट्ठा करके विद्यार्थियों को दिखायें और उनके बारे जानकारी दें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तानसेन

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ-10

जीवनी - तानसेन

तानसेन के नाम को भारत में विशेष तौर पर उत्तर भारत के संगीत प्रेमी बड़ी अच्छी तरह से जानते हैं। तानसेन जी संगीत जगत के महापुरूष थे। जब तक संगीत का आदर होता रहेगा तब तक तानसेन की कीर्ति कथा होती रहेगी।

युवा अवस्था में तानसेन ने जो शिक्षा स्वामी हरीदास से प्राप्त की उस शिक्षा से तानसेन जी ईश्वरवादी हो गए। कठिन साधना करने के पश्चात आखिर जब उनको ज्ञान प्राप्त हुआ तो वे खुशी में यह गा उठे –

प्यारे तूं ही ब्रह्म, तू ही विष्णु,
तूं ही शेष, तू ही महेश,
तूं ही आद, तूं ही अनाद,
तूं ही नाद, तूं ही गणेश....

अब्दुल फज़ल ने 'आईने अकबरी' में लिखा है कि तानसेन जैसा गायक सालों में भी नहीं पैदा हुआ होगा। तानसेन के पिता का नाम मुकंद राम पांडे था। मुकंद राम जी बहुत बड़े गायक थे। वाराणसी में संगीत गायन और पूजा पाठ से रोज़ी चलती थी। उनके पास बहुत धन-दौलत होने के बावजूद वह बहुत दुखी रहते थे क्योंकि उनकी कोई भी संतान जिंदा नहीं रहती थी। आखिर ग्वालियर के हजरत मुहम्मद गौस नामक सिद्धपीर के आर्शीवाद से एक बालक ने जन्म लिया जिसका नाम रामतनु (तन्ना) रखा गया। रामतनु का जन्म 1506 ई. में हुआ। कुछ विद्वान 1532 ई. में भी मानते हैं।

इकलौती सन्तान होने के कारण तानसेन का पालन पोषण बड़े ही लाड़ प्यार से हुआ। इसी कारण बचपन से ही बड़े नटखट थे। पढ़ने में बिल्कुल मन नहीं लगता था, सारा दिन खेतों, जंगलों में गायें चराते रहते। पर उनमें आवाज़ की नकल उतारने में महारथ थी। एक दिन संयोगवश शेर की आवाज़ निकाल कर स्वामी हरीदास और उनकी शिष्य मंडली को डराने से तानसेन की मुलाकात स्वामी हरीदास जी से हुई जो उनकी प्रतिभा से बेंहद प्रसन्न हुए और तानसेन को संगीत-शिक्षा देने के लिए अपने साथ वृंदावन ले गए। इस तरह तानसेन ने वृंदावन रह कर दस सालों तक संगीत शिक्षा ग्रहण की। इसी दौरान पिता की बीमारी के खबर सुन वापस ग्वालियर आ गए। पिता

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

की मौत के बाद उनकी इच्छानुसार मुहम्मद गौस को पिता का दर्जा दिया।

ग्वालियर में रहकर इनकी जान पहचान राजा मानसिंह की विधवा रानी मृगनयनी से जो एक स्वयं अच्छी गायिका थी। तानसेन की गायकी से मृगनयनी बहुत प्रभावित हुई। वहां वह मृगनयनी की एक दासी 'हुसैनी' की सुंदरता और संगीत से बहुत प्रभावित हुए। इस कारण रानी मृगनयनी ने दोनों की शादी करवा दी। हुसैनी का असली नाम राजकुमारी था। उनके पिता ब्राह्मीण थे। बाद में मुस्लिम धर्म अपना लिया। इसलिए राजकुमारी हुसनी ब्राह्मीणी कहलाई। शादी के बाद तानसेन और हुसैनी वापस वृंदावन स्वामी हरीदास जी के पास आ गए और अपनी संगीत शिक्षा पूरी करने लगे। तानसेन जी के चार पुत्र हुए, सूरतसेन, शरतसेन, तरंगसेन और विलासं खां और एक पुत्री सरस्वती हुई। पुत्री का विवाह प्रसिद्ध वीणा वादक 'मिश्री सिंह' से हुआ।

संगीत में निपुणता हासिल करने के बाद तानसेन रीवा के राजा रामचन्द्र ने इनको दरबारी गायक रख लिया। महाराजा रामचन्द्र और बादशाह अकबर में बड़ी गहरी दोस्ती थी। बादशाह को खुश करने के लिए उन्होंने तानसेन को भेंट स्वरूप दिया। अकबर तानसेन को लेकर बेहद प्रसन्न हुए और अपने नौ रत्नों में शामिल कर लिया। अकबर के दरबार में तानसेन के अनेक संगीत-चमत्कारों के बारे बहुत से लेखकों ने लिखा है जैसे भिन्न-भिन्न रागों के प्रभाव से पत्थर पिघलाना, मेघ या मियां मल्लहार से वर्षा करना, दीपक राग से दीपक जलाना आदि अनेक कथाएं प्रचलित हैं।

तानसेन जी ने अनेक रागों की रचना को जैसे दरबारी कान्हड़ा, मियां की सारंग, मियां की तोड़ी, मियां मल्लहार आदि। 1585 ई. में दिल्ली में तानसेन का देहांत हो गया। ग्वालियर में मुहम्मद गौस की समाधि के पास उनकी समाधि बनाई गई। बादशाह अकबर ने इनकी समाधि के ऊपर एक छत्तरी जैसी छत्त बनाई है जो आज भी वहीं है। तानसेन की समाधि के पास एक इमली का पेड़ उगा हुआ है। कहा जाता है कि उस इमली के पत्ते खाकर कंठ-स्वर मीठा हो जाता है।

स्वामी हरीदास ने अपनी अंतरात्मा में संगीत देवी का जो मंत्र प्रेरणा स्वरूप पाया था। उसमें तानसेन ने अपने जान-प्राण डालकर संसार के सामने रखा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. तानसेन को और कौन-कौन से नाम से जाना जाता है?
2. अकबर के दरबार में तानसेन को कौन सा स्थान प्राप्त था?
3. तानसेन से किस से शिक्षा ग्रहण की?
4. तानसेन के समय किस राग से वर्षा हो जाती थी?
5. तानसेन के समय किस राग से दीपक जल उठते थे?
6. तानसेन की पत्नी का नाम क्या था?

अध्यापक के लिए :-

1. तानसेन का चित्र बनवाकर क्लास में लगवाया जाये और उनके जीवन के बारे में बताया जायें।
2. तानसेन के अतिरिक्त और शास्त्रयीय संगीतकारों के बारे में जानकारी दी जायें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

क्रियात्मक भाग

दसवीं (गायन)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 11

राग भूपाली

साधारण परिचय : राग भूपाली, कल्याण थाट से उत्पन्न हुआ है। इस राग में म (मध्यम) और नी (निषाद) स्वर वर्जित होने के कारण इसकी जाति औड़व-औड़व है। इस वादी स्वर ग (गन्धार) और सम्वादी स्वर 'ध' धैवत है। इस राग के गाने बजाने का समय रात का पहला पहर है।

थाट	=	कल्याण
स्वर	=	म, नी वर्जित स्वर बाकी शुद्ध स्वर
वादी स्वर	=	ग (गन्धार)
सम्वादी स्वर	=	ध (धैवत)
जाति	=	औड़व-औड़व
समय	=	रात का पहला पहर
न्यास स्वर	=	ग, ध
अंग	=	पूर्वांग वादी
आरोह	=	स रे ग प ध सं
अवरोह	=	सं ध प ग रे स
पकड़	=	स रे स, स ध़ स रे ग, प ग, ध प ग रे स

आलाप : –

1) ग रे स ध़, स रे ग, प ग, ध प ग रे स
2) स रे ग, ग रे स, रे स, रे ग प, ध प ग रे, ग प ग रे ग रे स रे स, ध़ ध़ स रे ग रे स
3) स रे ग प, प ग, ग प ध, प ग, प ग, ग प ध सं, ध प ग रे ग प ग रे स
4) ग रे ग प ध प सं सं रें, रें सं, ध प सं रें सं, रें सं ध ध, रे सं रे स
5) ध़, स रे ग, स रे स, ग रे स, प ग रे स, प ग, ध प ग सं, प ग, प ग रे स स ध़ स रे ग

बन्दिश के बोल

स्थाई : सुर संग गावो ताल मिलावों
गोविन्द मिलन गुरू से पावो

अन्तरा: काहें मनवा चिन्तन चित भये
हरि दर्शन को ध्यान लगावों।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग भूपाली – तीन ताल छोटा ख्याल

×				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
						स्थायी		ग	रे	स	रे	स	ध़	स	रे
								सु	र	सं	ग	गा	उ	बो	उ
ग	ग	ग	ग	प	रे	ग	ग								
ता	ऽ	ल	मि	ला	ऽ	वो	ऽ	ग	ग	प	ध	सं	सं	सं	सं
								गो	ऽ	कि	द	मि	ल	न	गु
पं	ध	प	ग	प	रे	ग	ग								
रू	ऽ	से	ऽ	पा	ऽ	वो	ऽ	ग	ग	ग	ग	प	प	ध	ध
						अन्तरा		का	ऽ	हे	ऽ	म	न	वा	ऽ
सं	सं	सं	सं	ध	रें	सं	सं								
चिं	ऽ	त	न	चि	त	म	ये	सं	रें	गं	रें	सं	सं	ध	ध
								ह	रि	द	ऽ	शं	न	को	ऽ
प	प	ग	ग	प	रे	ग	ग								
ध्या	ऽ	न	ल	गा	ऽ	वो	ऽ								

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Download from https:// www.studiestoday.com

'ताने'

राग भूपाली छोटा ख्याल

	×				2				0				3			
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
									सु	र	सं	ग	गा	ऽ	बो	ऽ
1)	सध़	सरे	गरे	सरे	ग-	गरे	सध़	स-	(मुखड़ा)	-	-	-	-	-	-	-
2)	गप	धप	गप	धसं	धप	गरे	सध़	स-	-	-	-	-	-	-	-	-
3)	सरे	गरे	गप	धप	धप	धसं	धप	मऽ	धसं	धप	धप	गरे	गप	गरे	गरे	सऽ (सम)
4)	सरे	गरे	सध़	सरे	गप	गरे	सध़	सरे	गप	धसं	धप	गरे	सरे	गप	गरे	सऽ (सम)
5)	सरे	गरे	गप	धप	धसं	धप	गरे	स-	(मुखड़ा)							

Download from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग भूपाली (एक ताल - 12 मात्रा) बड़ा ख्याल

बंदिश के बोल

स्थाई : मां शारदे वर दे

हंस वाहिनी वीणा धारणी।।

अन्तरा: ज्ञान की मूरत, मंगल सूरत

वर दे वर दे मां शारदे।।

×		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थायी											
ग	ग	प	रे	रे	ग	स	स	रे	ध़	स	रे
मां	ऽ	ऽ	शा	ऽ	र	दे	ऽ	ऽ	व	र	दे
स	रे	ग	रे	ग	प	ग	प	ध	संध	पग	रेस
हं	ऽ	स	वा	हि	नी	वी	ऽ	णा	धाऽ	रऽ	णीऽ
अन्तरा											
ग	ग	ग	प	प	प	ध	ध	ध	सं	सं	सं
ज्ञा	न	की	मू	र	त	मं	ग	ल	सू	र	त
सरें	गरे	सं	पध	संध	प	गप	धप	ग	रे	स	रे
वऽ	रऽ	दे	वऽ	रऽ	दे	मांऽ	ऽऽ	ऽ	शा	र	दे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 12

राग खमाज

साधारण परिचय : यह खमाज थाट का राग है। इसके आरोह में नी शुद्ध और अवरोह में कोमल नी का प्रयोग होता है और बाकी स्वर शुद्ध लगते हैं। इसके आरोह में रे (रिषभ) स्वर वर्जित होने के कारण इसकी जाति षाड़व-सम्पूर्ण है। इसका वादी स्वर ग (गन्धार) और सम्वादी स्वर नी (निषाद) स्वर है। इसके गाने बजाने का समय रात का दूसरा पहर है।

थाट	=	खमाज
स्वर	=	अवरोह में नी कोमल
वर्जित स्वर	=	रे
वादी स्वर	=	ग (गन्धार)
सम्वादी स्वर	=	नी (निषाद)
अंग=उत्तरांग वादी		
जाति	=	षाड़व-सम्पूर्ण
समय	=	रात का दूसरा पहर
आरोह	=	स, ग, म, प, ध नी सं
अवरोह	=	सं नी ध प, म ग रे स
पकड़	=	नी ध म प, ध म ग

आलाप : -

1) स नी स ग, म ग, प, मप मग, गम प धमग म ग रे स
2) स ग, म ग प, ग म प ध नी ध प, प ध म ग, स ग म प, ग म प ध नी सं, ध सं नी ध प, म प, ध म ग, म ग रे स
3) ग म, प, ध नी ध प, ग म प ध नी सं, नी सं गं रें सं, नी सं ध सं नी ध प, प ध म प ध म ग, म ग रे स।

बन्दिश के बोल

स्थाई : आवो आवो होली खेले
तन मन भीगे शाम संग

अन्तरा: सुनो सखी री वाणी सन्तन कीं
सुख सब सोहत तोरे दर की।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग खमाज (तीन ताल) छोटा ख्याल –

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
×				2				0				3			
नी	सं	नी	प	प	प	ग	म	प	प	ध	ध	नी	सं	नी	ध
आ	ऽ	वो	ऽ	आ	ऽ	वो	ऽ	हो	ऽ	ली	ऽ	खे	ऽ	लें	ऽ
स	स	ग	म	प	प	ध	प	पध	संनी	ध	प	म	ग	प	सं
त	न	म	न	भी	ऽ	गे	ऽ	शा	ऽऽ	म	ऽ	सं	ऽ	ग	ऽ
प	प	ग	म	प	प	नी	नी	सं	सं	सं	सं	नी	नी	सं	सं
सु	नो	ऽ	स	खी	ऽ	री	ऽ	वा	ऽ	णी	सं	त	न	की	ऽ
नी	सं	नी	ध	प	ध	म	प	नी	नी	नी	नी	सं	नी	सं	सं
सु	ख	स	ब	सो	ऽ	ह	त	तो	ऽ	रे	ऽ	ढ	र	की	ऽ

Downloaded from https:// www.studiestoday.com
Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'ताने'

राग - खमाज (छोटा ख्याल)

	×				2				0				3			
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
									आ	ऽ	वो	ऽ	आ	ऽ	बो	ऽ
1)	सग	मप	धनि	संनि	धप	धम	गरे	सस	आ	-	-	-	-	-	-	-
2)	गम	पध	निनि	संसं	निध	पम	गरे	सस	आ	-	-	-	-	-	-	-
3)	पध	गम	पध	पम	गम	धनि	सरें	संसं	आ	-	-	-	-	-	-	-
4)	गम	पध	निध	पध	मप	धप	मग	रेस	आ	-	-	-	-	-	-	-
5)	गम	पम	मप	धप	गम	पध	निध	पध	गम	पध	निसं	निसं	निध	पम	गरे	स
															(सम)	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 13

राग भैरव

साधारण परिचय : राग भैरव, भैरव थाट का जन्य राग है। इस राग में रे, ध कोमल तथा अन्य सभी स्वर शुद्ध है। यह सम्पूर्ण-सम्पूर्ण जाति का राग है। राग का वादी स्वर 'ध' और सम्वादी स्वर 'रे' है। यह उतरांग वादी का अंग है। इस राग का गायन समय प्रात:काल की संधि बेला है।

थाट	=	भैरव
स्वर	=	रे॒ ध कोमल, बाकी शुद्ध स्वर
वादी	=	ध
सम्वादी	=	रे
वर्जित स्वर	=	कोई नहीं
जाति	=	सम्पूर्ण-सम्पूर्ण
अंग	=	उत्तरांग वादी
समय	=	प्रात: काल की संधि बेला
न्यास के स्वर	=	स, रे॒, प, ध॒
प्राकृति	=	गम्भीर
आरोह	=	स रे॒ ग म प ध॒ नी सं
अवरोह	=	सं नी॒ ध॒, प म ग रे॒ स
पकड़	=	ग म ध॒ी, प, ग म रे॒, रे॒ स

आलाप : -

1) स रे॒ ऽ रे॒ ऽ सा, ध॒ नी॒ स, ग म रे॒ ऽ रे॒ स

2) ध॒ नी॒ स रे॒ रे॒,स नी॒ ध॒ ध॒ नी ध ऽ ध॒, म प धा ऽ प, ध॒ म प, ग म प ग म ध॒ ऽ ध ऽ प, म प ऽग म रे॒ ऽ रे॒ स

3) ग म ध॒ ऽ ध॒ नी सं रें॒ ऽ रें॒ सं रें॒ ऽ रें॒ सं नी ध॒ प ग म ध॒ ऽ नी सं ऽ नी ध॒ ऽ प ध॒ प म ग म, ध॒ प, म प ऽ ग म रे॒ ऽ रे॒ ऽ स

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बंदिश के बोल

स्थाई : निस दिन गावत तोहे ध्यावत
मन की मैल धोवत जावत

अन्तरा: मन वा मोरा मन सुख पावत
नजर भरो अब जग के तारक

राग भैरव (छोटा ख्याल)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
×				2				0				3			
								प	म	ग	म	प	ध़	प	प
								नि	स	दि	न	गा	ऽ	व	त
ग	ग	म	ग	रें	रे़	स	स								
तो	ऽ	हे	ध	या	ऽ	व	त								
								स	नी़	ध़	नी़	स	रे़	स	स
								म	न	की	ऽ	मैं	ऽ	ल	ऽ
ग	ग	ग	म	रे़	रे़	स	स								
धो	ऽ	व	त	जा	ऽ	व	त								
								म	म	प	प	ध़	ध़	नी	नी
								म	न	वा	ऽ	मो	ऽ	रा	ऽ
सं	सं	सं	सं	रें	रें	सं	सं								
म	न	सु	ख	पा	ऽ	व	त								
								सं	रें	गं	गं	रें	रें	सं	सं
								न	ज	र	भ	रो	ऽ	अ	ब
सं	नी	ध़	प	म	ग	रे़	स								
ज	ग	के	ऽ	ता	ऽ	र	क								

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग भैरव छोटा ख्याल

'ताने'

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
	×				2				0				3			
									निं	स	दि	न	ग	ऽ	व	त
1)	सरे	गम	पम	गम	धप	मप	मग	रेस	गत	–	–	–	–	–	–	–
2)	गम	धप	गम	धनी	संनी	धप	मग	रेस	–	–	–	–	–	–	–	–
3)	पम	गम	रे रे	स–	सरे	गम	रे रे	स–	गत	–	–	–	–	–	–	–
4)	गम	ग रे	गम	पम	गरे	गम	धप	मप	गम	गरे	गम	धनी	संनी	धप	मग	रेस (सम)
5)	सरे	गम	गरे	गम	पम	गम	गरे	गम	धनी	संनी	धप	मप	गम	गरे	गरे	स– (सम)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राग भैरव एक ताल (बड़ा ख्याल)

बड़ा ख्याल

बंदिश

स्थाई : दास जागो जागो हरि के,
रंग में रंगी भोर, सुख मंगल सब और।

अन्तरा: वन वन मोर बोले, डाल डाल फूल झूले
मनवा मोरा काहे डोले।।

बड़ा ख्याल

×		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थायी											
ध	ध	म	प	प	ग	म	म	ग	स	रे̲	ग
दा	ऽ	स	जा	ऽ	गो	जो	ऽ	गो	ह	रि	के
स	स	रे	स	नी̲	स	ग	ग	म	रे̲	रे̲	स
रं	ऽ	ग	में	ऽ	रं	गी	ऽ	ऽ	भो	ऽ	र
स	रे̲	ग	म	प	प	ध	प	संनी	धप	मग	रेस
सु	ख	मं	ऽ	ग	ल	स	ब	ओऽ	धप	रऽ	ऽऽ
अन्तरा											
म	ग	म	प	ध̲	प	सं	सं	नी	रें̲	रें̲	सं
व	न	ऽ	व	न	ऽ	मो	ऽ	र	बो	ऽ	ले
सं	रें̲	सं	नी	सं	नी	ध̲	नी	ध̲	ध̲	ध̲	प
डा	ऽ	ल	डा	ऽ	ल	फू	ऽ	ल	झू	ऽ	ले
प	ध̲	सं	नी	ध̲	प	ग	ग	म	रे̲	रे̲	स
म	न	वा	ऽ	मो	रा	का	ऽ	हे	डो̲	ऽ	ले

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 14

ताले

एकताल, रूपक, चौताल

एकताल

साधारण परिचय

एक ताल बारह मात्रा की ताल है। इस ताल के दो-दो मात्रा के छः विभाग होते है। इस ताल की पहली मात्रा पर सम या पहली ताली, दूसरी ताली पंचवी मात्रा पर, तीसरी ताली नौंवी मात्रा पर और चौथी ताली ग्यारवीं मात्रा पर होती है। इस ताल के तीसरी और सातवी मात्रा खाली होती है। इस ताल का ज्यादा प्रचलन बड़े ख्याल के साथ होता है। यह भी तबले की प्रचलित ताल है। इस ताल में मध लय में ख्याल और स्वतंत्र वादन में ज्याद प्रभावशाली दिखती है। तंत्री वाद में यह मध लय के द्रुत लय के साथ बजाई जाती है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
बोल (एक गुण)	धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तु	ना	कत्ता	ता	धागे	तिरकिट	धिं	ना
(दुगुण)	धिंधिं	धागे तिरकिट	तूना	कत्ता	धागे तिरकिट	धिंना	धिंधिं	धागे तिरकिट	तूना	कत्ता	धागे तिरकिट	धिंना
चिन्ह	×		0		2		0		3		4	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

रूपक ताल

साधारण परिचय

रूपक ताल सात मात्रा की ताल है। इस ताल के 3-2-2 मात्रा के तीन विभाग है। इस ताल की पहली मात्रा पर सम या खाली के विषय में मतभेद है। कुछ विद्वान इस ताल की पहली मात्रा खाली मानते हैं और कुछ ताली मानते हैं। ताल की पहली मात्रा पर सम होने के कारण खाली मानना उचित नहीं। इसलिए जब यह ताल हाथ पर बजाई जाती है तो इस ताल की पहली मात्रा पर खाली मानते है। इसलिए इस ताल की पहली मात्रा खाली और चौथी और छठी मात्रा पर क्रमश: दूसरी और तीसरी ताली है। यह तबले की प्रचलित ताल है। इस ताल का प्रयोग छोटे ख्याल, भजन, शब्द, गजल, मसीतखानी गत के साथ किया जाता है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7
बोल (एक गुण)	तिं	तिं	ना	धिं	ना	धिं	ना
(दुगुण)	तिंतिं	नाधिं	नाधिं	नातिं	तिंना	धिंना	धिंना
	0			1		2	

चौताल

साधारण परिचय

चौताल 12 मात्रा की ताल है। इस ताल में दो-दो मात्रा के छ: विभाग है। इस ताल की पहली मात्रा पर सम या ताली, पांचवी मात्रा पर दूसरी ताली, नौवीं मात्रा पर तीसरी ताली और ग्यारवीं मात्रा पर चौथी ताली है। इस ताल की तीसरी और सातवीं पर खाली है। चौताल पखावज की ताल है। इस ताल का प्रयोग ध्रुपद अंग की गायकी के साथ किया जाता है। यह गंभीर प्राकृति की ताल है। इसे खुले हाथ के साथ बजाया जाता है।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	धा	धिं	ता	किट	धा	धिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
धाधा	धिंता	किटधा	धिंता	तिटकत	गदिगन	धाधा	धिंता	किटधा	धिंता	तिरकत	गदिगन
×		0		2		0		3		4	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 15

देश भक्ति गान की स्वर लिपि

ठो जवान देश की वंसुधरा पुकारती
श है पुकारता, पुकारती मां भारती

1) रगों में तेरे बह रहा है खून राम और श्याम का
जगद गुरू गोबिन्द और राजपूती शान का
तू चल पड़ा तो चल पड़ेगी साथ तेरे भारती .... साथ तेरे भारती

2) उठा खड़ग बढ़ा कदम, कदम कदम बढ़ाए जा
कदम कदम पे दुश्मनों के धड़ से सर उड़ाए जा
उठेगा विश्व हाथ जोड़ करने तेरी आरती ... करते तेरी आरती

3) तोड़कर धरा को फोड़ आसमां की कालिमा
जगा दे सुप्रभात को फैलादे अपनी लालिमा
तेरी शुभ कीर्ति विश्व संकटों को तारती.... संकटों को तारती

4) है शत्रु दनदना रहा हे चहूं दिशा में देश की
पता बता रही हमें किरण किरण दिनेश की
ओ चक्रवर्ती विश्वजयी मातृ भू निहारती.... मातृ भू निहारती

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

देश भक्ति गान की स्वर लिपि

ताल-कहरवा

×				0				×				0			
1	2	3	4	5	6	7	8	1	2	3	4	5	6	7	8
स्थायी															
सस	-म	ग	म	–	–	–	–	सस	-ग़	सनि़	ध़	–	–	–	–
उठो	ऽज	वा	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उठो	ऽज	वा	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सस	-म	ग	म	–	सरें	स	स	सस	-म	ग	म	स	रे	सनि़	
.	–														
उठो	ऽज	वा	न	ऽ	देश	की	ऽ	वसु	न्ध	रा	ऽ	पुका	ऽर	ती	ऽ
नी़	नी़	नी़	प़	रे़	रेस	रे़	–	रे़	रे़	ग़	ध़	–	पप	म	–
दे	श	है	ऽ	पु	कार	ता	ऽ	पु	कार	ती	मां	ऽ	भार	ती	ऽ
अन्तरा :															
स	-स	स	स	रेस	निस	रे़	रे़	रे़	रे़	रे़	रे़	ग़	ग़	-रे़	स	–
रगों	ऽमें	ते	री	वह	डर	हा	है	खू	न	राम	और	श्या	ऽम	का	ऽ
प	-स	स	स	रेस	निस	रे़	रे़	रे़	रे़	रे़	रे़	ग़	ग़	-रे	स	स
जग	दगु	रू	गो	वि-	द	औ	र	रा	ज	पू	ती	शा	ऽन	का	ऽ
म	मप	ध़	ध़	धनी़	-ध़	प	म	मध़	-प	म	ग़	–	ग़रे	ग़	–
तू	चल	पड़ा	तो	चल	ऽप	डे	गी	सा	ऽथ	ते	रे	ऽ	भार	ती	ऽ
रे़	-रे़	ग़	ध़	–	पम	म	–								
सा	ऽथ	ते	रे	ऽ	भार	ती	ऽ								

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 16

राष्ट्रीय गान की स्वर लिपि

भारत की आजादी से पहले कई कवियों ने भारतवासियों के दिलों में भारत को आज़ाद करवाने के लिए कई जोश भरे गीत और कविताएं लिखी। जिनमें बंगाल के एक महान कवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने अपने रचित गीत को देश के सम्मुख रखा क्योंकि रविन्द्रनाथ टैगोर के मन में राष्ट्रीय चेतना कूटकूट कर भरी हुई थी। सन् 1908 के बाद उन्होंने कई और भी राष्ट्रीय रचनाएं लिखी। इन गीतों के द्वारा उन्होंने भारतवासियों के दिलों में जोश, मर मिटने का ज%बा और आत्मविश्वास जगाया। 24 जनवरी 1950 वाले दिन संविधान सभा के अध्यक्ष 'राजेन्द्र प्रसाद' ने इस दिन अपने पद से फैसला सुनाया कि रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित जन-गण-मन राष्ट्रीय गान होगा।

देश का कोई भी राष्ट्रीय समारोह और राष्ट्रीय दिवस इस गीत से ही आरम्भ और समाप्त होता है। स्कूलों कॉलेजों और यूनिवर्सिटिज में इसको बहुत आदर दिया गया है और इसका हर रोज गायन होता है। और तो और यदि अंतर्राष्ट्रीय खेलों में भारत भाग लेता है तो वहां भी राष्ट्रीय गान को प्राथमिकता दी जाती है।

राष्ट्रीय गान

जन-गण-मन अधिनायक जय है
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब-सिन्धु गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उ%छल जलधि तरंग
तब शुभ नामे जागे
तब शुभ आशीष मांगे
गाहे तब जय गाथा
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे.....।

रविन्द्रनाथ टैगोर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राष्ट्र गान

1	2	3	4	5	6	7	8	1	2	3	4	5	6	7	8
स	रे	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	–	ग	ग	रे	ग	म	–
ज	न	ग	ण	म	न	अ	धि	ना	ऽ	य	क	ज	य	हे	ऽ
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	रा	ऽ
ग	–	ग	ग	रे	–	रे	रे	नी़	रे	स	–	–	–	स	–
भा	ऽ	र	त	भा	ऽ	ग्य	वि	धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	पं	ऽ
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	ऽ	ऽ	दा	ऽ
प	–	प	प	–	प	प	प	प	–	प	प	म	ध	प	–
जा	ऽ	ब	सिं	ऽ	ध	गु	ज	रा	ऽ	त	म	रा	ऽ	ठा	ऽ
दा	ऽ	दा	रा	ऽ	द	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
म	–	म	म	म	म	म	ग	रे	म	ग	–	–	–	–	–
द्रा	ऽ	वि	ड़	उ	त	क	ल	बं	ऽ	गः	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	ग	ग	ग	–	ग	रे	प	प	प	–	म	–	म	–
वि	ऽ	ध्य	हि	मा	ऽ	च	ल	य	मु	ना	ऽ	गं	ऽ	गा	ऽ
दा	ऽ	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
ग	–	ग	ग	रे	रे	रे	रे	नी	रे	स	–	–	–	–	–
उ	च	च्छ	ल	ज	ल	धि	त	रं	ऽ	गः	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
दा	ऽ	रा	दा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
स	रे	ग	ग	ग	–	ग	–	रे	ग	म	–	–	–	–	–
त	व	शु	भ	ना	ऽ	मे	ऽ	जा	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	रा	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	प	प	प	–	म	ग	रे	म	ग	–	–	–	–	–
त	व	शु	भ	आ	ऽ	शि	ष	मां	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	रा	दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	ग	–	रे	रे	रे	रे	नी	रे	स	–	–	–	–	–
गा	ऽ	ह	ऽ	त	व	ज	य	गा	ऽ	था	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
दा	ऽ	दा	ऽ	रा	दा	दा	रा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	प	प	–	प	म	प	–	प	प	म	ध	प	–
ज	न	ग	ण	मं	ऽ	ग	ल	दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
म	–	म	म	म	–	म	ग	रे	म	ग	–	–	–	नी	नी
भ	ऽ	र	त	भा	ऽ	ग्य	वि	धा	ऽ	ता	–	ऽ	ऽ	ज	य
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सं	–	–	–	–	–	नी	ध	नी	–	–	–	–	–	ध	प
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दा	रा
ध	–	–	–	–	–	–	–	स	स	रे	रे	ग	ग	रे	ग
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य	ज	य	ज	य	ज	य
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
म	–	–	–	–	–	–	–								
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राष्ट्रीय गान के नियम

1. राष्ट्रीय गान का गायन हमारे सभी राष्ट्रीय समारहों में के शुरू और समाप्ती में किया जाता है। इस के गायन सम्बन्धी नियमों का पालन करना जरूरी है।

2. राष्ट्रीय गान का गायन 52 सैकिंड में समाप्त करना चाहिए।

3. इसका गायन सावधान मुद्रा में खड़े होकर करना चाहिए।

4. इसका गायन एकग्र मन के साथ करना चाहिए।

5. इसका गायन करते समय आंखों को इधर-उधर घूमाते नहीं रहना चाहिए। बल्कि आंखों को सिर्फ सामने की तरफ ही रखना चाहिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 17

राष्ट्रीय गीत की स्वर लिपि

वन्दे मातरम्

यह कविता 1872 से 1875 ई. के बीच बंकिम चन्द्र द्वारा रचित मानी गई है। इस कविता में भाव पूर्व भाषा में मातृभूमि के सौन्दर्य तथा उसके वैभव का वर्णन किया गया है।

इस गीत में बंकिम चन्द्र चटर्जी ने धरती को माता के रूप में संबोधित किया है। यह गीत बंकिम चन्द्र के देश भक्ति के सिद्धांत का परिणाम है जिसके अंतर्गत देश को पू%य माना है। यह कविता मातृभूमि के प्रति संबोधन गीत के रूप में है। इसमें मातृभूमि को सुखदां-वरदां, सुहासिनी, सुमधुर भाषिणीमम् कहा गया है और दुर्गा-माता, धन लक्ष्मी, सरस्वती नामों से भी संबोधन किया गया है।

एम.एस. गोलवलकर ने अपनी पुस्तक -बंच ऑफ थॉट्स- में स्वतंत्रता के तराने लिखने वाले कवि बंकिम चन्द्र की बहुत अधिक प्रशंसा की है। गोलवलकर के अनुसार बंकिम के लिखे अमरगीत, -वंदे मातरम्- ने हजारों युवा दिलों में हंसते हंसते फांसी के तख्ते पर चढ़ जाने का जोश भर दिया।

वंदे मातरम् की स्वर लिपि सबसे पहले 1885 ईस्वी में महान् कवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने राग देस में लिखी।

वन्दे मातरम् गीत

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्, सुजलां सुफलां मलयज-शीतलां
शस्य-श्यामलां मातरम्। वंदे मातरम्
शुभ्र-%योत्सना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्

(बंकिम चन्द्र चटर्जी)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वर लिपी

स रे म प म प
वंदे मातरम्
म प नी सं नी सं
वंदे मातरम्
सं रें नी ध प, प ध म ग रे
सुजलां सुफलां
रे प म ग, ग-रे ग रे म
मलयज - शीतलाम्
स रे म प म प प नी ध प
शस्य-श्यामलाम् मातरम्
म प नी सं नी सं
वंदे मातरम्
म प नी नी नी, नी नी नी नी सं सं
शुभ्र-%योत्सना, पुलकित-यामिनीम्
नी नी नी सं नी सं, सं रें सं नी ध नी ध प
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
रे म ग रे, रे नी ध नी ध प ध प
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
म प नी नी नी नी नी सं नी सं
सुखदां वरदां, मातरम्
म प नी सं नी सं
वंदे मातरम्
म प नी सं नी सं
वंदे मातरम्

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

क्रम	राग का नाम	थाट	वादी	सम्वादी	वर्जित	जाति	समय गाने बजाने का समय	आरोह	अवरोह	पकड़
1	बिलावल	बिलावल	ध	ग	-	सम्पूर्ण-सम्पूर्ण	दिन का दूसरा पहर	स रे ग म प ध नी सं	सं नी ध प म ग रे स	गप, ध नी सं नी ध प म ग
2	काफी	काफी	प	स	-	सम्पूर्ण-सम्पूर्ण	मध्य रात्रि	स रे ग म प ध नी सं	सं नी ध प म ग रे स	पम ग रे, रे ग म प म ग रे स
3	भैरवी	भैरवी	म	स	-	सम्पूर्ण-सम्पूर्ण	प्रातः काल	स रे ग म प ध नी सं	सं नी ध प म ग रे स	मग रेस, सरेस ध नीस
4	भूपाली	कल्याण	ग	ध	मनी	औड़व-औड़व	रात का पहला पहर	स रे ग प ध सं	सं ध प ग रे स	स ध स रे ग
5	भैरव	भैरव	ध	रे	-	सम्पूर्ण-सम्पूर्ण	प्रातःकाल	स रे ग म प ध नी सं	सं नी ध प स ग रे स	ग म धऽ ध प ग म रे स
6	खमाज	खमाज	ग	नी	आरोह मे रे	षाड़व-सम्पूर्ण	रात का दूसरा पहर	स ग म प ध नी सं	सं नी ध प म ग रे स	नीध, म प ध ऽ म ग, प म ग रे स

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पाठ - 19

तालों की दुगुन

तीन ताल (दुगुन)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा	धिंधा	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धिंता	धिंता	ताधिं	धिंधा
×				2				0				3			

एक ताल (दुगुन)

1		2	3	4	5		6	7		8	9	10	11		12
धिंधिं	धागे	तिरकिट	तूना	कत्ता	धागे	तिरकिट	धिंना	धिंधिं	धागे	तिरकिट	तूना	कत्ता	धागे	तिरकिट	धिंना
×			0		2			0			3		4		

झप ताल (दुगुन)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धिंना	धिंधिं	नातिं	नाधिं	धिंना	धिंना	धिंधिं	नातिं	नाधिं	धिंना
×		2			0		3		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तीन कहरवा (दुगुन)

1	2	3	4	5	6	7	8
धागे	नाति	नके	धिना	धागे	नाति	नके	धिना
×				0			

ताल रूपक (दुगुन)

1	2	3	4	5	6	7
तींती	नाधीं	नाधी	नातीं	तींना	धींना	धींना
×			1		2	

ताल दादरा (दुगुन)

1	2	3	4	5	6
धाधिं	नाधा	तिंना	धाधिं	नाधा	तिंना
×			0		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com